मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

शाबर मन्त्र-संग्रह

भाग ७

मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

(सातवाँ भाग)



आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
ऋतशील शर्मा



प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२)२५०२७८३
मोबाइल : ९४५०२२२७६७



चौथा संस्सकरण
गुप्त नवरात्र, सं० २०६९ वि०
(२० जून, २०१२)

मूल्य : ५०-००



मुद्रक :
परा-वाणी प्रेस
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

अ-नु-क्र-म

• •

पूर्व-कथन :

'शाबर'-सिद्धि के सोपान

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह

[बनीयावाड़, जामनगर (गुजरात) से श्री शाह ने 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के पिछले भागों की तरह इस बार मन्त्र-साधना में यन्त्रों की साधना व सिद्धि के सम्बन्ध में उपयोगी बातें सूचित की हैं। इन बातों से 'शाबर-साधना'-प्रेमी बन्धुओं को मार्ग - दर्शन होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। —सं०]

१. प्रस्तावना

'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के प्रकाशन से शाबर मन्त्रों की साधना और सिद्धि, उनके प्रायोगिक व्यवहार एवं उपयोगिता आदि के सम्बन्ध में तर्क-सम्मत शैली ज्ञान-वर्द्धक बातें जिज्ञासुओं को मालूम हो रही हैं, यह बहुत ही आनन्द की बात है। विभिन्न मन्त्र-प्रयोग एक-से-एक बढ़कर प्रकाश में आ चुके हैं, जिनसे ये 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' अधिक-से-अधिक लोकोपयोगी बन गए हैं। अब मैं अपने अध्ययन और अनुभव के अनुसार शाबर मन्त्रों से शाबर यन्त्रों की साधना और सिद्धि के सम्बन्ध में कुछ सामग्री प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो जिज्ञासु पाठकों एवं सामान्य साधकों के लिए उपयोगी होगी, ऐसी आशा है।

सामान्य मन्त्र की पूर्ति के लिए ही 'यन्त्र' का निर्माण किया जाता है। उदाहरणार्थ —'नजर-टोना झारन' एक 'मन्त्र' है। उसे सिद्ध करने के बाद नजर-दोष जिसे लगा हो, उसे फूँक देने से या झाड़ने से दोष दूर हो जाता है—यह विधि ही 'तन्त्र' है। यदि कभी इस प्रयोग से लाभ न हो, अर्थात् बार-बार नजर-दोष लगता हो, तो उस पीड़ित व्यक्ति को 'नजर-दोष-नाशक यन्त्र' देने से उस दोष की शान्ति स्थायी रूप से हो जाती है। इस प्रकार 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र'—तीनों को परस्पर जोड़कर कुछ समन्वयात्मक प्रयोग करने से अचूक फल-प्राप्ति होती है।

मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र स्वतन्त्र भी हैं। साथ ही एक-दूसरे पर आधारित भी हैं। कैसे इनका उपयोग करें, यह साधक की सूझ-बूझ पर निर्भर है। अनुभवी साधक को अपने लिए और भक्त-जनों के लिए अभीष्ट फल-प्राप्ति के उद्देश्य से स्वयं विचार कर 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र' की एक शृङ्खला बनाकर समग्र शक्ति का सदुपयोग करना चाहिए। यही शास्त्र का उपदेश है।

नीति और धर्म के मार्ग पर चलनेवाले साधक या भक्त जिज्ञासु कभी असफल नहीं होते। 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र' का आयोजन व्यवस्थित रूप से करके आगे बढ़ें, तो कुछ-न-कुछ अच्छा ही फल सामने आएगा।

प्रश्न होता है कि 'शाबर में यन्त्र-विद्या है या नहीं ?' यदि 'हाँ', तो वह क्या है ? यदि 'नहीं', तो 'क्यों नहीं ?' इन दोनों —'हाँ' और 'ना' के बीच में रहते हुए मैं 'यन्त्र-विद्या' की आवश्यक बातें यहाँ दे रहा हूँ क्योंकि मैंने कुछ 'यन्त्र' शाबर मन्त्रों के साथ देखे हैं।

'शाबर-मन्त्र-साधना' में 'यन्त्र-विद्या' का प्रचलन अर्थात् यन्त्रा-लेखन पहले से ही प्रचलित रहा है। अतः प्रचलित या परम्परागत मन्त्र-शास्त्र के नियमानुसार ही 'यन्त्र' का प्रयोग करना चाहिए। मैंने 'शाबर यन्त्र' में जो मन्त्र पाए, वे शाबर-मन्त्र-विद्या के ही हैं और शेष विधि प्रचलित यन्त्र - शास्त्र के ही अनुसार है। इससे यह स्पष्ट है कि 'शाबर-मन्त्र' के साथ 'शाबर-यन्त्र' भी होते हैं और होने भी चाहिए।

'शाबर-मन्त्र-साधना' में 'यन्त्र-विद्या' पूर्णतः होगी या अंशतः--यह शोध का विषय है। तथापि मैंने खोज करके कुछ मार्ग - दर्शक रूप-रेखा प्रस्तुत की है। उसके सम्बन्ध में यदि कोई अनुभवी साधक कुछ सुझाव दे सकें, तो स्वागत है।

२. षट्-कर्म-सिद्धि का संक्षिप्त विवरण

'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र' के द्वारा ६ कर्मों को सिद्ध करने की बात प्रायः सभी सम्प्रदायों में—धर्मों में लगभग एक ही ढङ्ग से देखी जाती है। कहीं-कहीं ६ के स्थान पर अन्य विभागों द्वारा भी उन कर्मों का वर्गी-करण मिलता है। प्रत्येक कर्म के अन्तर्गत 'पेटा' अर्थात् निम्न कर्म भी

होते हैं। मैं यहाँ ६ कर्मों की संक्षिप्त रूप-रेखा प्रस्तुत कर रहा हूँ। सभी 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र' में इन्हीं षट्-कर्मों की साधना और सिद्धि के विषय में विशद चर्चा होती है। यथा—

१. **शान्तिकरण :** कल्याण - कारी, मङ्गल - प्रदायक कोई भी कार्य जैसे —शरीर व मन के रोगों की शान्ति, क्लेश की शान्ति, उपद्रवों की समाप्ति, ग्रह - बाधा के कुप्रभावों की समाप्ति, आपत्ति व कष्ट-निवारण, पाप-विमोचन, ऋद्धि-सिद्धि या सुख-शान्ति के उपाय, दरिद्रता-निवारण इत्यादि।

२. **मोहन-आकर्षण-वशीकरण :** किसी को हेतु-पूर्वक मोहित कर देना 'मोहन' कर्म है। किसी को आकृष्ट कर, अनुकूल बनाकर अपना कार्य करवा लेना 'आकर्षण' कहा गया है। किसी को शुभ या अशुभ कार्य करने के लिए प्रयोजन-पूर्वक वशीभूत कर देना 'वशीकरण' है। इन सबके भी विभाग हैं, लेकिन 'मोहन' और 'आकर्षण' से काम न बने, तभी 'वशीकरण' कर्म करना चाहिए।

३. **स्तम्भन :** किसी की चाल-ढाल को बन्द कर देना। सजीव या निर्जीव को जहाँ - का - तहाँ रोक देना या बन्धन में डाल देना। निष्क्रिय या स्थिर या अचल कर देना। शत्रु के शस्त्र का स्तम्भन, आग का स्तम्भन, विरोधी की जिह्वा का—मुख का—बकवास का स्तम्भन इत्यादि।

४. **उच्चाटन :** किसी के मन में शङ्का पैदा कर भयभीत या भ्रमित बनाकर भगा देना या स्थानान्तरित कर देना। साध्य व्यक्ति मारा-मारा फिरता है—पागल की तरह हो जाता है।

५. **विद्वेषण :** किसी व्यक्ति को किसी व्यक्ति से अलग करना। किन्हीं दो व्यक्तियों के बीच कलह-क्लेश उत्पन्न करवा कर एक दूसरे का शत्रु बना देना।

६. **मारण :** किसी का प्राण हरण कर उसका जीवन समाप्त कर देना या करवा देना।

मेरी सलाह है कि 'षट्-कर्म' के नामों से प्रभावित न हों क्योंकि इन सबकी साधना में सफलता पाना सरल नहीं है। किन्हीं अनुभवी गुरु के मार्ग-दर्शन में ही इन कर्मों को करना चाहिए।

गणेश पुराण, रुद्र-यामल, आकाश विज्ञान-भैरव आदि ग्रन्थों में लिखा है कि 'तृतीय कर्म' से छठे कर्म तक की साधना में बिना गुरु प्रवेश न करे क्योंकि यदि उससे कोई चूक होगी, तो कुल - नाश, सन्तति-नाश, धन-नाश इत्यादि सङ्कट में पड़ना होगा ।

३. 'मन्त्र' और 'यन्त्र'

जैसे बिना 'मूल' औषधि नहीं, धन-रहित धरा नहीं—वैसे ही 'मन्त्र'-विहीन शब्द नहीं । प्रत्येक वर्ण या शब्द 'मन्त्र' ही है । प्रत्येक अङ्क गुप्त सङ्केतों से भरा है । गुणी जनों को उनका रहस्य जानकर आगे बढ़ना चाहिए ।

'मन्त्र' का जप करने से 'मन्त्र-देवता' का स्फुरण साधक के शरीर में सूक्ष्म रूप से होता है । इस अवस्था में साधक मन चाहा कार्य कर सकता है । 'मन्त्र' तेज-स्वरूप आत्मा है, जिसका स्थापन 'यन्त्र'-रूपी गृह या निवास-स्थान में किया जाता है । 'मन्त्र' से प्राप्त सूक्ष्म शक्ति पर साधक का आधिपत्य होता है । उसे चिर-स्थायी बनाने के लिए 'यन्त्र' का निर्माण होता है ।

'यन्त्र' साक्षात् परमात्मा है । उसका निर्माण-आलेखन-स्थापन-पूजन विधि-वत् करने से उसके अच्छे परिणाम सामने आते हैं । जैसे कि—ताप को उतारने का 'मन्त्र' है । सिद्ध 'मन्त्र' से फूंक देना या 'गण्डा'-'ताबीज' 'तन्त्र' है । 'ज्वर-नाशक यन्त्र' दें—'ताबीज' को गले में पहनाएँ । ताप की बीमारी चली जाएगी । ताप के 'मन्त्र' की सूक्ष्म शक्ति आपके माध्यम से 'तन्त्र' और 'यन्त्र' में स्फुरित होकर—रोग-निवारक सिद्ध होती है । 'मन्त्र' से बल मिलता है, जो 'यन्त्र' या 'तन्त्र' से कार्यान्वित होकर कार्य की सिद्धि कर देता है ।

विधि-पूर्वक निर्मित 'यन्त्र', उसका पूजन या धारण करना कार्य-सिद्धि में सहायक होता है । इसीलिए अनेक तीर्थ-स्थानों में 'मूर्ति' के स्थान पर 'यन्त्र' की ही स्थापना होती है । राजस्थान में अम्बा जी के सिद्ध पीठ में माताजी के 'यन्त्र' की ही पूजा होती है । आदि-शङ्कराचार्य के सभी केन्द्रों में 'श्रीयन्त्र' के ही पूजन की परम्परा है । इससे 'यन्त्रों का महत्त्व' प्रत्यक्ष ही प्रमाणित है ।

४. मन्त्रों का महत्त्व

'बीज-मन्त्र' या 'सङ्केत' या 'अङ्क' अथवा 'मन्त्र' से युक्त अनेक प्रकार के 'यन्त्र' होते हैं। देवी-देवताओं और नौ ग्रहों आदि सभी के 'यन्त्र' पूजे या धारण किए जाते हैं। जीवन की कोई भी समस्या हो, उसके निवारण के लिए 'यन्त्रों' का प्रयोग होता है। 'सौन्दर्य-लहरी' जैसे सिद्ध स्तोत्रों में भी 'मन्त्र - तन्त्र - यन्त्र'—तीनों का समन्वय है।

कुछ 'यन्त्र' जेब में, कुछ तिजोरी या गल्ले (कैश-बाक्स) में, कुछ पूजा की पोथी में, दीवालों में या कमरे में रखे जाते हैं। वाहनों के ऊपर भी 'यन्त्र' अङ्कित किए जाते हैं। इस प्रकार जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में लोग अपनी आस्था के अनुसार 'यन्त्रों' का उपयोग कर निर्भय बनते हैं और सुख-चैन से रहते हैं।

कुछ 'यन्त्र' ताबीज में भरकर, कपड़े में बाँधकर गले में या भुजाओं में धारण किए जाते हैं। कुछ को अग्नि में जला देते हैं, तो कुछ 'यन्त्र' जल में विसर्जित किए जाते हैं। कुछ 'यन्त्रों' को आटे में मिलाकर मछलियों को खिलाया जाता है। कुछ 'यन्त्र' श्मशान या कब्रिस्तान में भूमि के नीचे गाड़े जाते हैं, तो कुछ अपने निवास-स्थान (घर) में ही पवित्र स्थान में निहित किए जाते हैं। 'पूजन-यन्त्र' तो पूजा के कक्ष में ही रखे जाते हैं।

आकर्षण के 'यन्त्र' झाड़ (पेड़) पर लटकाए जाते हैं। कुछ 'यन्त्र' जल में भिगोकर उस जल को पिया जाता है। कुछ 'यन्त्र' भूत-प्रेत को बुलाने के लिए होते हैं, तो कुछ उन्हें भगाने के लिए। कोई ऐसा 'यन्त्र' नहीं, जो उपयोगी न हो। परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए, नौकरी या इण्टरव्यू में सफल होने के लिए भी 'यन्त्र' दिए जाते हैं।

१५, २०, ३४, ६५ जैसे लाख-संख्या तक के अङ्क-यन्त्र भी होते हैं, जिनसे विविध प्रकार के कार्य सम्पन्न किए जाते हैं। यन्त्र के कोष्ठकों में अङ्क या वीजाक्षर 'लोम' अथवा 'विलोम' क्रम से लिखे जाते हैं। इस प्रकार सरल एवं जटिल—दोनों प्रकार के 'यन्त्र' प्रचलित हैं।

'यन्त्रों' की आकृति विभिन्न प्रकार की होती है। आकृति का अपना रहस्य होता है। 'मध्य विन्दु' का विशेष महत्त्व माना गया

है। उसके आस-पास मण्डल, प्रवेश-द्वार इत्यादि और दिशा-विदिशा में पूजा-विधि निर्दिष्ट होती है।

५. यन्त्र लिखने के लिए आवश्यक पात्रता

'यन्त्र'-लेखक को यथा-सम्भव सद्-गुण-सम्पन्न होना चाहिए। उसे पुरुषार्थी-परिश्रमी, श्रद्धावान्, विधि-विधान-प्रेमी, दान-दया-करुणा से युक्त, सत्य-भाषी, मित-भाषी, मिष्ट - भाषी होना चाहिए। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य और यम - नियम का पालन करनेवाला होना चाहिए। आस्तिकों को सम-भाव से कल्याणकारी उपदेश करनेवाला परोपकारी एवं अलोभी होना चाहिए। ऐसे पुरुषों के द्वारा लिखे गए 'यन्त्र' शीघ्र सफलता देते हैं।

'यन्त्र'-लेखक को सदैव कुछ-न-कुछ शुभ करने की इच्छा रखनी चाहिए और नित्य 'अजपा-जप' करना चाहिए।

६. यन्त्र लिखने के समय के शकुन-अपशकुन

'यन्त्र' लिखते समय यदि गो - माता आ जाएँ, कन्या या बालक आ जाएँ, मङ्गल - वाणी सुनाई दे, विवाह के गीत सुनाई दें, भजन सुनाई दें, तो शुभ शकुन होता है। कार्य में सिद्धि मिलती है।

इसके विपरीत यदि 'यन्त्र' लिखते समय बुरे समाचार सुनने को मिलें, अशुभ वाणी हो, मृत्यु या रुदन की आवाज आए, कलह या शोर सुनाई दे, तो 'यन्त्र' न लिखे। दूसरे दिन 'यन्त्र' लिखे क्योंकि ये लक्षण अप-शकुन माने जाते हैं। ऐसे अप-शकुनों में लिखे गए यन्त्रों से कार्य में सिद्धि नहीं मिलती, उल्टे हानि होती है।

सफलता-पूर्वक 'यन्त्र'-लेखन के लिए मेरे विचार से 'यन्त्र'-लेखक को उज्जैन (म० प्र०) के महा - काल भैरव जी अथवा किसी अन्य प्रसिद्ध भैरव - स्थान में जाना चाहिए। वहाँ भैरव - स्थान में विनम्र प्रार्थना करनी चाहिए कि मेरा कार्य सफल हो। पूजन व जप भी करना चाहिए। इससे 'यन्त्र'-लेखन में बहुत सफलता मिलती है और यदि 'यन्त्र'-लेखन में किसी प्रकार की बाधा आती है, तो वह अपने-आप सरलता-पूर्वक दूर हो जाती है।

७. यन्त्र लिखने के लिए अन्य आवश्यक सूचनाएँ

उत्तम योग में, पर्व-दिन में, साधना - कक्ष में, धूप - दीप रखकर 'यन्त्र' लिखे। साधना - कक्ष को भली - भाँति सुवासित करे। अगर, तगर, चन्दन, घृत, शर्करा, मधु, कपूर, जायफल आदि को मिलाकर 'धूप' से वातावरण को सुगन्धित करके यदि 'यन्त्र' मित्रता हेतु अथवा अन्य शुभ कार्य हेतु लिखना हो, तो मुख में शर्करा रखकर 'यन्त्र' लिखे। यदि शत्रु का स्तम्भन करना हो, तो मुख में मोम का टुकड़ा रखकर 'यन्त्र' लिखे। 'यन्त्र' लिखकर उसी वस्तु से, जिसे मुख में रखा है, यन्त्र को धूनी देनी चाहिए।

दुःस्वप्न-नाशक अथवा बच्चों के रोगों के शमन के लिए 'यन्त्र' लिखे, तो मुख में नमक की कङ्करी रखकर 'यन्त्र' लिखना चाहिए और उसी की धूनी देनी चाहिए।

उच्चाटन, विद्वेषण अथवा उग्र कार्य हेतु 'यन्त्र' लिखते समय मुख में नीम की पत्तियाँ या सेंधा नमक रखना चाहिए और बाद में उसी की धूनी देनी चाहिए।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यदि आपत्ति अथवा कष्ट से घिरा हुआ कोई आस्तिक आ जाए, तो उसके कल्याण की दृष्टि से उत्तम योग, पर्व-दिन की प्रतीक्षा न करे और शीघ्र-से-शीघ्र 'यन्त्र' लिखकर उसे प्रदान करे। ऐसी स्थिति में योग, मुहूर्त, वार, तिथि आदि—सब गौण हो जाते हैं। जैसे—(क) किसी खोए हुए व्यक्ति का पता पाने का यन्त्र, (ख) सुख-पूर्वक प्रसव-कर यन्त्र, (ग) शिशु-रोदन रोकने का यन्त्र, (घ) रोग-शान्ति या अकाल-मृत्यु-हनन यन्त्र आदि।

८. 'यन्त्र'-धारण-कर्त्ता के लिए आवश्यक बातें

'यन्त्र' देनेवाला 'यन्त्र' देते समय जो बताए, उसका पूर्णतः पालन करना चाहिए। श्रद्धा-विश्वास बनाए रखना चाहिए। 'यन्त्र' को धूप देकर पहने। नित्य देव-देवी-दर्शन करे। यथा-शक्ति दान - पुण्य करे। अपने कुल के देव-देवी की मानता रक्खे। कार्य होने पर उनकी विधि-वत् पूजा करे। कार्य होने के बाद भी 'यन्त्र' को धारण किए रहे।

९. यन्त्रों की आकृति बनाने के लिए कुछ विशेष बातें

जिस प्रकार के 'यन्त्र' का उल्लेख हो, वैसा ही 'यन्त्र' बनाना चाहिए। अपने मन से परिवर्त्तन न करना चाहिए। 'यन्त्र' में कोष्ठक के मध्य में विन्दु-अङ्क-वर्ण-बीज आदि कार्य के अनुसार होते हैं, उनमें परिवर्त्तन न करना चाहिए। 'यन्त्र' को देवता की मूर्त्ति समझकर श्रद्धा से लिखना चाहिए। कुछ 'यन्त्र' पशु-पक्षी के, वृक्ष के, सर्प के आकार के होते हैं। यन्त्रों का आकार, उनके सङ्केत, अन्तर्गत-बहिर्गत दिशा - विदिशा, अङ्क या नाम सभी बातें विशेष उद्देश्य से होती हैं और उनसे ही लाभ होता है—यही 'यन्त्र' का रहस्य है। यदि कोई 'यन्त्र' लाभ न दे, तो उसे श्रद्धा-पूर्वक नदी में विसर्जित कर देना चाहिए। भूलकर भी उसे कचरे या गन्दे स्थान में न डालना चाहिए।

१०. यन्त्र-धारण करने के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें

पहनने के 'यन्त्र' पुरुष को दाहिनी भुजा में और स्त्री को बाईं भुजा में पहनने चाहिए। कुछ 'यन्त्र' गले में माला के समान धारण किए जाते हैं। कुछ 'यन्त्र' कमर में बाँधे जाते हैं (यथा—गर्भ-धारण, कमर-दर्द के यन्त्र)। कुछ मस्तक के ऊपर या माथे पर बाँधे जाते हैं (यथा—ज्वर-निवारक, ऋण-निवारक यन्त्र)। कुछ यन्त्र जेब में-तिजोरी में-दुकान के गल्ले में रक्खे जाते हैं (यथा—ऋद्धि-सिद्धि, बिक्री-वर्धक यन्त्र)। कुछ यन्त्र दीवालों के ऊपर, वाहनों के ऊपर बनाए जाते हैं (यथा—चौर-भूत-प्रेतादि रक्षक, दुर्घटना-निवारक यन्त्र)।

पहनने के यन्त्र 'ताबीज' में अच्छी तरह से भरवाकर, लाल या काले डोरे में पिरोकर पहने जाते हैं। धागे के लिए रेशम के धागे का उपयोग भी होता है। 'ताबीज' सामान्यत: ताँबे के होते हैं। सोने-चाँदी या पञ्च-धातु के 'ताबीज' भी होते हैं। कभी-कभी कपड़े में बाँधकर अथवा 'रेक्सीन' में बाँधकर भी पहने जाते हैं।

'ताबीज' को यथा-शक्ति समय-समय पर धूप देना चाहिए। इससे विशेष लाभ होता है।

११. 'यन्त्र' और जप-संख्या, स्थानादि

हमारे विचार से सिद्धि के लिए 'यन्त्र'-लेखन विस्तृत रूप से करना चाहिए । पहले १०८ या १००८ 'यन्त्र' लिखने चाहिए । अन्तिम १०८ वाँ या १००८ वाँ यन्त्र लिखकर, यन्त्र के ऊपर पर्याप्त संख्या में अपने मन्त्र का 'जप' करना चाहिए। 'जप' के बाद स्थापन-पूजन विधि-वत् करना चाहिए ।

'यन्त्र-लेखन' का कार्य साधना-पूजा-स्थान में ही करना चाहिए । यदि सम्भव न हो, तो किसी अन्य पवित्र - सुरम्य स्थान में करना चाहिए। लिखते समय धूप-दीप से स्थान को सर्वथा सुवासित एवं प्रकाशित रखना चाहिए। कमरे को बन्द न करना चाहिए। स्थान को छोड़कर कहीं जाना न चाहिए। यन्त्र को लकड़ी के एक 'पाटे' (काष्ठ-आसन) के ऊपर स्वच्छ वस्त्र बिछाकर रखना चाहिए । अखण्ड भोज-पत्र या अच्छे कागज के टुकड़े पर यन्त्र लिखना चाहिए। यन्त्र लिखने के बाद पूजन के लिए अक्षत - सहित 'घट' या 'कलश' रखना चाहिए।

'यन्त्र' लिखने के लिए बहुत से लोग सामान्य स्याही का प्रयोग करते हैं। मेरे विचार से यह ठीक नहीं है। अच्छे परिणामों के लिए कुंकुम - केसर - गुलाब - जल - पवित्र जल डालकर स्याही बना लेनी चाहिए। विशेष कार्यों के लिए अष्ट-गन्ध—पञ्च-गन्ध की स्याही भी बनाई जाती है। स्याही बनाते समय शुभ-शुभ बातें ही सोचनी चाहिए। संक्षेप में, 'आकर्षण' के लिए कस्तूरी, 'वशीकरण' के लिए कुंकुम, 'स्तम्भन' में हल्दी-रस, 'शान्ति-कर्म' में चन्दन और 'अभिचार' में श्मशान की राख से स्याही बनानी चाहिए।

कलम के लिए ८ अंगुल लम्बी कलम लेनी चाहिए । 'शान्ति-कर्म' के लिए पीपल की, 'मोहन-आकर्षण' के लिए स्वर्ण की, 'वशीकरण' के लिए चमेली की, 'स्तम्भन' के लिए ताँबे की और उग्र कर्मों के लिए लोहे की कलम लेनी चाहिए। सभी प्रकार के 'शान्ति एवं वशीकरण कर्म' के लिए अनार या बिल्व की कलम भी ली जाती है। वैसे लिखने का भाव उत्तम हो, तो किसी भी कलम से लिखा जा सकता है।

१२. यन्त्र-लेखन के बाद कुछ विशेष कृत्य

विधि-विधान से लिखे गए 'यन्त्र' में ईश्वरी शक्ति का अवतरण होता है। 'यन्त्र' लिखने के बाद यदि कुछ विशेष कृत्य किए जाएँ, तो 'यन्त्र'-लेखन और अधिक प्रभावी बन जाता है। यथा—

(१) 'यन्त्र' - लेखन कर उसे लकड़ी के पाटे के ऊपर नया वस्त्र बिछाकर उस पर स्थापित करे और 'मन्त्र' का जप करे। अक्षत-सहित ताँबे का कलश अक्षत के ऊपर स्थापित करे। कलश को आम्र-पल्लव, दक्षिणा आदि से युक्त करे। धूप-दीप-नैवेद्य से विधि-वत् पूजा करे। बाद में 'यन्त्र'-धारण करे।

(२) नित्य 'यन्त्र' के ऊपर अक्षत-चन्दन चढ़ाए और मन्त्र-इष्ट का स्मरण करे (इससे सभी प्रकार की मनो-कामना पूरी होती है)। अथवा, सुगन्धित तेल में अक्षत मिलाकर चढ़ाए (इससे लक्ष्मी की प्राप्ति होती है)। अथवा, केसर-युक्त जल में अक्षत मिलाकर पूजन किया जाए (इससे सुख - शान्ति मिलती है)। अथवा, सिन्दूर मिलाकर अक्षत अर्पित करे (इससे प्रबल आकर्षण-शक्ति मिलती है)।

(३) 'पूजन' के बाद 'हवन' करना चाहिए। होम-कुण्ड में इष्ट-मन्त्र के द्वारा गो-घृत या गुग्गुल-घी-जौ-तिल-पीपल की समिधा से आहुति दे। इससे 'शान्ति'-कर्म में सफलता मिलती है। 'आकर्षण' के लिए चिरौंजी और बेल-पत्र से हवन करे।

'वशीकरण' के लिए राई और नमक से होम करे। 'स्तम्भन' के लिए चमेली-बिल्व-पत्र-चन्दन-शमी-दही-घृत और तिल से होम करे।



यन्त्र-लेखन-सारिणी (१)

यन्त्रालेखन के लक्ष्य	मास	नक्षत्र	तिथि	वार
ज्ञान-प्राप्ति	माघ	शतभिषा, उ. फाल्गुनी, रोहिणी	२, ५, ११वीं	गुरुवार
धर्म-प्राप्ति, यश-प्राप्ति	चैत्र, कार्तिक, अगहन	मूल, उ. भाद्रपद, रेवती	१२, १५ वीं	गुरुवार
सुख-शान्ति-आरोग्य-प्राप्ति	श्रावण	पूर्वा भाद्रपद, अश्विनी, मृगशिरा	७ वीं	सोमवार
धन-प्राप्ति	वैशाख, आश्विन	हस्त, पूर्वा फाल्गुनी, पुनर्वसु	५ वीं	रविवार, बुधवार
सर्व प्रकार की साधना-सिद्धि	फाल्गुन, चैत्र	अश्विनी, पुनर्वसु, मृगशिरा	१२ वीं	बुधवार
शत्रु-नाश, अभिचार-कर्म	फाल्गुन	पुष्य	१० वीं	सोमवार

यन्त्र-लेखन-सारिणी (२)

षट्-कर्म	कर्म-श्रेणी	उत्तम दिशा	पक्ष	तिथि	वार	समय
१ शान्ति-करण	उत्तम	ईशान की ओर	शुक्ल-पक्ष	पहले १० दिन में	सभी दिन	प्रातः
२ मोहन, आकर्षणादि	उत्तम	उत्तराभिमुख	शुक्ल-पक्ष	,,	रवि, सोम, गुरु	दोपहर
३ स्तम्भन	मध्यम	पूर्वाभिमुख	कृष्ण-पक्ष	दूसरे १० दिन में	बुध, शुक्र	दोपहर-सायं
४ विद्वेषण	मध्यम	नैर्ऋत्य की ओर	,,	,,	,,	,,
५ उच्चाटन	कनिष्ठ	वायव्य या दक्षिण की ओर	,,	तीसरे १० दिन में	शनि, मङ्गल	सायं-रात्रि
६ मारण	कनिष्ठ	अग्नि या दक्षिण की ओर	,,		,,	सायं के बाद रात्रि मध्य-रत्रि

शाबर

'चण्डी' वर्ष ४ (सन् १६४५) में प्रकाशित 'कुल-ज्योति' पण्डित कन्हैयालाल दीक्षित, वाराणसी का एक महत्त्व-पूर्ण निबन्ध

दिल-पसन्द रङ्ग रँगकर वाह-वाही लूटना एक चतुर रँगरेज का काम गिना जाता है। उसके मसाले उसी के अनुभवों पर होते हैं। वैसे ही मन्त्र - शास्त्रज्ञ गुरु को अपने शिष्य के मन को रँग देना है। रङ्ग दो प्रकार का होता है—कच्चा और पक्का। कामनाओं की सिद्धि की प्राप्ति तक का रङ्ग कच्चा, परमात्मा में सदा के लिए तल्लीन हो जानेवाले प्राणी को पक्का रङ्ग चढ़ा कहा जाता है। कच्चा रङ्ग रँगरेज के लिए कठिन और पक्का सरल होता है, परन्तु 'मन्त्र-शास्त्री' के लिए दोनों ही रङ्ग कठिन हैं।

आज के मन्त्र - शास्त्री लोग किताबों को देखकर चट से दीक्षा देकर शिष्य का हृदय दुर्बोध से बिद्ध कर देते हैं, जिससे उसकी आत्मा पर फिर रङ्ग चढ़ ही नहीं सकता। इसी कारण तन्त्र यह पुकार कर कहता है कि "दूसरे के शिष्य को बोध न दे!" ऐसे शिष्यों के द्वारा ही तिरस्कार प्राप्त कर 'मन्त्र-शास्त्र' मलिन हो गया।

पूर्णाभिषेकी अष्टादशाम्नायान्त दीक्षा ग्रहण करनेवालों की कमी नहीं है, किन्तु देवता पर विश्वास न जमने के कारण इधर - उधर के पोथे उलटना और पश्चात्ताप - मय जीवन बिताना मात्र ही हाथ में रह जाता है। गुरु ने जिस शिष्य को 'मन्त्र' का अभ्युत्थान करना सिखाया नहीं, देवता का अञ्जन आँखों में लगाया नहीं, कोई कामना सिद्ध भी न हुई—ऐसी अवस्था में सिवाय दुःख - मय जीवन तथा परिणाम में नास्तिकत्व के कुछ भी उनके हाथ में लगता नहीं। उपाय क्या ?

गुरु को पहिचानना, मन्त्र में दृढ़ विश्वास करना और यदि थोड़े काल तक में गुरु के वचनानुसार कोई भी चमत्कार न हो, तो 'मन्त्र' को त्याग कर उपयुक्त 'मन्त्र' को ग्रहण कर सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए। आज - कल शीघ्रता से सिद्धि 'शाबर मन्त्र' देते हैं—ऐसा

महात्मा तुलसीदास जी एवं अन्य सिद्ध पुरुष तथा आप्त - गण कहते आए हैं और कुछ देखने में भी आता है। 'शाबर मन्त्रों' को देखकर आधुनिक विद्वान् - गण कई प्रकार की शङ्काएँ हृदय में करेंगे। क्या ऐसे ही 'मन्त्र' होते हैं ? किन्तु इसका रहस्य यह है कि प्रत्येक देश की भाषा में 'शाबर मन्त्र' होते हैं। दूसरे केवल शुद्ध हिन्दी बोल-चाल की भाषावाले होते हैं। तीसरे 'अनमिल आखर अरथ न जापू'– इस मेल में होते हैं। प्रायः ये 'मन्त्र' नाथोक्त हैं, जो गोरखनाथ द्वारा संसार में फैले हुए हैं। इनमें परम्परा सिद्ध करने के उपाय और सिद्धि के लक्षण-युक्त 'गोरक्ष-कक्ष-पुटी, सिद्ध-नाथ-कक्ष-पुटी' जैसे मन्त्र भाषा और संस्कृत दोनों से मिश्रित रूप में ताड़-पत्र और कागजों पर लिखे मिलते हैं।

साधक उन्हीं विधानों से काम में लाएँ, तो अवश्य कार्य सिद्ध होंगे, परन्तु विशेषकर 'अघोर - मार्ग' से ही इसमें सिद्धि होती है। दूसरे 'मन्त्र' अन्य सिद्ध लोगों द्वारा कल्पित किए गए हैं, जिनमें 'दक्षिण-मार्ग' से भी सिद्धि प्राप्त होती है। दूसरे प्रकार के मन्त्रों में अपने-अपने उपयुक्त तत्त्वोंवाले अक्षरों का संयोग एवं छन्द - शास्त्रोक्त मगणादि अष्ट - गणों का मेलापक से सम्बन्ध होता है। ऐसे मन्त्र कवित्त, दोहा, चौपाई, श्लोक, केवल यजुः—इस प्रकार से हैं और सिद्धि देते हैं। करनेवालों को विश्वस्त गुरु मिलना चाहिए। ये मन्त्र कुम्भकर्ण, रावण, महिषासुर, हनुमान, अष्ट-भैरव, क्षेत्र-पाल, पीर-पैगम्बर, कलुआ, काली, राम, वीर पुरुष—जो वीर-कर्म से मारा गया हो—ऐसों के नाम पर प्रायः मिलते हैं। अब उक्त मन्त्रों के स्वरूप के ज्ञान के लिए कुछ 'मन्त्र' यहाँ लिखते हैं।

(१) ॐ नमो आदेश गुरु को, भैरव वापा नमस्कारं, आई काली गलेचाहार, नाथ निरञ्जन खरी पुकार। चोराचा टाँग बांधूँ, मार-ताचा हाथ बाँधूँ, बाँध रे वीर बेताल ! माझामाल, अगदीं अगदीं हाजर कर। ना हाजर करे, तो चाण्डाली चाभाणु धोबी घर पड़े। दोहाई बाबा अजैपाल की। मन्त्र साँचा, पिण्ड काचा, फुरा मन्त्र, ईश्वराची वाचा।

(२) काली माई सत्त की सवाई, सवा लाख में चढ़ी कढ़ाई। चढ़ी कढ़ाई सीरी होय। आग बाँधूँ, अगिया बेताल बाँधूँ। पीर-पैगम्बर

बाँधूँ, माई-पूता ओझा बाँधूँ। न बाँधे, तो नौना चमारन की आन, इस्माइल जोगी की आन। शब्द साचा, पिण्ड काचा, फ़ुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

(३) बिस्मिल्ला रहमाने रहीम। पाँव घूँघरा, कोठ जन्जीर, जिस पर खेले मुहम्मदा पीर। सवा मन लोहे का तीर, मार - मार करता आवे। डाकिनी बाँध, पलीत को बाँध, भूत को बाँध, प्रेत को बाँध। नो नरसिंघ को बाँध, बावन भैरों को बाँध। जत का मसाव बाँध, गूँगिया पीलिया धौलिया कालिया –सभी को बाँध। कुँआ बावड़ी को बाँध। सोती लाव, जागती लाव, पीसती लाव, पकाती लाव, जल्द लाव। हजरत इमाम हुसेन की जाँघ से निकाल कर लाव। बीबी फातमा के चीर - दामन से लाव। न लावे, तौ माता का चूखा दूध हराम करे। शब्द साँचा, पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

(४) ॐ नमो नाहर सिंघ वीर। हरे कपड़े, हरे चीर, नारसिंघ वीर। चावल चुपड़े सरसों को फक - फक करे। शाह को छोड़े, चोर को पकड़े। आदेश गुरु को।

(५) ॐ नमो आदेश गुरु को। काली बिच्छू काँकर वालो। उतर जा बिच्छू। ना करटालो उतरे, तौ उतारूँ चढ़ै, तौ मारूँ गरुड-मोर-पङ्ख हकालूँ। शब्द साँचा, पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

(६) ख खः।

(७) ॐ नमो। वन में ब्याही बाँदरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद-कूद शाखान पे, कच्चे वन फल खाय। आधा तोड़े, आधा फोड़े, आधा देय गिराय। हँकारत हनुमान जी, आधा सीसी जाय।

(८) ॐ वन में जाई बानरी, जिन जाया हनुमन्त। सच्चा खधा ठाकिया हो गया भस्मीभूत।

(९) ॐ नमो भगवते गरुडाय, अमृत - मय - शरीराय, सर्व-रोग-विध्वंसनाय, अनेक-कृत्या-विदारणाय, भूत-प्रेत - पिशाचोच्चाटनाय, एह्येहि गरुडाय, दुष्ट-रोगान् दूरी करोचे। कुदाण्डु सये पिशाचकुमारु सारो आदि रुद्र के आणु निमूल करो तो। आदि - शक्ति की आगमारु खिदाडो। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति०।

(१०) ॐ नमो आदेश गुरु को। अलह बाँधूँ, जलह बाँधूँ। अम्बर-तारा अस्सी कोस की विद्या बाँधूँ। बाँधूँ नदी की धारा। बाँधूँ तर्क-

शास्त्र का तीर। मस्तक बैठा हनुमन्त वीर। वीर हनुमन्त से क्या-क्या चले ? चौंसठ चक्र चलै। चौंसठ चक्र से क्या - क्या चले ? भूत चले, प्रेत चले, राक्षस चले, ब्रह्म-राक्षस चले, चुड़ैल चले, सोखा तपोखा चले, पर्वत औ धरणी चले, चौंसठ योगिनी चलै, ताप-तिजारी चलै, नव नाडि, बहत्तर कोठाँ माँहि सो निकाले, फलाने को आराम करे। न निकाले, तो रज, रामचन्द्र की दुहाई। मेरी० गुरो वाचा ॥

(११) ॐ नमो आदेश गुरु को। बाँध-बाँध हनुमान ! बाँध अँतरी, बाँध झाँपड़ो, बाँध डाकण, बाँध शाकण, बाँध भूत - प्रेत, चौरासी चेटक बाँध, खेराली पी बाँध, अष्ट-कोटि शक्ति बाँध, सन्तोक - दृष्टि बाँध। न बाँधे, तौ मेरी भ० वाचा ॥

प्रथम मन्त्र चोर को हाजिर कर उससे माल लेने का है। इस मन्त्र से चोरी पकड़ी जाती है, परन्तु किसकी चोरी पकड़ने से खुद को नुकसान भोगना पड़ेगा और किससे नहीं—चालाकी छोड़कर विधि से करने पर कार्य सिद्ध करता है। दूसरा बन्धन का है – कढ़ाई से लेकर चोर, स्त्री, भागता हुआ मनुष्य, भूत - प्रेत, ज्वरादि सभी बँधते हैं। तीसरा आकर्षण का है – कामी स्त्री का आकर्षण कर सकता है और भी शक्ति अनुसार दृढ़ स्थावर को छोड़ जीवाधीन पदार्थ, जीव, पशु--सभी का आकर्षण-कारक है। का चौथा चावल खिलाने से चोर को पकड़ता है। पाँचवाँ बिच्छू का विष उतारने में काम लाया जाता है। छठा मन्त्र सर्प-विष उतारने में कार्य करता है। सप्तम आधा सीसी के दर्द को दूर करनेवाला है। आठवाँ ज्वर उतारने में उत्तम है। नवम रोग और भूत दोनों के क्लेशों को दूर करता है। दसवाँ प्रेत, मुकदमा, ताप-तिजारी--सभी को रोकने में सिद्ध है। ग्यारहवाँ मन्त्र भी इसी काम में लिया जाता है।

मन्त्र का कार्य-परत्व बड़ा - छोटा भी हो जाता है। कार्य - परत्व शब्दों को लेकर ही काम में लाना चाहिए।



शाबर मन्त्रों में चौंतिसा यन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा

१४५ नया बाँस, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)-२५१००२

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६ के पृष्ठ ६२ पर 'चौंतिसा यन्त्र' व मन्त्र का उल्लेख है। इसी प्रकार का एक अन्य मन्त्र, जिसमें –शब्द-भेद है, 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ५, पृष्ठ ४८ पर है। प्रस्तुत-कर्ता श्री अनन्तदेव चन्दुलाल जोशी जी ने इस मन्त्र का प्रयोग 'भूतादि-दोष-निवारण' के लिए बताया है। मुख्य बात यह है कि देवता-नाम-सम्बन्धी जितने भी सौम्य या क्रूर मन्त्र हैं, वे सभी भूतादि दोषों का निवारण करने में समर्थ हैं, चाहे उनका प्रमुख गुण किसी अन्य काम्य-प्रयोग के लिए क्यों न हो। श्री जोशी जी ने 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' (भाग ५), पृष्ठ ४८ पर मन्त्र का जो गुण दिया है, वह ठीक नहीं है।

ध्यान दें, मन्त्र का उच्चारण करने पर पंक्ति-बद्ध कितने अङ्क बनते हैं ? इन्हें मन्त्रानुसार चार भागों में स्थान दें, तो १६ कोष्ठकों में 'चौंतिसा यन्त्र' बनता है। 'चौंतिसा यन्त्र' के सम्पूर्ण स्वरूप को यह मन्त्र दर्शाता है। यन्त्र को सिद्ध करने में इसी मन्त्र का अनुष्ठान किया जाता है। इसी से यन्त्र की कोष्ठकीय शक्तियों का पूजन और प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है, किन्तु मेरे विचार से यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठादि शास्त्रीय विधि से ही करनी चाहिए। कुछ विद्वानों का कहना है कि इस मन्त्र का उच्चारण कर 'चौंतिसे यन्त्र' का निर्माण करे। इस कथन का यन्त्र - विधान में कोई आधार नहीं है। यन्त्र-निर्माण का यह नियम है कि यन्त्र के सभी कोष्ठकों में से सबसे छोटे अङ्क का जो कोष्ठक होता है, उसी कोष्ठक से अङ्क भरना आरम्भ करते हैं। यह प्रामाणिक नियम 'चौंतिसे यन्त्र' के स्वरूप को प्रकट करनेवाले मन्त्र में नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि यह मन्त्र 'चौंतिसे यन्त्र' के स्वरूप को पंक्ति-बद्ध कण्ठस्थ करता है। न कि नियम-पूर्वक

यन्त्र-साधन में इसका उच्चारण होता है और न ही मन्त्र का गुण भूतादि-दोष-निवारण करने में है। उचित तो यह रहेगा कि 'चौंतिसा यन्त्र' को सिद्ध करने के अवसर पर इस मन्त्र का यथा-शक्ति जप कर लें, किन्तु इसके उच्चारण से यन्त्र - साधन न करें। यन्त्र - साधन शास्त्रीय विधि से ही करें। प्रसङ्ग-वश यहाँ मैं 'चौंतिसे यन्त्र' का परिचय व इसके स्वरूप को प्रकट करनेवाले दो अन्य शाबर मन्त्रों को प्रस्तुत कर रहा हूँ—

मन्त्र (१)

सत् (७) पुत्री शारदा, बारह (१२) बरस ववार।
एको (१) देवी जानिए, चौदह (१४) भुवन मँझार॥
दोऊ (२) पक्षी निर्मली, तेरह (१३) रक्ष-करी।
अष्ट-भुजी (८) परमेश्वरी, ग्यारह (११) रुद्र-धरी॥
सोलह (१६) कला सम्पूर्णी, तीनों (३) लोक पूजन करें।
दस (१०) अवतारी देवता, पञ्जवे (५) वास करें॥
नौ (९) नाथ, षट्, (६) शास्त्र, पन्द्रह (१५) तिथियाँ जान।
चार (४) युगों की ज्वाला मां, मुश्किल कर आसान॥

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

'चौंतिसे यन्त्र' की अधिष्ठात्री देवी भगवती षोडशी श्री-विद्या हैं। यन्त्र-विज्ञान के अनुसार अधिकांश यन्त्र १६ कलाओं पर सम्पन्न होते हैं। ये १६ कलाएँ प्रत्येक महा-विद्या की अङ्ग हैं। नाम-रूप में इनमें कुछ भिन्नता आ जाती है, परन्तु तन्त्र-शास्त्र में इनका एक निश्चित रूप है और उनसे विशेष अङ्कों का सम्बन्ध भी है। इस यन्त्र का शास्त्रीय स्वरूप जानने के लिए 'षोडश मातृका' के पूजन पर विचार करना चाहिए। 'षोडश-मातृका-मन्त्र' निम्न प्रकार कर्म-काण्ड में प्रचलित है—

गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया ।
देव-सेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोक-मातरः ।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुल-देवताः ।

यह मन्त्र तो मात्र परिचय के लिए है। शक्ति के इन नामों पर यदि तान्त्रिक दृष्टि से विचार करें, तो अनेक आधार व सम्बन्ध प्रगट होंगे। जैसे 'देव-सेना' का परिचय स्कन्द-प्रिया, षष्ठी देवी के रूप में भी है। 'तुष्टि-पुष्टि' का स्वरूप-परिचय 'सप्तशती' के पञ्चम अध्याय में देवताओं द्वारा की गई स्तुति में मिलता है। 'पद्मा' स्वयं नाम-रूप लक्ष्मी या कमला है। इन सबका मूल-तत्त्व राज-राजेश्वरी षोडशी महा-विद्या है।

यदि उक्त शाबर-मन्त्र के भाव पर ध्यान दें, तो ज्ञात होगा कि—सत्-गुण-पुनीत शारदा ही त्रिपुरा हैं, जिन्हें १२ वर्ष की क्वारी बाला का रूप देकर 'बाला त्रिपुरा' भी कहा गया है। वह चौदह भुवनों में मूल प्रकृति है, जिसे ग्यारह रुद्रों ने धारण कर रखा है। वह 'महा-त्रिपुरा' सोलह कलाओं से सम्पन्न है। ये षोडश कलाएँ उसकी अङ्ग-प्रत्यङ्ग हैं। वह 'श्री-विद्या' तीनों लोकों में पूजित है। ये दस देवता, जो पञ्च-भौतिक देह धारण करते हैं, वे उसी षोडशी भवानी की कृपा से अवतार लेते हैं। नौ नाथ तथा उसके प्राणेश्वर सदा-शिव व सम्पूर्ण शास्त्र उसी आदि-शक्ति की महिमा गाते हैं। उसी भवानी की कृपा से १५ तिथियाँ बदलती हैं तथा काल-चक्र चलता है। वह षोडशी भवानी चारों युगों की 'ज्वाला माँ' है। वह परम तेजस्विनी सभी के सङ्कट दूर करती हैं।

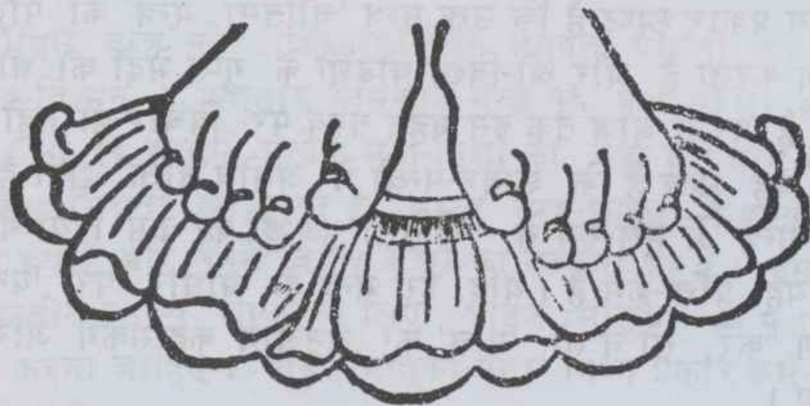
इस प्रकार स्पष्ट है कि उक्त मन्त्र 'चौंतिसा यन्त्र' का पंक्ति-बद्ध निर्माण करता है और श्री-विद्या षोडशी के गुप्त भेदों को भी प्रकट करता है, परन्तु आज तक इस गहन तत्त्व पर विचार ही नहीं किया गया। यह सत्य है कि शाबर-मन्त्रों में अमोघ शक्ति होती है। इस शाबर-मन्त्र में मूल-रूप से 'चौंतिसा' अङ्कों का क्रम दिया गया है, किन्तु यह पंक्ति-क्रम है। यदि इस मन्त्र के आधार पर 'यन्त्र' का निर्माण करें, तो न तो 'यन्त्र' को अनुलोम कह सकेंगे और न ही विलोम।

मन्त्र (२)

नव (९) दुर्गा को सेविए, सोलह् (१६) कला समर्थ ।
दो (२) मार्ग संसार के, जीना मरना सत् (७) ॥
छै (६) ऋतुओं की मौज मिलें, तीन (३) लोक का सुख ।
तेरा (१३) भाणा सिर मन्ने, बारह् (१२) राशि मनुष ॥
पन्द्रह् (१५) तिथि, दस (१०) इन्द्रियाँ, आठ (८) पहर दिन-रात ।
एक (१) ज्योति जग में, जलें न दीपक—न बाती ॥
चार (४) वेद की ज्योत है, पाँच (५) तत्त्व के माँहि ।
ग्यारह् (११) रुद्र गुरु मान ले, चौदह् (१४) भुवन तर जाई ॥

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

उक्त दूसरे शाबरी-मन्त्र से भी यन्त्र तो 'चौंतिसा' ही बनता है, किन्तु इसके क्रम में परिवर्तन है, जो प्रत्यक्ष है । इस प्रकार ये मन्त्र मात्र 'चौंतिसा यन्त्र' के स्वरूप को कण्ठस्थ कराते हैं । यही इनका विशेष गुण भी है । इनका गुण भूतादि-दोष-निवारण नहीं है । हाँ, इनके द्वारा भूतादि-दोषों को दूर अवश्य कर सकते हैं, किन्तु इन मन्त्रों पर यदि गहनता के साथ विचार किया जाए, तो मूल प्रकृति के सौम्य दर्शन का ज्ञान-लाभ होगा ।



स्वार्थ-सिद्धि-दायक शाबर-मन्त्र

❀ पं० भूपेन्द्रदत्त शर्मा

स्वार्थ-सिद्धि का सरल-सफल साधन है—'शाबर-मन्त्र-साधना'। जहाँ शास्त्रोक्त मन्त्रोपासना में अनेक नियमों का पालन करना प्रत्येक साधक के लिए असम्भव है, वहीं 'शाबर-मन्त्रोपासना' (साधना) सरलता व सुलभता-पूर्ण नियमों के पालन करने से सफल हो जाती है। जन-हित उद्देश्य से प्रस्तुत ये "स्वार्थ - सिद्धि-दायक शाबर-मन्त्र-प्रयोग" प्राचीन हस्त-लिखित पाण्डु-लिपियों से उद्धृत हैं। क्रमाङ्क ५-६ के मन्त्र सिद्ध साधकों से प्राप्त हुए हैं।

स्पष्ट है कि शाबर मन्त्रों में असीम शक्तियाँ समाहित रहती हैं, किन्तु ये मन्त्र शास्त्रीय नहीं हैं। लोक-भाषा में रचे हुए इन मन्त्रों का अर्थ बड़ा ही विचित्र होता है। यदि कोई विद्वान् इन मन्त्रों के भावों (अर्थ) पर विचार करें, तो इनका आश्रय बड़े ही निर्णायक ढङ्ग से लेगा। इन मन्त्रों का शब्द-समूह चाहे छोटा हो या बड़ा, सभी में अपनी-अपनी एक अलग विशेषता होती है। 'शाबर-मन्त्र-साधना' में श्रद्धा-विश्वास-लगन का होना अति आवश्यक है। किसी भी 'शाबर-मन्त्र' का प्रयोग करने से पहले 'रक्षा-कवच' सिद्ध कर लेना चाहिए। जो मन्त्र सिद्ध हो गया हो, उसे समय-समय पर चैतन्य कर लेना चाहिए। जैसे अमावास्या, पूर्णिमा या अन्य किसी पर्व पर। इससे मन्त्र प्रभाव-कारी बना रहता है। सौम्य-मन्त्रों को अपने कक्ष में और क्रूर-मन्त्रों को 'श्मशान' अथवा 'देवालय' या 'निर्जन स्थान' पर सिद्ध करें या मन्त्रों के प्रयोग में जहाँ स्थान का निर्णय दिया हो, वहाँ उसी स्थान पर करें। क्रूर मन्त्रों को सिद्ध करने से पहले किसी श्रेष्ठ साधक की अनुमति ले लेना लाभ-दायक रहेगा।

१. वशोकरण यन्त्र

विधि – उक्त 'यन्त्र' को शुक्रवार के दिन शुक्र की होरा में, लाल चन्दन द्वारा अनार की लेखनी से १०८ की संख्या में लिखे। तत्पश्चात् गन्ध-अक्षतादि द्वारा पूजा कर इन्हें नदी में बहा दे। अगले दिन

शनिवार को, शुक्र की होरा में, इस 'यन्त्र' को प्रयोग के लिए भोज-पत्र पर अनार की लेखनी से लाल चन्दन द्वारा लिखे। 'यन्त्र' एक ही लिखना है और 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखे।

रुं तुं रुं	रुं तु रुं	रुं तुं रुं
रुं तुं रुं	देवदत्त वशय स्वाहा	रुं तुं रुं
रुं तुं रुं	रुं तुं रुं	रुं तुं रुं

घी व शहद में इस 'यन्त्र' को तीन रात्रि तक स्थापित करे, तो साध्य व्यक्ति वशीभूत हो जाएगा।

२. स्वप्न में अङ्क ज्ञात होना

आजू-बाजू जाला बूना, पकड़ चोटी, धर पछाड़। लाओ हरफ का मुद्दा ॥

विधि—चार मिट्टी के कुण्डे लेकर, एक में अच्छा जल भरो, दूसरे में घी का दीपक जलाओ, तीसरे में लोबान की धूप और चौथे कुण्डे में केसरिया चावल रखो। उक्त मन्त्र पढ़ते जाओ और चावल को जल-भरे कुण्डे में छोड़ते जाओ। प्रत्येक बार चावल छोड़ने के बाद उसी जल भरे कुण्डे में अपना मुँह भी देखना है। यह प्रयोग रात्रि में करना है और मन्त्र को जपते-जपते आसन पर ही सोना है। ध्यान रहे, सोते समय पूर्व दिशा को सिर, पश्चिम को पैर और उत्तर की ओर मुख हो। विधि से करने पर यह प्रयोग प्रथम रात्रि ही प्रभाव दिखाएगा।

३. शत्रु-नाश के लिए

(१) ॐ लाल भैरव लाली लसै, कलुवा भैरव दे दुहाई। बैरी ईश्वर महा-देव का, अमुक पुत्र न रहे॥

विधि—उक्त मन्त्र को ग्यारह हजार की संख्या में जप कर सिद्ध कर ले। जब प्रयोग करना हो, तो रात्रि में श्मशान जाकर राई व सरसों के तेल से चिता में १०८ आहुतियाँ दे। यह प्रयोग तीन रात्रि करे।

(२) काला कलुवा, कमला केश। कानन कुण्डल, जोगी भेष॥ खप्पर में खाए, श्मशान में लेटे। इसकी पूजा कोई न मेटे॥

विधि—अमावास्या की रात्रि के समय श्मशान में सरसों के तेल का चौमुखा दीप जलाकर भैरव जी की पूजा करे। तत्पश्चात् मन्त्र को ग्यारह हजार की संख्या में जपे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। जप के पश्चात् उड़द के भल्लों (बड़ों) की बलि चिता में दे।

जब शत्रु के लिए प्रयोग करना हो, तो किसी भी रात्रि के समय श्मशान में भैरव जी की पूजा कर १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। फिर उड़द के भल्ले (बड़े) की बलि चिता को अर्पित कर दे। बलि देते समय शत्रु के संहार का ध्यान करे। यह प्रयोग एक सप्ताह तक करे। शत्रु का नाश होगा।

(३) ॐ नमो कलुवा। जबरदस्त हनुमत वीर ! धर-धराय, कर-कराय, परपराय, शत्रु को तड़तड़ाय। मूठ मारि दे पछारि। नाड़ी तोड़ि, रक्त सोखि, कलेजा चाबि, शत्रु सन्मुख हाँक मारो। टाँग पकरि, ले उठाय। फिर वायु में घुमाए, पृथ्वी पर दे पछाड़ि। न पछाड़े, तो तोहि गुरु गोरखनाथ की दुहाई॥

विधि—होली, दीपावली या ग्रहण की रात्रि में उक्त मन्त्र का ग्यारह सौ जप करे। जप आरम्भ करने से पहले मन्त्र को काँसे की थाली में रक्त चन्दन से लिखकर अक्षत, धूप, दीप व मिष्ठान्न से पूजन करे। दीप सरसों के तेल का होना चाहिए। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर जब शत्रु से बदला लेना हो, तो कुछ उड़द के दाने अपनी मुट्ठी में लेकर मन्त्र को १०८ बार पढ़कर शत्रु की छाती पर मार दे। शत्रु पछाड़ खाकर धरती पर गिर कर तड़पेगा। जब शत्रु को ठीक करना हो, तो सात प्रकार के मिष्ठान्न लेकर भैरव या हनुमान जी के मन्दिर

में चढ़ा आए। मिष्ठान्न चढ़ाते समय शत्रु के ठीक होने की भावना करनी चाहिए।

६. एक चमत्कारी प्रयोग

यह प्रयोग सिद्ध - साधक द्वारा बताया हुआ है। प्रयोग तो चमत्कारी है ही, मन्त्र का स्वरूप भी विचित्र है। प्रामाणिकता के लिए कुछ शाबर-ग्रन्थों एवं अन्य तन्त्र-ग्रन्थों में इस मन्त्र व इसके प्रयोग को खोजा, किन्तु सफलता नहीं मिली। न ही कभी इस प्रयोग को करने का अवसर स्वयं को मिला, किन्तु जिन व्यक्तियों को यह प्रयोग बताया, उन्हें लाभ मिला। मन्त्र व उसके प्रयोग की विधि इस प्रकार है—

मन्त्र—तोते तयियाना ।।

विधि—एक नई कब्र व एक पुरानी कब्र की थोड़ी-थोड़ी मिट्टी दोनों हाथों की मुट्ठियों में अलग-अलग लेकर बन्द कर लो। मन्त्र को ३३३ बार जप कर अलग-अलग दो थैलियों में दोनों मुट्ठियों की मिट्टी डाल दो। इन्हीं दोनों थैलियों में ३३३-३३३ उड़द के साबूत दाने भी डालो। मन्त्र-संख्या गिनने में त्रुटि सम्भव है। इसलिए उड़द के दानों से ही मन्त्र - जप करे। यह प्रयोग तब किया जाता है, जब व्यक्ति समस्या-ग्रस्त होकर स्वयं कोई निर्णय न ले सके। प्रयोग रात्रि के समय होगा। प्रयोग-कर्ता सोते समय उन दोनों थैलियों को सिरहाने रखे। इस प्रयोग के प्रभाव से समस्या-ग्रस्त व्यक्ति को सही मार्ग-दर्शन स्वप्न अथवा प्रत्यक्ष शक्ति के द्वारा चामत्कारिक ढङ्ग से होगा। कब्र की मिट्टी को अगले दिन कब्रिस्तान में डाल देना चाहिए। यदि यह प्रयोग एक बार में सफल न हो, तो तीन बार करे।

७. विद्वेषण का सफल-तम मन्त्र

यह प्रयोग दो घनिष्ठ प्रेमियों के मध्य शत्रुता उत्पन्न कराता है। शान्तिक-पौष्टिक कर्मों को छोड़कर शेष सभी कर्म, तन्त्र में, 'अभिचार'-कर्मों की श्रेणी में आते हैं। 'विद्वेषण' भी अभिचार-कर्म होने के कारण निन्दनीय माना गया है क्योंकि ये कर्म लोक-हित में नहीं, अपितु स्वार्थ-सिद्धि में उपयोग किए जाते हैं, किन्तु ये ही कर्म यदि लोक-हित-भावना के उद्देश्य से उपयोग में लाए जाएँ, तो प्रशंसनीय

भी हैं। निन्दनीय प्रयोग, जिसमें स्वयं का स्वार्थ हो, करनेवाले को किसी-न-किसी रूप में हानि भी अवश्य होती है, किन्तु यह भी स्पष्ट है कि आत्म-रक्षा की भावना से ऐसे प्रयोगों के करने में किसी भी प्रकार का दोष नहीं।

मन्त्र—राई-राई तू है महा-माई, जारी है जखीरी छाई। अमुका-अमुक में होवे लड़ाई ॥

विधि—होली, दीपावली अथवा ग्रहण-काल में इस मन्त्र की ३१ मालाएँ जप ले, मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। जब प्रयोग करना हो, तो श्मशान में रात्रि में जाकर जलती हुई चिता पर राई में सरसों का तेल मिला कर १०८ आहुतियाँ मन्त्र पढ़कर दे। अमुका - अमुक के स्थान पर उन दो व्यक्तियों के नाम ले, जिनमें विद्वेषण (लड़ाई) करानी है।

८. मदारी का खेल बाँधना

ॐ काली काली महा - काली, ब्रह्मा की बेटी–इन्द्र की साली। खावै पान, बजावै ताली, जा बैठी पीपल की डाली। बाँध-बाँध मदारी को बाँध, मदारी के खेल को बाँध। ना बाँधै, तो तुझे गुरु गोरखनाथ की आन ॥

विधि—अमावास्या की रात्रि में काली-मन्दिर जाकर यथोपचारों सहित भगवती काली का पूजन करे। शुद्ध घी और सरसों के तेल का दीपक जलाए। काले कम्बल के आसन पर बैठकर इस मन्त्र को १००८ बार जप कर सिद्ध कर ले। जब कभी मदारी का खेल देखने का अवसर सामने आए, तो हाथ में थोड़ी-सी मिट्टी लेकर २१ बार मन्त्र को पढ़े और उस मिट्टी को एक ही फूँक में मदारी की ओर उड़ा दे, तो मदारी व मदारी का खेल बँध जाएगा।

९. क्लेश दूर हो

ॐ ग्लौम् गौरी-पुत्र, वक्रतुण्ड, गण-पति, गुरु, गणेश ! ग्लौम् गण-पति, ऋद्धि-पति, सिद्धि-पति ! मेरे कर दूर क्लेश ॥

विधि—१०८ दूर्वांकुर व एक लड्डू लेकर गणेश-मन्दिर में जाए। गणपति जी को सिन्दूर का तिलक लगाए, लड्डू चढ़ाए। तब १०८ बार मन्त्र को पढ़े। प्रत्येक मन्त्र पर एक दूर्वांकुर गणपति जी को

चढ़ाता जाए। यह क्रम आठ दिन, प्रातः - काल के समय, बिना भोजन किए हुए करे। शीघ्र ही परिवार के या स्वयं के क्लेश का निवारण होगा।

१०. अभीष्ट देवता का आकर्षण

'शाबर-मन्त्र-संग्रह'--भाग चार, पृष्ठ ५२ पर 'अभीष्ट देवताओं का आकर्षण' मन्त्र दिया है। यहाँ प्रस्तुत उसी प्रकार का मन्त्र देवता को आकर्षित करता है। यह मन्त्र हस्त-लिखित रूप में मेरे पास सुरक्षित है, किन्तु इसकी विधि गुप्त है। मैंने एक तन्त्र - विद् से इसकी विधि प्राप्त करनी चाही, किन्तु विधि उचित प्राप्त नहीं हुई। अन्य विद्वानों के सम्मुख मैंने इसे प्रकट नहीं किया। यह मन्त्र भी स्थानीय है। मुजफ्फरनगर जिले के पश्चिमी भाग में 'झिझाना' नाम का कस्बा है। उस कस्बे के अन्तर्गत यमुना किनारे 'बिड़ौली'-ग्राम बसा हुआ है। यहीं पर एक अत्यन्त प्राचीन चामत्कारिक मजार है, जो जङ्गल में बनी हुई है। प्रत्येक वर्ष के ज्येष्ठ मास के आरम्भ में यहाँ बड़ा मेला लगता है। इस अवसर पर अनेक चमत्कार आँखों से देखे जा सकते हैं। इस मजार को 'बिड़ौली के पीर' या 'सैय्यद' के नाम से लोग जानते हैं। मन्त्र इस प्रकार है--

हरि ओइम् शिव-शिव। हम वो सैय्यद हैं, जो बिड़ौली जमना जी के बीच में रहते हैं। हम वो इन्सान हैं, जो मुसीबत में काम आ सकते हैं। जो कोई दई-देवता-रूप धारण बदलने के अनुसार प्रकट नहीं हो सकता, तो हमारी कब्र के उपर दाईं तरफ बैठना, दाईं हाथ में माला रखना। आँख मीच कर यह कहना--ला इलाहा इल्ला, अल्ला सुभाहा नका इन्नी कुन्तो मैतज जुआले मीन॥

विधि--मन्त्र के गर्भ में ही विधि वर्णित है। यह प्रयोग चालीस दिन का है। समय रात्रि के ८ बजकर १० मिनट पर, दिन गुरुवार। मन्त्र-जप एक माला।

११. दरिया देव की कृपा

यह प्रयोग-मन्त्र भी एक हस्त - लिखित पत्र में मेरे पास सुरक्षित है। यह मन्त्र कार्य - साधन पूरा करता है और मन्त्र के प्रभाव से दरिया देव की कृपा बनी रहती है। मन्त्र इस प्रकार है--

पहिले नाम भगवान् का। दूजे नाम औतार का। तिजे नाम सत्-गुरु, जिनका नाम स्वामी जी। उनकी कृपा और उनकी दया। इस ख्वाजा - खिदर पूजने के लिए परसाद लेकर आया। लोना चमारी दिरन्त की दुहाई। वैष्णों शाकुम्बरा और औतार पीर और पैगम्बर-- इन सबकी दया के साथ दरिया के किनारे, जिससे की हमारी आत्मा ठण्डी। लोना चमारी, दुहाई। वस्तग फेरूल युसूफ की तरह, भूरे देव की तरह, सत्य-नारायण की तरह मैंने भी पैर बढ़ाया। लोना चमारी की दुहाई। हरी-हरी, शिव-शिव, जयन्ती माता ॥

विधि--किसी भी दिन सायं, ठीक साढ़े ६ बजे एक पान, दो लौंग, सात बताशे लेकर दरिया (नदी) के तट पर जाकर मन्त्र १०८ बार पढ़े। उसके पश्चात् प्रसाद को जल में प्रवाहित कर दे। एक सप्ताह तक ऐसा करे, तो रुके कार्य पूरे हों। दरिया देव की कृपा मिले।

१२. धूमावती-प्रयोग

यह प्रयोग अत्यन्त भय - कारक है। विचार - पूर्वक इस मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। अभी तक यह मन्त्र गोपनीय रहा। इसकी दुर्लभता को देखते हुए ही मैं इसे प्रथम बार प्रकट कर रहा हूँ, अन्यथा अभी तक यह प्रयोग पाण्डु-लिपि में ही वर्णित था। मन्त्र इस प्रकार — है

मन्त्र--धूम-धूम धूमावती। मसान में रहती, मरघट जगाती। सूप छानती, जोगनियों के सङ्ग नाचती। डाकनियों के सङ्ग मांस खाती। मेरे बैरी·· का भी तु मांस खायै। कलेजा खायै, लहू पीयै, पयास बुझायै। मेरे बैरी को तड़पा-तड़पा मार। ना मारै, तो तौहुँ को माता पारबती के सिन्दुर की दुहाई। कनीपा औघड़ की आन ॥

विधि--एक छोटा तिनकों का सूप (छाज) बनाए। एक छटाँक शराब व बकरे का थोड़ा कच्चा मांस ले। अमावास्या की रात्रि में श्मशान जाए। वहीं से एक कफन का टुकड़ा प्राप्त कर, जलती चिता के समीप बैठे। उक्त मन्त्र को १००८ बार जपे। जप कर इसी मन्त्र

का उच्चारण करते हुए चिता की भस्म उठाए। भस्म में थोड़ी शराब मिलाकर, कफन के टुकड़े पर अपनी तर्जनी अँगुली से उक्त मन्त्र को लिखे। रिक्त स्थान पर शत्रु का नाम लिखे, फिर उस पर मांस का एक टुकड़ा रख दे। चार तह बना ले। इसके पश्चात् सूप में मांस रखकर, उसमें शराब उड़ेल दे। मन्त्र पढ़कर चिता में रख दे। तब कफन के टुकड़े को लेकर शत्रु के यहाँ डाल आए। शत्रु का नाश होगा। यह ध्यान रहे कि मन्त्र के रिक्त स्थान में शत्रु का नाम बोला जाएगा।



भूल-सुधार

'साबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६ के पृष्ठ २९ पर प्रकाशित 'दो अचूक एवं गुप्त प्रयोग' में कुछ अशुद्धि है। कृपया उसे निम्न प्रकार से शुद्ध करके प्रयोग में लाएँ –

पृष्ठ	प्रयोग	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९	१	२	आगवानी	अगवानी
,,	,,	४	एक	नौ
,,	,,	६	तुनादें	नूनादे
,,	२	७	हजार	हाज़र

इन मन्त्रों के कठिन शब्दों के अर्थ इस प्रकार हैं—

अगवानी = आगे। कून = कौन। कालखा = कालिका। भखती = खाती-चबाती। काँ = अधिकार। दाने = दानव। हाज़र = उपस्थित।

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री धर्मवीर शास्त्री, रोहतक (हरियाणा)

स्वयं-सिद्ध शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सुधीरकुमार
ग्राम चकिया, बेगूसराय (बिहार)

'शवर'-शब्द का उल्लेख 'अमर-कोष', 'विश्व' एवं मेदिनी-कोष' में प्राप्त होता है। यथा—

भेदाः किरात-शवर पुलिन्दा म्लेच्छ - जातयः ।
शवरो म्लेच्छ-भेदे च, पानीये शङ्करेऽपि च ॥

उक्त कोशों के अनुसार 'शवर'-शब्द किरात-भिल्ल-वाची तो है ही, शङ्कर-वाची भी है।

'महा-भारत' की प्रसिद्ध कथा है कि महर्षि व्यास जी ने अर्जन को 'पाशुपतास्त्र' द्वारा विजय पाने का निर्देश दिया। अतः अर्जुन को घोर जङ्गल में भीषण तप करना पड़ा। किरात-वेश में भगवान् शङ्कर ने उनकी परीक्षा ली। प्रसन्न होकर शङ्कर ने उन्हें कौरवों पर विजय पाने हेतु अपना अस्त्र प्रदान किया। इसी कथा के आधार पर 'किरातार्जुनीय महा - काव्य' की रचना हुई, जो प्रसिद्ध ग्रन्थ है।

उसी समय माता पार्वती ने भी शबरी का रूप धारण किया था। दीर्घकाल तक शवर-सेवकों द्वारा सेवित होने पर मां ने प्रसन्न होकर उनसे वर माँगने को कहा। उन लोगों ने निवेदन किया कि "मां! यदि तुम प्रसन्न हो, तो भोले बाबा को भी मनाकर हम सबको ऐसे मन्त्रों का उपदेश दो, जिससे हम अपढ़ अनभिज्ञों के भी आधि-भौतिक और आधि-दैविक ताप आसानी से मिट जाँय।"

माता पार्वती ने भगवान् भूतनाथ को प्रसन्न देखकर अपने भक्तों की आकांक्षा कह सुनाई। फल-स्वरूप शवर-रूपी शङ्कर एवं शवरी-रूपिणी माता पार्वती के मुखारविन्द से जो 'अनमिल अर्थ-हीन अक्षर' निकले, उनके उच्चारण मात्र से सभी सिद्धियाँ तत्काल मिलने लगीं। इन शवर-मन्त्रों में वैदिक मन्त्रों की तरह उच्चारण एवं स्वर-क्रम की न तो कठिनता होती है और न फल-सिद्धि में विलम्ब होता है। इसी बात को सन्त - शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने 'राम-चरित-मानस' के 'बाल-काण्ड' में निम्न रूप से बताया है—

कलि बिलोकि जग-हित हर-गिरिजा ।
सावर - मन्त्र - जाल जिन्ह सिरिजा ।।
अनमिल आखर अरथ न जापू ।
प्रगट प्रभाव महेश - प्रतापू ।।

इसका एक कारण यह भी बताया गया है कि अन्य सभी मन्त्रों को 'कीलित' किया गया है। अतः वे 'उत्कीलन' किए जाने पर ही अपना प्रभाव दिखाते हैं, परन्तु 'शाबर-मन्त्रों' को कीलित नहीं किया गया है। इसलिए अन्य मन्त्रों की अपेक्षा कम समय में और अल्प साधना से ही वे सिद्ध हो जाते हैं। कुछ 'शाबर'-मन्त्र तो ऐसे होते हैं, जिन्हें सिद्ध करने की भी आवश्यकता नहीं होती। उनके उच्चारण से ही लाभ होता है। ऐसे ही दो 'स्वयं-सिद्ध' मन्त्र यहाँ प्रस्तुत हैं--

१. यात्रा में देह-रक्षा-मन्त्र

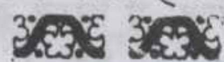
मन्त्र—ॐ नमो कामरू कामाख्या देवी ! कहाँ जाने को हुआ मेरा मन ? आत्म-रक्षा बन्दि होऊँ। सावधान सिर हाथ दंहत ओ बन्धन गर्दन पेट पीठ बन्धन और बन्धन चरण अष्टाङ्ग बाँधूँ। मनसा के वरदान करा सके उमा के बान। कामाख्या वह होऊ अमर आदेश। हाडि दासी चण्डी की दुहाई।

विधि—उक्त मन्त्र तीन बार पढ़कर जहाँ कहीं भी गमन करे, तो सर्पादि सङ्कट एवं मृत्यु का भय नहीं रहता।

२. गृह-बन्धन मन्त्र

मन्त्र—हाट चलते, बाट बाँधूँ। बाट चलते, घाट बाँधूँ। स्वर्ग में राजा इन्द्र बाँधूँ। पाताल में वासुकी बाँधूँ। शिकाली बाणन तोड़ के मछली मारू। टेंगरा माछ मारी। गाछ फुटे, डाल कारू। फूले उठे, तार खाईबन किए। उजार आए, आगे बाँधूँ। पाछू आए, पाछू बाँधूँ। बाँएँ-दाएँ बाँधूँ। यह बन्धन को बाँधत, ईश्वर महा-देव बाँधूँ। देव हिम-घर में सहदेव हम सोय रहेऊँ अकेला। लोहे के दो कला मांस कर, पत्थर हावेवा काटे कूट। बड़े पिता धर्म की दुहाई।

विधि—एक मुट्ठी धूल में सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर घर के चारों ओर छींट देने से घर बंध जाता है। फिर कोई भय नहीं रहता।



साधुओं, ओझाओं व तान्त्रिकों द्वारा प्राप्त

शाबर-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं. सूरजप्रकाश सारस्वत
ग्राम बड़ोटी, पो० रैल, जि० हमीरपुर (हि० प्र०)

(१) रक्षा का मन्त्र

ओ३म् आदेश, गुरु जी को आदेश। वज्र की कोठड़ी, वज्र किवाड़ा। वंज्र छायों, दसों द्वारा। गणेश सौंगली, शेष कुण्डा। ब्रह्मा कुञ्जी, विष्णु ताला। भोले शङ्कर की चौकी, भैरों बलि, हनुमन्त वीर का पहरेदारा। जो इस घट-पिण्ड पर करे घाव, तो शिव-शक्ति की फिरे दुहाई। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। चले मन्त्र, गुरु गोरख-नाथ का वाचा फुरे।

विधि—ग्रहण अथवा होली, दीवाली इत्यादि शुभ योगों में गुरु-देव, गणेश, शेष, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शक्ति, शिव और गुरु गोरख-नाथ का पञ्चोपचार से पूजन करने के उपरान्त मन्त्र का दस हजार जप करे। यदि पाँच माला प्रति-दिन जप करे, तो २१ दिन में पूरा हो जाएगा। फिर किसी भी व्यक्ति को 'विभूति' अथवा 'धागा' अभि-मन्त्रित करके देने से आभिचारिक प्रयोगों से रक्षा होती है। किसी भी प्रयोग में बैठने पर उक्त मन्त्र से रक्षा-रेखा खींच कर बैठना भी लाभ-दायक है।

(२) दत्तात्रेय आसन-गायत्री

आसन ब्रह्मा, आसन विष्णु, आसन इन्द्र, आसन बैठे गुरु गोविन्द। आसन बैठो, धरो ध्यान, स्वामी कथनो ब्रह्म-ज्ञान। अजर आसन, वज्र किवाड़, वज्र वजड़े दशम द्वार। जो घाले वज्र घाव, उलट वज्र वाहि को खाव। हृदय मेरे हर बसे, जिसमें देव अनन्त। चौकी हनु-मन्त वीर की। हनुमन्त वीर, पाँव जञ्जीर। लोहे की कोठी, वज्र का ताला। हमारे घट-पिण्ड का गुरु देवदत्त आप रखवाला। पाय कोस अगुम कीले, पाय कोस पश्चिम कीले। पाय कोस उत्तर कीलूँ,

पाय कोस दक्षिण कीलूँ। तिल कीलूँ, तिल-बाड़ी कीलूँ। अस्सी कोस की सारी विद्या कीलूँ। नाचे भूत, तड़तड़ावे मसान। मेरा कील या करे उत्कील, वाको मारे हनुमन्त वीर। मेरा कील या करे उत्कील, ढाई पिण्ड भीतर मरे। मेरा दिया बाँध टूटे, हनुमान की हाँक टूटे। रामचन्द्र का धनुष टूटे। सीता का सत टूटे। लक्ष्मण की कार छूटे। गङ्गा का नीर फूटे। ब्रह्मा का वाक टूटे। गऊ, गायत्री, ईश्वर-रक्षक। या पै ना मूल लगावे, ना लार। रक्षा करे गुरु दातार ॥१

खिन्न दाहिने, खिन्न बाएँ। खिन्न आगे, खिन्न पीछे होवे गुरु गोसाईं सिमरते। काया भङ्ग ना होवे ॥२

काल ना ढूके, वाघ ना खावे ॥३

अमुक नाम सिर पर ना घाले घाव ॥४

हमारे सिर पर अलख गुरु का पाँव ॥५

रूखा बरखा, वीन हमारी, माल हमारा कूड़ा। जात हमारी सबसे ऊँची, शब्द गुरु का पूरा ॥६

चारों खानी, चार वाणी, चन्द्र-सूरज-पवन पाणी। धूनी ले आया बाल गोपाल। सब सन्तन मिल चेतावनी। बारह जागे, गढ़े निशान। हमारे सिर पर काल-जाल, जम-दूत का लगे ना दाँव ॥७

वज्र-कासौटी बाहर-भीतर, वन में वासा अचिन्त साँप, गौहरा आवे न पास ॥८

सख्त धरती, मुक्त आकाश। घट-पिण्ड-प्राण, गुरु जी के पास ॥९

रात रखे चन्द्रमा, दिन रखे सूरज, सदा रखे धरतरी। काल-कण्टक सब दूर ॥१०

उगम पश्चिम कीलूँ, उगमी उत्तर-दक्षिण कीलूँ। अमुक नाम चले गोदावरी। लख अवधूत साथ। बाँधूँ चोर, सर्प और नाहर के सारे डार। रक्षा करें गुरु देवदत दातार ॥११

जो जाने आसन-गायत्री का भेद। आपे कर्त्ता, आपे देव ॥१२

इतना आसन-गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया ॥१३

सर्व-सिद्धों में दत्तात्रेय जी कहा—अलख, अलख, अलख ॥१४

विधि—किसी अच्छे मुहूर्त में उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। फिर उसका दशांश हवन (लगभग ११ पाठ) निम्नलिखित सामग्री से करे—१ केसर, २ कस्तूरी, ३ मुस्की कपूर, ४ देसी शक्कर,

५ गाय का घी, ६ गूगल धूप बढ़िया तथा ७ चन्दन-बूरा। हर पाठ में, जहाँ संख्या १ से १४ दी हैं, 'स्वाहा' बोलकर आहुति दे। इस प्रकार १५४ आहुतियाँ देनी पड़ेंगी। मन्त्र सिद्ध हो गया। अब किसी भी पीड़ित व्यक्ति के लिए १० बार मन्त्र का जप करे और एक पाठ से १४ आहुतियाँ सामग्री से दिलवा दे। भगवत्-कृपा से अप-मृत्यु भी टल जाती है। ग्रहों की शान्ति होती है।

(३) भैरों का मन्त्र

आद भैरों, जुगाद भैरों, भैरों है सब थाईं। भैरों ब्रह्मा, भैरों विष्णु, भैरों ही भोला साईं। भैरों देवी, भैरों सब देवता, भैरों सिद्ध, भैरों नाथ। भैरों गुरु, भैरों पीर, भैरों ज्ञान, भैरों ध्यान। भैरों योग-वैराग। भैरों विन होय ना रक्षा। भैरों विन बजे ना नाद। काल भैरों, विकराल भैरों। घोर भैरों, अघोर भैरों। भैरों की कोई ना जाने सार। भैरों की महिमा अपरम्पार। श्वेत वस्त्र, श्वेत जटा-धारी। हत्थ में मुदगर, श्वान की सवारी। सार की जञ्जीर, लोहे का कड़ा। जहाँ सिमरूँ, भैरों बाबा हाजिर खड़ा। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखाँ आद भैरों ! तेरे इल्म चोट का तमाशा।

विधि—४१ दिनों तक किसी शिव-मन्दिर या भैरव-मन्दिर में प्रति-दिन एक माला जप करे। उड़द के 'बड़े' और 'मद्य' का भोग दे। भैरव बाबा भक्त की सब कामनाएँ पूर्ण करते हैं।

(४) सींडू वीर का मन्त्र

पहाड़, पहाड़ में समेर, समेर में गुफा, गुफा में धुन्धुकारा, जित्थु बैठा साध विचारा। खोली सोने की ताकी, निकले वीर मस्ताकी। पौण का गड़वा, पौण की धारी। निकली सींडू वीर की सवारी। आगे निकली बकरी, पिच्छे निकले या छेला। गुरू का सिख निकले या अलबेला। भाईं वैहलो, सिख लाडला। गुरु गोरखनाथ दा लाडला। गुरु नानक देव जी दा प्यारा। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। चले मन्त्र, ईश्वर महादेव का वाचा फुरे।

विधि—उक्त मन्त्र का जप अमलतास वृक्ष के नीचे उस समय करे, जब उसमें फूल हों। प्रति-दिन प्रातः और सायं-काल एक-एक माला जप करे। गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा हलवे का नैवेद्य

दे। पानी का गड़वा रखे। सर्व-प्रथम वृक्ष को जल दे। फिर पूजनोपरान्त एक माला जप करे। सींडू वीर प्रत्यक्ष होकर दर्शन देते हैं और कामना पूर्ण करते हैं।

(५) नव-नाथ का मन्त्र

ॐ आदेश, गुरू जी को आदेश। ओङ्कार - रूपी आदि-नाथ आकाश-स्वरूपी। सन्तोषनाथ विष्णु खण्डा खड्ग-स्वरूपी। गज-वेली कन्थड़ीनाथ गणेश जी हस्ति-स्वरूपी। अचला अचम्भेनाथ शेषनाग अचल - स्वरूपी। सिद्ध चौरङ्गीनाथ पूर्ण भगत चन्द्रमा - स्वरूपी। माया-रूपी मच्छेन्द्रनाथ। घटे-बढ़े पिण्ड गुरू गोरखनाथ। इतना नौ नाथ मन्त्र-जाप सम्पूर्ण भया। गुरू जी, नाथ जी ! आदेश, आदेश।

विधि——उक्त मन्त्र का प्रति-दिन एक माला जप करे। कम-से-कम दस हजार जप करने पर मन्त्र जागृत हो जाएगा। फिर किसी पीड़ित व्यक्ति को विभूति, धागा, लौंग, इलायची अभिमन्त्रित करके देने से तान्त्रिक बाधा की शान्ति होती है।

(६) रक्षा-कारक मन्त्र

नागौरी से सुलतान, मुहम्मद से जोद्धा, बड़े खुदाय काम। चारों चक्र हनुमान जोद्धे ने मारे। मस्तक में सिन्दूर लगाऊँ। सवा सेर का रोट चढ़ाऊँ। मैं करूँ हिन्दी का पाठ। घेर - घार कर लगा लगाया, भेजा - भेजाया सब गुर्ज के बस में कर। पहली हक्का कौन चले ? गनिहर भैरों। दूजी हक्का कौन चले ? ख्वाजा पीर। तीजी हक्का कौन चले ? काली माई। चौथी हक्का हनुमान वीर चले। लगा-लगाया, भेजा - भेजाया, हिन्दु- मुसलमान, जात - कुजात के मन्त्र को बन्द कर। न करे, तो माता अञ्जनी का पिया दूध हराम करे। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। चले मन्त्र, फुरे वाचा।

विधि——ग्रहण-काल अथवा होली - दीवाली के समय इस मन्त्र को आरम्भ करके एक हजार जप करे। इसके बाद इस मन्त्र से विभूति आदि बनाकर देने से आभिचारिक बाधा की शान्ति होती है।

(७) बाबा नानक जी का मन्त्र

अगम - अगोचर तू परमेश्वर। तू मेरा राखा सवनीं थाईं। भाई बुड्ढे नूँ पीढ़ी बख्शी। भाई वावे नूँ पीढ़ा। गुरु अङ्गद नूँ गुरयाई

बख्शी, चार कुण्ठ देया पीरा। सत नाम श्री वाहे गुरु। मन्त्र बाबा नानक जी दा जाप। रक्षा करनी बाबा जी अप्पो आप।

विधि—सिख-धर्म के अनुयायी उक्त मन्त्र का प्रति-दिन जप कर सकते हैं। अथवा बाबा नानक जी पर श्रद्धा रखनेवाला कोई भी साधक इससे लाभान्वित हो सकता है। जितना जप अधिक होगा, उतना ही अधिक लाभ होगा।

(८) माँ भगवती का मन्त्र

ॐ आदेश, गुरु जी को आदेश। श्रीमहा-काली, श्रीमहा-लक्ष्मी, श्रीमहा-सरस्वती। ॐ भर्गो देवी परमेश्वरी विद्महे त्रिगुणे त्रिगुणातीते धीमहि तन्नो दुर्गा भगवती प्रचोदयात्। आदि - नाथ का वाचा फुरे। माई गौरजाँ की होय दुहाई।

विधि—नवरात्र में प्रारम्भ करके उक्त मन्त्र का सवा लाख जप करे। फिर दशांश हवन-तर्पण-मार्जन तथा कुमारी-वटुक-पूजन करे। भगवती की कृपा से सर्व-विध मङ्गल होगा। प्रयोग को गुप्त रखे। साधक को जो अनुभूतियाँ स्वप्न आदि हों, अन्य किसी को न बताए। उन्हें अपने तक ही सीमित रखे।

(९) सन्तोषी माता का मन्त्र

ॐ नमो सन्तोषी माई। सत की सदा सहाई। बाबा गणपत की बेटड़ी। ऋद्धि - सिद्धि की जाई। भक्तों को बख्शे सन्तुष्टि। नाम सन्तोषी कहलाई। दुःख हरो, सुख करो। मुरादें पूर्ण करो, सिर पर मेहर का हाथ धरो। माई, तेरी महिमा अपरम्पार। तोहे बारम्बार नमस्कार। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूँ माता सन्तोषी, तेरे इल्म का तमाशा।

विधि—शुक्ल-पक्ष के शुक्रवार से आरम्भ कर प्रति-दिन कम-से-कम एक माला 'जप' करे। शुक्रवार को 'व्रत' रक्खे। खटाई न खाए। गुड़ और भुने चने का भोग लगाए। माता सन्तोषी के भक्तों के लिए यह मन्त्र कल्प-वृक्ष के समान है।

(१०) जादू-कीलन-मन्त्र

ॐ आदेश, गुरु जी को आदेश। कीलूँ कीलूँ, जादू-जन्त्र-मन्त्र कीलूँ। हर किस्म का तन्त्र कीलूँ। राजा कीलूँ, रानी कीलूँ। दुष्ट पापी की

वाणी कीलूँ। भूत कीलूँ। प्रेत कीलूँ। यक्ष-पिशाच, ब्रह्म-दैत्य कीलूँ। बूँजा वीर कीलूँ। चौंसठ योगिनी कीलूँ। अस्सी मसान, नब्बे भैरों कीलूँ। दुष्ट की भेजी काली कीलूँ। वेताल और वेताली कीलूँ। गादा कीलूँ, गन्देला कीलूँ। चौदह नाहरसिंह, सोलह सींडूँ कीलूँ। हिन्दू का मन्त्र, मुसलमान की कलाम कीलूँ। जादू जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सर्व कीलूँ। कीलूँ चण्डी माई की शक्ति से। भक्त हनुमान की भक्ति से। शिव-शङ्कर के तप से। माता-पार्वती के सत से। पृथ्वी की शक्ति, समेरू की कील। कृष्ण की नीति, नारद की दलील। मेरा कीला पत्थर कीले। ना पत्थर फूटे, ना मेरा कीला छूटे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। चले मन्त्र, ईश्वर महादेव का वाचा फुरे।

विधि—पहले 'ग्रहण-काल' में उक्त मन्त्र का एक माला 'जप' कर मन्त्र को जागृत कर ले। फिर पीड़ित व्यक्ति के ऊपर नींबू और ताँबे की कील से कीलित करे। जादू-जन्त्र-मन्त्र का दुष्प्रभाव समाप्त हो जाएगा।

(११) ख्वाजा पीर का मन्त्र

खिजर मस्त, खिजर अलमस्त। तोड़े कुलफ, लिआवे रसत। जल में ख्वाजा सेविए, जाहर जिन्दा पीर। जहाँ ख्वाजा सेविए, जासु जिन्दा पीर। मैं गुलाम तेरा, तूँ कम्म करीं मेरा। वासता आपणे, नाम दा हाजर हो जा। वासता ई तेरे, नाम दा हाजर हो जा। मैं गुलाम तेरा, तूँ कम्म करीं मेरा। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूँ ख्वाजा खिज्र पीर, तेरे इल्म का तमाशा।

विधि—दरिया के किनारे कुशा का आसन, मिट्टी की माला, एक लोटे में दूध की कच्ची लस्सी, आटा भिगोकर (पाव भर) तेल का दीपक, चूरमा, दलिया, लौंग, सुपारी, जायफल, लोहबान का धूप अपने पास रखकर 'जप' करे। ४१ दिन तक रात्रि में ग्यारह बजे के बाद 'जप' करे। भिगोया आटा, चूरमा, दलिया, कच्ची लस्सी आदि को जल में प्रवाहित करे। लौंग, सुपारी, जायफल प्रति - दिन वापस साथ ले आए और प्रत्येक दिन साथ लेते आए। भयानक आवाज इत्यादि से न डरे।

(१२) थनैली रोग का मन्त्र

तू काली, तू कामणी, कलुआ छप्पर छाए। दुद्धी अपनी ठाकां, पीड़ फलानी की जाए। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि––ग्रहण अथवा होली, दिवाली के समय उक्त मन्त्र का एक हजार 'जप' कर इसे सिद्ध करे। जब किसी स्त्री के स्तन में थनैली-रोग हो, तो फलानी की जगह स्त्री का नाम लेकर विभूति से अपने स्तन पर मन्त्र पढ़े। यदि स्त्री के बाँएँ स्तन में कष्ट हो, तो अपने दाएँ स्तन पर विभूति लेकर मन्त्र पढ़े।

(१३) घाव या फोड़े के विष का मन्त्र

गोरा वलद, कज्जलियाँ आखीं। सत सुक्के, सत द्वार। खड़ा हो जा विषा निराधार। धारा चलै, धुकारा चलै। महादेव दीया कारा चलै। जमालां देया नाग देवता जह्‌र वसैहर, तेरे सते ते निर्विष। गूगे छत्रिया, तेरे सते ते निर्विष।

विधि––पहले उक्त मन्त्र को किसी सिद्ध मुहूर्त में एक हजार बार 'जप' कर जागृत करे। फिर जब किसी घाव या फोड़े में शोथ या सूजन आ जाए, उस समय काली भेड़ की ऊन का डोरा लेकर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए एक गाँठ लगाए। इस तरह सात गाँठ लगा कर ऊन के डोरे को रोगी को पहना दे। इससे रोगी को तुरन्त पीड़ा से राहत मिलती है और घाव भी सूखने लगता है।

(१४) नाहरसिंह वीर का मन्त्र

नाहरसिंह वीर, बड़ा अलबेला। दूध-पूत का चेला। नाच नचाए अकेला। सत की मुँगरी, सत का कड़ा। जहाँ सिमरूँ, वहाँ नाहरसिंह वीर हाजिर खड़ा। नाहरसिंह वीर! आ। मेरा काम बना। मेरा काम न करे, तो माता नाहरी का चूसया दूध हराम करे। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। चले मन्त्र, ईश्वरो बाचा।

विधि—४१ दिन तक नित्य प्रातः तथा रात्रि, दोनों समय एक-एक माला उक्त मन्त्र का 'जप' करे। 'जप' मालती या चम्पा के वृक्ष के नीचे बैठ कर करे। जल, गन्ध, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य हलुवा

चढ़ाए। कच्चे सूत का यज्ञोपवीत वृक्ष को बाँधे। ४१ दिन के अन्दर नाहरसिंह वीर दर्शन देते हैं।

(१५) बालक के रोने पर मन्त्र

डायन मोर, जादू-बाण। चौंक उठे बालक के प्राण। रोए बालक फक्का-फाड़। चीखे मार करे चीत्कार। दोहाई कामाक्षा देवी की, तुझे शङ्कर की आन। ॐ नमः रुद्राय। ॐ नमः कामाक्षा-देव्यै ह्लीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

विधि—पहले उक्त मन्त्र की एक माला 'जप' कर मन्त्र को जागृत करें। फिर जब किसी का बालक अकारण रोता हो, तो झाड़ू का तिल्ला लेकर उससे झाड़े। बाद में तिल्ले को जला दें। बालक के ठीक होने पर, बालक के अभिभावक भगवान् के नाम पर बच्चों को मिठाई बाँटें।

(१६) रक्षा का मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। वज्र का कोट, वज्र की वाड़। वज्र छायों दसों द्वार। जो करे वज्र को घाओ। उलट वज्र ताहि को खाओ। मेरे मन-तन हरि वसो। श्रीरामचन्द्र जी रखया करो। नाल करे हनुमन्त। लक्ष्मण जती की कार। शत्रु को आवे हार। श्री रामाय नमः।

विधि—उक्त मन्त्र का दस हजार 'जप' करे। मछलियों को आटा डालें। बच्चों को श्रीराम और हनुमान जी के नाम का प्रसाद बाँटें। इस मन्त्र से विभूति, गण्डा इत्यादि बनाकर देने से आभिचारिक प्रयोगों से रक्षा होती है।

(१७) बच्चों के सूखा-रोग का मन्त्र

कराहंगिए सुकरांहागिए, शुक्रे दिएं। भैणे शुक्रें आयां, शुक्रें जायां। झाड़ी झम्वी पाई। कोरिया मल्लिया, सट्टी सतां समुद्रां पार। महादेव का वचन फुरे।

विधि—उक्त मन्त्र का एक हजार जप शुक्ल-पक्ष के किसी शुक्रवार की रात्रि में करे। फिर सूखा रोग-ग्रस्त बच्चे को शुक्रवार सुबह नीम की टहनी या मोर-पंख से झाड़े।

(१८) शास्त्रार्थ-विजय-मन्त्र

ॐ आदेश, गुरु जी को आदेश। आशा-मनसा मन में वसे। घी-सिन्दूर, मस्तक चढ़े। इस मन्त्र को हनुमान वीर करे। भैरों गाजी गज्जे। मैनूं लाज लगाए। तो माता अञ्जनी की दुहाई। राजा रामचन्द्र की आन। लक्ष्मण जती की आन।

विधि—उक्त मन्त्र को दस हजार बार 'जप' कर सिद्ध कर ले। फिर गाय के घी में सिन्दूर अपने मस्तक में इस मन्त्र को पढ़कर लगाए। सिन्दूर लगाकर शास्त्रार्थ आदि में सम्मिलित होने पर विजय होगी।

टिप्पणी—उपर्युक्त सभी मन्त्र मुझे समय-समय पर गुणी जनों ने बताए हैं। ये सभी मन्त्र सुपरीक्षित हैं। इनसे विभिन्न व्यक्तियों ने समय-समय पर 'प्रयोग' करके लाभ उठाया है। 'चण्डी'-पत्रिका के पाठकों के हितार्थ तथा इन प्रयोगों को सुरक्षित करने के उद्देश्य से ये सङ्कलित करके 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के सम्पादक महोदय के पास प्रेषित किए गए हैं।

कठिन शब्दों के अर्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
किवाड़ा	दरवाजा	साध	सिद्ध पुरुष
सौंगली	सांकल	ताकी	खिड़की
छायों	छाया करना	गड़वां	लोटा
गुरु देवदत्त	स्वामी दत्तात्रेय	जोद्धा	योद्धा
अगुम	पूर्व	हक्का	आवाज पर
पिण्ड	शरीर	गनिहर	क्रोधी
खिन्न	पल-पल में	दूजी	दूसरी
ढूके	आए	तीजी	तीसरी
डार	समूह	राखा	रखबाला
थाईं	जगह	गुरयाई	गुरु-गद्दी
समेर	सुमेरु पर्वत	कुण्ठ	कोने
जित्थु	वहाँ	अप्पो आप	अपने आप
पौण	हवा	माई गौरजा	माँ पार्वती

शव्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
वेटड़ी	बेटी/पुत्री	मुंगरी	मूसल
वूंजा	बावन (५२)	कराहंगी	कष्ट देनेवाली
सेविए	सेवा करें	सुकराहंगी	सुख देनेवाली
कम्भ्र	कम	भैंण	बहन
वासता	दुहाई	सट्टी	फेंकना
जमदूत	यमदूत	गज्जे	बहुत जोर से बोलना
कामणी	कामुक स्त्री		
दुद्धी	स्तन	मल्लीः	मिट्टी के बर्तन
वलद	बैन	का	मिट्टी का ढक्कन
कज्जलियाँ	कजरारी	झाड़ी झम्बी	ठीक से झाड़ना
आखीं	आँखें	रखया	रक्ष
वसैहर	विष	सता	सात
सुक्के	सूखे	ठाकां	झाड़ना इन्कार करना
देवदत्त दातार	स्वामी दत्तात्रेय		



तीन अनुभूत शाबर-प्रयोग

प्रेषक : श्री रामाशङ्कर शर्मा
रतनगढ़, जि० चुरू (राजस्थान)

(१) दर्शन हेतु श्री काली मन्त्र

डण्ड भुज-डण्ड, प्रचण्ड नो खण्ड। प्रगट देवि, तुहि झुण्डन के झुण्ड। खगर दिखा खप्पर लियां, खड़ी कालका। तागड़दे मस्तङ्ग, तिलक मागरदे मस्तङ्ग। चोला जरी का, फागड़ दीफू, गले फुल-माल, जय जय जयन्त। जय आदि-शक्ति। जय कालका खपर-धनी। जय मचकुट छन्दनी देव। जय-जय महिरा, जय मरदिनी। जय-जय चुण्ड-मुण्ड भण्डासुर-खण्डनी, जय रक्त-बीज बिडाल-बिहण्डनी। जय निशुम्भ को दलनी, जय शिव राजेश्वरी। अमृत-यज्ञ धागी-धृट, दृवड़ दृवड़नी। बड़ रवि डर-डरनी ॐ ॐ ॐ॥

विधि—नवरात्रों (चैत्र व आश्विन) में प्रतिपदा से नवमी तक घृत का दीपक प्रज्वलित रखते हुए अगर-बत्ती जलाकर प्रातः-सायं उक्त मन्त्र का ४०-४० 'जप' करे। कम-ज्यादा न करे। जगदम्बा के दर्शन होते हैं।

(२) शीघ्र धन-प्राप्ति के लिए

ॐ नमः कर घोर - रूपिणि स्वाहा।

विधि—उक्त मन्त्र का जप प्रातः ११ माला देवी के किसी सिद्ध स्थान या नित्य-पूजन - स्थान पर करे। रात्रि में १०८ मिट्टी के दाने लेकर किसी कुएँ पर तथा सिद्ध-स्थान या नित्य-पूजन-स्थान की तरफ मुख करके दायाँ पैर कुएँ में लटकाकर व बाँएँ पैर को दाएँ पैर पर रखकर बैठे। प्रति-जप के साथ एक-एक करके १०८ मिट्टी के दाने कुएँ में डाले। ग्यारह दिन तक इसी प्रकार करे। यह प्रयोग शीघ्र आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए है।

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

दुर्लभ शावर-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री दीपकनाथ एम० नाथ जी
मालीया हाटीना, जूनागढ़-३६२२४५ (गुजरात)

(१) अघोर-साधन मन्त्र

ॐ गुरुजी चण्ड पड़े, तो धरती लाजे। हाड गले, तो गोरख लाजे। हंस उड़े, तो नूरी-जन लाजे। परले जाय, तो सत्-गुरु लाजे। जाळ कु - रखे ? काळ कु भखे ? अपनी काया आप रखे। आदकां अलीक, पवन की भट्ठी। माता कुँवारी, पिता जती। जलहु बाळा, उलट अलील। पळी काया, राज-हंस परम-हंस पाया। लो मेलो, लो मेलो। बजर-बजर में पानी, गुँजत अलील। गुपत जुपत दो वाणी। आद की जोत, नाद की काया। नाद-बून्द से अघोर पाया। अघोर बीज-मन्त्र जपो जाप।

ॐ गुरुजी अघोर-अघोर महा-अघोर। माता तो पिता अघोर। बहन तो भाई अघोर। गुरु तो चेला अघोर। देवळ तो मस्जीद अघोर। मुल्ला की बाँग अघोर। काजी का कुरान अघोर। ब्रह्मा का वेद अघोर। नाद अघोर, बीन्द अघोर। शङ्ख अघोर, शङ्खान अघोर, रूप अघोर। चन्द्र अघोर, सुरज अघोर। नव लख तारा अघोर। अढार भार, वनस्पति अघोर। पूर्व अघोर, पश्चिम अघोर। उत्तर अघोर, दक्षिण अघोर। बजर मेरी काया अघोर। अमास की रात अघोर। पेला तो पलक अघोर। दुजा क्रोध अघोर। त्रीजा तो त्रण भुवन अघोर। चोथा तो चार वेद अघोर। पाँच पाँच पाण्डव अघोर। छट्ठा छ दर्शन अघोर। सातमा तो सात सागर अघोर। आठमा तो आठ कुळ-पर्वत अघोर। नवमा तो नव-नाथ अघोर। दशमा तो दश अवतार अघोर। अगियारा तो रुद्र अघोर। बारा तो बार पन्थ अघोर। तेरा तो तिलक अघोर। चौंदा तो भुवन अघोर। पंदरा तो तिथी अघोर। सोला तो सोळ कळा अघोर। सतरा तो सिता अघोर। अढारा तो अढार भार वनस्पति अघोर। ओगणीसा तो काळ अघोर। वीसा तो विष अघोर। एकवीसा तो ब्रह्माण्ड अघोर।

कहे अलखजी, सुणे पार्वतीजी। अवतार लेकर अघोर में अघोर मीलाया, नाभी में वसे मुळ त्रीगुटी वसे गुणेश। बजरी जरे, बजरी जरे, जरगीए काम-क्रोध। पाँच नाद की मुद्रा जरे। पेरु बजरङ्ग लँगोट काया का पारा ना जरे। सिद्धो कबी न आवे। जम की चोट। चन्दा घर चड़े, सुरज घर मीले। सो जोगी एक दिन में एक सो आठ जपे। काटा काटे नहीं। जलाया जले नहीं। डुबाया डुबे नहीं। जमीन गाळ दे, तो उलटा होकर निकल जाए। सुखा दे रस्सी, पे तो हरा हो जाय। अघोर मन्त्र-जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में बेठ महादेव जी ने पार्वती को सुनाया। जपन्ते कपन्ते मोक्ष पावन्ते। ॐ नमः शिवाय।

विधि—उक्त मन्त्र एक ही दिन में एक सौ आठ बार जपना होता है। शिव-रात्रि, कृष्णा चतुर्दशी (काली चौदस) की रात को १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। फिर प्रयोग करने में एक बार मन्त्र पढ़-कर जल को फूँक मारे। इस पानी को पीने से पूर्ण रक्षा होती है। यह अनुभूत सिद्ध प्रयोग है।

(२) हझरत भरने का मन्त्र

ॐ नमः उमा महेश गणेश, गुरु, ब्रह्मा, विष्णु फणीश। विष्णु-रूप हिये धरु धरु-धरु-धरु शिवजी को ध्यान। हझरत कुरु नमः, हझरत कुरु नमः, हझरत कुरु नमः।

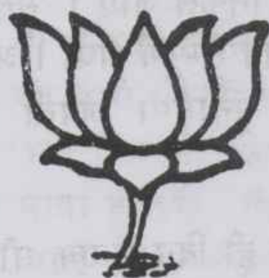
विधि—चन्द्र और सूर्य-ग्रहण, काली चौदस के दिन १००८ बार जपे। धूप-दीप, नैवेद्य धरे। चमेली के तेल का दीपक जलाकर उससे काजल बनाए और वह काजल, जब हझरत भरना हो, तब आँखों में लगाए। यह मन्त्र जपकर जो भी प्रश्न बालक से पूछोगे, उसका वह सही उत्तर देगा।

(३) मूठ लौटाने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश। चण्डी चण्डी, तो उपर चण्डी आकर मूठ करे नव-खण्डी। चकर उपर चकर धरूँ। चार चकर ले कहाँ धरूँ ? अग्या-रीओ को साचे मेरे साथ का। को साची, तो मूठ फिराऊँ तीन सो

साठ। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। सत्य गुरु का मन्त्र साचा।

विधि—देवी के मन्दिर में या अपने घर में ४१ दिनों तक प्रतिदिन १०८ बार जपे। अन्तिम दिन नैवेद्य धरे, जिससे मन्त्र सिद्ध होता है। प्रयोग के समय मन्त्र जपते हुए उड़द के सात दाने रोगी के ऊपर से उतार कर फेंक दे, तो उसे आराम हो जाएगा।



(पृष्ठ ४५ का शेष)

(३) श्री भैरव मन्त्र

ॐ नमो भैंरूनाथ, काली का पुत्र! हाजिर होके, तुम मेरा कारज करो तुरत। कमर बिराज मस्तङ्गा लँगोट, घूँघर-माल। हाथ बिराज डमरू खप्पर त्रिशूल। मस्तक बिराज तिलक सिन्दूर। शीश बिराज जटा-जूट, गल बिराज नोद जनेऊ। ॐ नमो भैंरूनाथ, काली का पुत्र! हाजिर होके तुम मेरा कारज करो तुरत। नित उठ करो आदेश-आदेश।

विधि—पञ्चोपचार से पूजन। रविवार से शुरू करके इक्कीस दिन तक मृत्तिका की मणियों की माला से नित्य अट्ठाइस जप करे। भोग में गुड़ व तेल का शीरा तथा उड़द का दही-बड़ा चढ़ाए और पूजा-जप से उठकर उसे काले श्वान को खिलाए। यह प्रयोग किसी अटके हुए कार्य में सफलता-प्राप्ति हेतु है।

सूचना—उक्त तीनों प्रयोग मेरे मित्र श्री द्वारकाप्रसाद जी मालपुरिया वैद्य, शास्त्री-नगर, रतनगढ़, जिला चुरू (राजस्थान) से प्राप्त हैं तथा उनके द्वारा अनुभूत हैं। विधि स्पष्ट है। फिर भी यदि किसी प्रकार का स्पष्टीकरण आवश्यक हो, तो उन्हीं से सम्पर्क करें।



दुर्लभ शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री प्रदीपकुमार नन्दगोपाल व्यास
कोट मुहल्ला, डीडवाना (राजस्थान)

१. भूत-बाधा-नाशक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमो भूत - नायक ! समस्त भुवन-भूतारि साधय, भूतारि साधय हुं हुं हुं ॥

विधि—मन्त्र को पर्व या ग्रहण में सिद्ध करे। मयूर-पङ्ख से झाड़ दे, तो भूत भाग जाएगा।

२. नृसिंह रक्षा-मन्त्र

ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्य-कशिपु-वक्ष-स्थल-विदारणाय त्रिभुवन-व्यापकाय भूत-प्रेत-पिशाच-शाकिनी कीलोन्मूलनास्तम्भोद्भव-समस्त-दोषान् हन हन, सर सर, चल चल, कम्प कम्प, मन्थ मन्थ, हुं फट् फट् फट्, ठः ठः, महा-रुद्रो जापयति स्वाहा ॥

विधि—उक्त मन्त्र को पढ़कर मयूर - पङ्ख से झाड़ दे, तो भूत निकल जाएगा।

३. भूत बुलवाने (भाषण कराने) का मन्त्र

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय कलि कलि ताक्ष्याय रौद्र-दंष्ट्र-कराल-वक्त्राय त्रिनयन-भूषिताय धग-धगित-पिशङ्ग-ललाट-नेत्राय तीव्र-कोपा-नलायामित - तेजसे पाश-शूल-खट्वाङ्ग-डमरुक-धनुर्बाण-मुद्गर - भय-दण्ड-त्रास-मुद्रा-व्यग्र-दश-दोर्दण्ड-मण्डिताय कपिल - जटा-जूट-कूटार्द्ध-चन्द्र-धारिणे भस्म-राग-रञ्जित-विग्रहाय उग्र-फणि-पति-घटा-घोष-मण्डित-कण्ठ-देशाय जय जय, भूत डामरेश ! आत्म-रूपं दर्शय दर्शय, नृत्यय नृत्यय, सर सर, बल बल, पाशेन बन्ध बन्ध, हुङ्कारेण त्रासय त्रासय, वज्र-दण्डेन हन हन, निशित-खड्गेन छिन्धि छिन्धि, शूलाग्रेण भिन्धि भिन्धि, मुग्दरेण चूर्णय चूर्णय, सर्व-ग्रहाणां आवेशय आवेशय।

विधि—उक्त मन्त्र से गाय के घृत में गूगल मिला कर, जिसे भूत लगा हो, उसके पास धूप दे और इसी मन्त्र से उड़द को अभि-

मन्त्रित कर, उस पर फेंकते जाओ, तो वह बोलने लगेगा। तब उससे जो कुछ वृत्तान्त पूछना हो, वह पूछ लो और फिर पूर्वोक्त मन्त्र से उसे निकाल दो।

४. भूत-बाधा-नाशक अञ्जन तथा नास

लहसुन के रस में हींग पीसकर नाक में सुँघाओ अथवा नेत्रों में अञ्जन लगाओ, तो भूत भाग जाएगा।

भूत-बाधा-नाशक तन्त्र

८ तुलसी के पत्र, ८ काली मिर्च और सहदेई की जड़ रविवार के दिन पवित्र होकर लो। इन तीनों को एकत्र कर कण्ठ में बाँध दो, तो भूत दूर हो जाएगा।

५. भूतोन्मादादि-यत्न

भूतोन्मादादि के यत्न करनेवाले को चाहिए कि पवित्र होकर अपने शरीर की रक्षा नारायण-कवच, अन्य कवच या शरीर-रक्षा के मन्त्र-स्तोत्रादि से करे।

(१) काली मिर्च, पिप्पली, सैंधा-नमक और गोरोचन को महीन पीसकर मधु के सम्पर्क से अञ्जन लगाए, तो भूत-बाधा दूर हो।

(२) ज्वर के प्रकार में 'भूत-ज्वर' पर जो नृसिंह जी का दिव्य मन्त्र लिखा है, उसका उपयोग करे, तो भूतोन्माद दूर होगा।

(३) भूतादि के उन्माद दूर करने के लिए 'उड्डीश तन्त्र' में बताया साबरी मन्त्र-यन्त्र :

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय, घोर-रौद्र-महिषासुर-रूपाय, त्रैलोक्य-डम्बराय, रौद्र-क्षेत्रपालाय, ह्रों ह्रों, क्रीं क्रीं क्रीमिति ताड़य ताड़य, मोहय मोहय, द्रम्भि द्रम्भि, क्षोभय क्षोभय, आभि आभि, साधय साधय, ह्रीं हृदये, आं शक्तये, प्रीतीं ललाटे, बन्धय बन्धय, ह्रीं हृदये स्तम्भय स्तम्भय, किलि किलि, ईं ह्रीं, डाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय, शाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय, भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय, अप्रभूति अदूरि स्वाहा। राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय, ब्रह्म-राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय, आकाशं प्रच्छादय प्रच्छादय, सिंहनी-पुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय, एते डाकिनी-ग्रहं साधय साधय, शाकिनी-ग्रहं साधय साधय, अनेन मन्त्रेण

डाकिनी - शाकिनी-भूत-प्रेत-पिशाचादि-ऐकाहिक - द्वयाहिक-त्र्याहिक, चातुर्थिक - पञ्चक-वातिक-पैत्तिक-श्लैष्मिक-सन्निपात-केशरी-डाकिनी-ग्रहादि मुञ्च मुञ्च स्वाहा। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ॥

विधि—उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए मयूर-पङ्ख या लोहे की किसी वस्तु तथा छप्पर के तिनके से २१ बार झाड़ दे, तो भूतादि के समस्त उन्माद दूर होंगे।

६. डाकिनी-शाकिनी को भाषण कराने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु कूं। ॐ नमो जय जय नृसिंह। तीन लोक, चौदह भुवन में हाथ चाबि और ओठ चाबि। नयन लाल-लाल। सर्व-वैरि पछाड़ मार। भक्तन का प्राण राख। आदेश-आदेश पुरुष को ॥

विधि– रोगी के सम्मुख बैठकर उक्त मन्त्र को पढ़े और इसी मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित कर उसे पिलाए, तो डाकिनी-शाकिनी आदि तत्क्षण मुख से बोलने लगेंगी।

७. डाकिनी आदि को शरीर में बुलाने का मन्त्र

ॐ नमो चढ़ो-चढ़ो शूर - वीर ! धरती चढ़, पाताल चढ़, पग पाताली चढ़। कौन-कौन बीर चढ़ै ? हनुमान वीर चढ़े। धरती चढ़, पग पानी चढ़, एड़ी चढ़ चढ़, मुखे चढ़ चढ़, पिण्डी चढ़ चढ़, गोड़े चढ़ चढ़, जाँघे चढ़ चढ़; कटि चढ़ चढ़, पेट चढ़, पेट से धरन चढ़, धरन से पसलियों चढ़, पसलियों से हिये चढ़, हिये से छाती चढ़, छाती से काँधे चढ़, काँधे से कण्ठ चढ़, कण्ठ से मुख चढ़, मुख से जिह्वा चढ़, जिह्वा से कर्ण चढ़, कर्ण से आँखों चढ़, आँखों से ललाट चढ़, ललाट से शीश चढ़, शीश से कपाल चढ़, कपाल से चोटी चढ़। हनुमान, नारसिंह, करवा रक्त्या चला वीर, समद वीर, अगिया वीर, सन्ता वीर– ये वीर चढ़े ॥

विधि—उक्त मन्त्र से डाकिनी आदि को बुलवाओ (बकुराओ)। उस रोगी के शरीर में आकर भाषण करने लगे, तब उससे इच्छित वार्त्ता पूछ लो।

८. डाकिनी को चोट लगाने का मन्त्र

ॐ नमो महा-काय-योगिनी, योगिनी पार-शाकिनी, कल्प-वृक्षाय, दृष्टि-योगिनी, सिद्धि-रुद्राय, काल-दम्भेन साधय साधय, मारय मारय, चूरय चूरय, अपहर शाकिनी स-परिवारं नमः। ॐ ठं छः, ॐ ह्रीं छः, ह्रों ह्रों, फट् स्वाहा ॥

विधि— उक्त मन्त्र से सात बार गूगल को अभिमन्त्रित कर, उखली में डालकर, मूसल से कूटे, तो वह चोट डाकिनी को लगे। इसी मन्त्र से उस्तरा (छुरा) लेकर अपना घुटना मूड़े, तो डाकिनी का शिर मुण्डा हो जाएगा। इसी मन्त्र से उड़द के दाने अभिमन्त्रित करके फेंके, तो डाकिनी आकर नाचने-कूदने लगेगी और इसी मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित कर नेत्रों में लगाए, तो डाकिनी बोलने लगेगी।

९. डाकिनी-दोष दूर होने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। डाकिनी सिहारी किन्ने मारी ? यती हनुमान ने मारी। कहाँ जाय दबकी ? किनोने देखी ? यती हनुमान ने देखी। सातवें पाताल गई। सातवें पाताल से कौन पकड़ लाया ? यती हनुमन्त पकड़ लाया। यती हनुमन्त वीर पकड़ लाय के, एक ताल दे एक कोठा तोड़ा। दो ताल दे दो कोठे तोड़े। तीन ताल दे तीन कोठे तोड़े। चार ताल दे चार कोठे तोड़े। पाँच ताल दे पाँच कोठे तोड़े। छः ताल दे छः कोठे तोड़े। सातवाँ कोठा खोल देखे, तो कौन-कौन खड़े हैं ? डाकिनी, सिहारी, भूत-प्रेत चले। यती हनुमन्त तेरे झाड़े से चले। ॐ नमो आदेश गुरु को। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ॥

विधि—उक्त मन्त्र उच्चारण करते मयूर-पङ्ख तथा लोहे के चाकू आदि से झाड़ दे, तो डाकिनी आदि का दोष (बाधा) दूर हो।

१०. डाकिनी-शाकिनी आदि दूर करने के यन्त्र

प्रथम यन्त्र

१/८	६६	१	५
७	६	७	६
१		०।०	०।०
८	१	ऽ	४०

द्वितीय यन्त्र

७	७	८	८
ऽ	६	६	५
४	॥।	ऽ	११
७।	६	१॥	.॥।.

विधि – प्रथम यन्त्र को भोज - पत्रादि पर लिखे, बालक के गले में बाँधे और द्वितीय यन्त्र को भी लिखकर शुद्ध जल में घोलकर पिलाए, तो डाकिनी-शाकिनी दूर होकर बालक दोष से छूट जाएगा।

११. प्रत्यक्ष दर्शक (हाजरायत) मन्त्र

ॐ नमः कामाख्यायै, सर्व-सिद्धिदायै ! अमुक कर्म कुरु कुरु स्वाहा। अस्य मन्त्रस्य बाह्लीक ऋषिः। जगती च्छन्दः। कामाख्या देवता।

कर-न्यास – ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। कामाख्यायै तर्जनीभ्यां नमः स्वाहा। सर्व-सिद्धिदायै मध्यमाभ्यां वषट्। 'अमुक कर्म' अनामिकाभ्यां हुम्। कुरु कुरु कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् स्वाहा। करतल-कर-पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

हृदयादि-न्यास –ॐ नमो हृदयाय। कामाख्यायै शिरसे स्वाहा। सर्व-सिद्धिदायै शिखायै वषट्। 'अमुक कर्म' कवचाय हुं। कुरु कुरु नेत्र-त्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान –योनि-मात्र-शरीरा या, कुंगु-वासिनि कामदा।
रजस्वला महा-तेजा, ध्येया कामाक्षि सर्वदा॥

उक्त मन्त्र का एक सहस्र जप करे। गूगल और गुलतुर्रे के फूल की ७०० आहुति दे और मैनफल की राख (भस्म) को रुई में मिला कर बत्ती बना ले। यह बत्ती तेल भरे दीपक में जलाकर उस दीपक की पूजा करे। तदनन्तर ८ या १० वर्ष की अवस्था, उत्तम-वर्ण, देव-गणवाले पवित्र बालक (लड़का या लड़की) को दीपक के सम्मुख बिठाकर स्वयं भी पवित्रता से मन्त्र-जप के सङ्कल्प का जल मैनफल पर डाल दे। दीपक के सम्मुख इस मन्त्र को लिखकर निम्नलिखित यन्त्र की पूजा करे। बालक की हथेली में वह दिखाकर मैनफल की राख तेल में मिला कर बालक की हथेली पर लगा दे और पूजित यन्त्र उसके गले या दक्षिण हस्त में बाँधकर उससे कहे कि 'तू अपनी हथेली में देखता जा।' फिर उससे जो कुछ पूछना है, वह पूछे। वह अपनी हथेली में देखकर जो कुछ कहे, उसे सत्य जाने। वह बालक सब बतलएगा। तदनन्तर उक्त मन्त्र के दशांश हवन, तद्-दशांश तर्पण, तद्-दशांश मार्जन और तद्-दशांश ब्राह्मण-भोजन कराए। यह

विधि 'उड्डीश तन्त्र' में लिखी है। यही यन्त्र बालक के हाथ में बाँधना चाहिए—

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४

[स्व. वैद्य पं. ज्ञारसीराम जी पुत्र श्री बलदेव जी कामठी निवासी के द्वारा लिखित 'नूतनामृत-सागर' से, जो सम्वत् १९६७ में खेमराज श्रीकृष्णदास मुम्बई से प्रकाशित हुआ। 'हाजरात प्रयोग' के विनियोग अपने स्तर पर बना लें। सभी प्रयोगों में कोई भूल लगे, तो सुधार कर लें।—प्रेषक]

१२. अर्द्धाव-भेद शिरो-रोग-नाशक सिद्ध मन्त्र

(१) ॐ नमो कालिका देवी। किल-किले वासी, मृधोभ्यासे। हनुमन्त वीर हाँक मारे। आधा शीशी, अध-कपाली नाशे। जा-जा री-पापिनी, जा-जा री हत्यारी ! न जावे, तो तेरे गुरु की आज्ञा, हनुमन्त वीर की आज्ञा, गरुड़-पङ्ख की आज्ञा। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वर उवाच।

विधि– उक्त मन्त्र का जप कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन यथा-शक्ति करे, तो सदा सिद्ध रहेगा। फिर इस मन्त्र से मस्तक को २१ बार अभिमन्त्रित कर शनैः शनैः फूँक देते जाओ, तो 'आधा शीशी' शिर-पीड़ा निश्चय अच्छी हो जाएगी।

(२) ॐ नमो आधा-शीशी ह्रं हूङ्कारी, प्रहर - पछारी, मुख मूँद गाटले मारी। अमुकारे शीश रहे। मुख महेश्वर की आज्ञा फुरे। ओं ठं ठं स्वाहा॥

विधि– उक्त मन्त्र को पहले सिद्ध कर ले। फिर २१ बार पढ़कर मस्तक पर अँगुली फेरे, तो आधा शीशी की पीड़ा दूर हो जाएगी॥

१३. बिच्छू-डङ्क उतारने का मन्त्र

ॐ आदित्य-रथ-वेगेन, विष्णोर्बाहु-बलेन च। सुपर्ण-पक्ष - पातेन, भूम्यां गच्छ महा-विष ! क्रोपक्ष - योग - पदाज्ञा, श्रीशिवोत्तम-प्रभु-पदाज्ञा—भूम्यां गच्छ महा-विष !

विधि—उक्त मन्त्र से डङ्क पर २१ बार झाड़ दे, तो बिच्छू का डङ्क उतर जाएगा।

१४. रक्षात्मक शाबर-मन्त्र

ॐ नृसिंह नाम निर्मला। घट में राखो पूर, प्रतिज्ञा प्रह्लाद तणी, सङ्कट पड़ा हुजूर। उगन्ता सूरा, भागन्ता भूरा। माथे फूला, हन्दा भारा। जहाँ जावै, जहाँ मीत हमारा। सत्य की नाव, नरसिंह खेवे। दुष्ट के लात, बजरङ्ग देवे। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॐ॥

विधि—रात्रि में दीपक की साक्षी में एक माला, अधिक में यथा-शक्ति जप करे। इस जप से सब प्रकार के सङ्कटों से रक्षा होती है।

१५. हाजरात बङ्गाली मन्त्र

काली माता, काली माता, ओतो ते।

विधि—नित्य प्रातः स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहन कर, अगर-बत्ती धूप कर पूर्व दिशा की ओर मुँह करके प्रति-दिन ३ माला जप, २१ दिनों तक करके, मन्त्र सिद्ध कर ले। कपूर का काजल बनाकर, उसमें तिल्ली का तेल मिलकर हाजरात चढ़ाएँ। अगर-बत्ती धूप करे। इस हाजरात में काली मां अथवा हनुमान जी का आवाहन होता है।

सुबह आठ बजे से पहले इस कार्य को करना सुगम रहेगा। ८ या ६ वर्षीय शुद्ध बालक के दाहिने हाथ के अँगूठे पर स्याही लगा दे। बालक स्नान किया हुआ, साफ शुद्ध वस्त्र पहनकर पवित्र हो। स्याही में लड़के को देखने को कहे। लड़का जब यह कहे कि मुँह दीखने लगा है, तो कहा जाय कि दो आदमी आएँ। वे आ जाएँ, तब दो और। फिर दो और। उसके बाद फिर दो और। इस प्रकार, आठ आदमी आ जाएं, तो उनसे कहे कि झाड़ूवाले को बुलाएँ। झाड़ू लगने के बाद भिश्ती बुलाओ। पानी छिड़कवाओ। फर्शवाले से फर्श मँगवाओ, बिछवाओ। उसके बाद तख्त व दो कुर्सियाँ लाने को कहो, जिन पर गद्दी बिछवाओ। इतना होने के पश्चात् कहा जाए कि मां काली से या हनुमान जी से जाकर निवेदन करो कि आपका भक्त (साधक अपना नाम कहे) आपको याद कर रहा है। अपने सहायक (मुन्शी) को साथ लेकर पधारें। जब वे आकर कुर्सी पर बैठ जाएँ, तो उनके सहायक

(मुन्शी जी) से कहें कि आप मां काली या हनुमान जी (दोनों में से जिसे बुलाया है) से निवेदन करें कि आपका भक्त (साधक का नाम) आपसे अर्जकर यह प्रश्न पूछना चाहता है। लड़के को उत्तर मिलेगा। यदि लड़का उत्तर न समझ पाए, तो मुन्शी जी से कहें कि हमें भाषा में लिखकर समझाएँ या दिखाएँ। तो सहायक मुन्शी लड़के को इच्छित भाषा में लिखकर दिखला देंगे—समझा देंगे। कार्य पूरा होने पर देवता को अपने स्थान पर वापस जाने का निवेदन करे। उन्हें कष्ट देने के लिए क्षमा माँगे।

१६. धन-प्राप्ति का यन्त्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५

उक्त १६० कोठे का 'यन्त्र' लगभग अढ़ाई सौ वर्ष पहले की लिखी पुस्तक से प्राप्त हुआ है। दबाने या मोड़ने से पन्ना टूटता है, इसका ध्यान रखते हुए अनुमान से अङ्क लिखे गए हैं। पुस्तक में उक्त प्रकार के १११ यन्त्र नित्य लिखना है। इस सम्बन्ध में मेरा सुझाव है कि नित्य ३३३ भी लिख सकते हैं क्योंकि कुल 'यन्त्र' एक लाख पच्चीस हजार लिखने हैं। साधक को सुविधा हो, कम समय लगे, इसीलिए उक्त सुझाव दिया है।

अलग-अलग कागज पर 'यन्त्र' बनाने हैं। बाद में प्रत्येक लिखे 'यन्त्र' के कागज को गेहूँ के आटे में लपेटकर, गोलियाँ बनवा ले। यदि साधक नित्य १११ यन्त्र लिखे, तो १११ गेहूँ के आटे के साथ गोली बनाए। इस प्रकार १११ गोलियाँ मछलियों को डाले। यदि साधक ३३३ 'यन्त्र' लिखता है, तो आटे के साथ ३३३ गोलियाँ

बनाकर मछलियों को डाले । सवा लक्ष लिखने के पश्चात 'यन्त्र' सिद्ध होगा।

विधि—'यन्त्र' के सिद्ध हो जाने के बाद रात्रि में सोते समय एक 'यन्त्र' लिखकर सिरहाने रखे, तो पाँच रुपए मिलेंगे—यह सत्य अनुभूत है। ऐसा लिखा हुआ है। मेरे विचार से उस समय रुपया चाँदी का होता था, तो उसका प्रति-रूप फल मिलना चाहिए, परन्तु सिद्धि मिलने पर साधक को चाहिए कि वह लोभ न करे। उपयोगिता के अनुसार ही प्रयोग में लाए व गृह-कार्य या सत्-कर्म में ही खर्च करे। गलत कार्य में खर्च न करे अन्यथा सिद्धि जा सकती है।

'योगी-सम्प्रदाय मन्त्रावली' में शाबर-मन्त्र

१७. अलील गायत्री

ॐ नमो आदेश, गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी कहाँ थे पवन, कहाँ थे पानी ? कहाँ थे नर, कहाँ थे नारी ? कहाँ ब्रह्मा, कहाँ विष्णु, कहाँ शिव-शक्ति की परनाली ? कहाँ चन्द्रमा थे, कहाँ सूर्य थे ? कहाँ नव लक्ष तारा ? जब हुई अगम वेद की बानी। ॐ गुरुजी असंख युग बरते अलील रहते, उपजे आपो आपना-सुभय-धाम कमल में विश्राम। आसन से उपजी मनसा धाती, जिसने तीन रतन पैदा किए—ब्रह्मा, विष्णु, महेश। अलख का मेला हुआ, रत्न मिल सिद्धो कियो अलील का जाप। माता क्वारी (कँवारी), पिता यती। लोह में काया, वज्र में पाणी। अनन्त कोटि सिद्धों के मनमानी। झड़े पारा, पीवे योगी। पानी उल्टे पल्टे काया, सिद्धों का मार्ग साधक ने पाया। ॐ गुरुजी प्रथम अलील नाम, द्वितीये उदक नाम, तृतीय तुरे नाम, चतुर्थे जल नाम, पाँचवें पाणी नाम, षष्ठे ब्रह्म नाम, सप्तमें अचल नाम, अष्टमे आब नाम, नवमे नीर नाम, दशमें वीर्य नाम, एकादशे रुद्र नाम, द्वादशे जिन्दा पीर बोलिए। ॐ गुरुजी जल जागो, थल जागो—जागो जलाबिम्ब की काया। अलील पुरुषजी तुम जागो, शरण तुम्हारी आया। इतनी अलील गायत्री का जो प्राणी सिमरण करे, सो प्राणी भव-सागर तरे। अलील गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी आदेश, आदेश।

१८. रुद्राक्ष का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। मुखे ब्रह्मा, मध्ये विष्णु, लिङ्ग नाम महेश्वरं। सर्व-देब नमस्कारं, रुद्राक्षाय नमो नमः। गगन-मण्डल में धुन्धुकार, पाताल निरञ्जन निराकार। निराकार में चर्ण-पादुका, चर्ण - पादुका में पिण्डी। पिण्डी में वासुक, वासुक में कामुक, कामुक में कूर्म, कूर्म में मरी। मरी में नाग-फणी। अलख पुरुष ने बैल के सींग पर राई ठहराई। धीरज-धर्म की धूनी जमाई। वहाँ पर रुद्राक्ष, सुमेर-पर्वत पर जमाइए। उसमें से फूटे छैः डाली। एक गया पूर्व, एक गया दक्षिण। एक गया पश्चिम, एक गया उत्तर। एक गया आकाश, एक गया पाताल। उसमें लाग्या एक-मुखी रुद्राक्ष, श्रीरुद्र पर चढ़ाइए। श्री ॐ-कार आदि-नाथ जी को, दो-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए चन्द्र-सूर्य को, तीन-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए तीन लोकों को, चतुर्मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए चार वेदों को, पाँच-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए पाँच पाण्डवों को, छै-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए षट्-दर्शन को, सात-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए (सप्त ऋषि) सप्त-समुद्रों को, अष्ट-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए अष्ट - कुली नागों को, नव-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए नव नाथों को, दश-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए दश अवतारों को, ग्यारह - मुखी रुद्रा क्ष चढ़ाइए ग्यारह रुद्र को, द्वादश - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए बारह (सूर्य) पन्थ को, तेरह-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए तेतीस कोटि देवी-देवताओं को, चौदह-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए चौदह भुवन (चौदह रत्न) को, पन्द्रह-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए पन्द्रह तिथियों को, सोलह - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए सोलह शृङ्गार को, सतरह - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए श्री सीता माता को, अठारह - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए अठारह भार वनस्पति (अठारह पुराण) को, उन्नीस - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए अलख पुरुष को, बीस-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए विष्णु भगवान् को, इक्कीस - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए इक्कीस ब्रह्माण्ड शिव को, निरमुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए निराकार को। इतना रुद्राक्ष-मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी आदेश, आदेश।

१९. आसन लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी सत्य की धरती, सत्य का आकाश। सत्य की माला, सत्य की जाप। सत्य का आसन,

सत्य का पूत। आसन बैठे, योगी अवधूत। आसन ब्रह्मा, आसन इन्द्र। आसन बैठे, हरि गोविन्द। आसन बैठ के जपिए जाप, कोटि जन्म के उतरन्ते पाप। आसन बैठे, सिंहासन बैठे। बैठे गिरि की छाया। पाँच तत्त्व ले आसन पर बैठे, सत्-गुरु सत्य का शब्द सुनाया। बिना मन्त्र आसन लगाय, सो योगी नरक को जाय। मन्त्र पढ़ आसन लगाय, सो योगी अमर-पुर जाय। नाथजी गुरुजी आदेश, आदेश।

२०. जाप की कार देने का मन्त्र

सत नमो आदेश, गुरुजी आदेश। ॐ गुरुजी सत्य का आसन, सत्य का सूत। सत्य का बाना, रक्षा करे श्री शम्भू यती गुरु गोरक्षनाथ जी अवधूत। सोहं कण्ठी, सोहं माला। सोहं सुरति ध्यान लगाना। श्री नाथजी गुरुजी आदेश, आदेश।

२१. कुबेर-भण्डार गायत्री

सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी, ॐ सोहं आकाश। डिब्बी पाताल काठी, धरती का चूल्हा करूँ, आकाश को ठाया। नव-नाथ सिद्धों ने बैठकर भण्डार किया। चढ़े डिब्बी, उतरे रिद्धि-सिद्धि काली। पीली शिर जटा माई, पार्वती का उपदेश। शिव-मुख आवे, शक्ति-मुख जावे। शक्ति-मुख आवे, शिव-मुख जावे। हाथ खड़ग तूत की माला, जाप जपे श्री सुरियाबाला। ऋद्धि पुरे हर, धृत पूरे गणेश। अलील पूरे ब्रह्मा, माया पूरे महा-काली, हीरा पूरे हिङ्गलाज। नव-खण्ड में जोत जगाई। ऋद्धि लावो भण्डारी भाई। ऋद्धि खूटे, सदा-शिव का जड़ाव टूटे। ऋद्धि खूटे, माता सीता सतवन्ती का सत्य छूटे। ऋद्धि खूटे, माता पार्वती का कङ्गन टूटे। ऋद्धि खूटे, मान-धान का मान टूटे। चन्द्र-सूर्य दो देव साखी, इतना कूबेर - भण्डार-गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया। नाथजी गुरुजी आदेश, आदेश।

२२. भैरो चोला-जाप

सत नमो आदेश, गुरू जी को आदेश। ॐ गुरू जी ! तुम भैरों काली का पूत, सदा रहे मतवाला। चढ़े तेल - सिन्दूर, गल फूलों की माला। जिस किसी पर सङ्कट पड़े, जो सुमिरे तुम्हें उसकी रक्षा करे। तुम हो रक्ष-पाल। भरी कटोरी तेल की, धन्य तुम्हारा प्रताप। काल भैरो, अकाल भैरो, लाल भैरों, जल-भैरों, थल-भैरो, बाल - भैरो,

आकाश भैरो, क्षेत्र-पाल भैरो, सदा रहो कृपाल। भैरो चोला-जाप-सम्पूर्ण भया। नाथ जी, गुरू जी आदेश आदेश आदेश।

२३. भैरो इष्ट-जञ्जीरा

सत नमो आदेश, गुरू को आदेश। ॐ गुरू जी, चण्डी-चण्डी, तो प्रचण्डी। अलावल फिरे नव - खण्डी। तीर बान्धू, तरवार बान्धू। बीस कोस पर बान्धू वीर। चक्र ऊपर चक्र चले, भैरो बली के आगे धरे। छल चले, बल चले, तब जानवा काल भैरों! तेरा रूप। कौन भैरों? आदि भैरो, युगादि भैरो, त्रिकाल भैरो। कामरू देश रोला मचावे, हिन्दू का जाया मुसलमान का मुर्दा फाड़-फाड़ बगाया। जिस माता का दूध पिया, सो माता की रक्षा करना। अवधू खप्पर में खाय, मसान में लेटे। काल भैरों की पूजा कौन मेटे? राजा मेटे, राज-पाट से जाय। योगी मेटे, योग-ध्यान से जाय। प्रजा मेटे, दूध-पूत से जाय। लेना भैरों, लौंग सुपारी। कड़वा प्याला, भेंट तुम्हारी। हाथ काती मोढ़े मढ़ा, जहाँ सिमरूँ तहाँ हाजिर खड़ा। श्री नाथ जी, गुरू जी आदेश आदेश।

२४. गोरक्ष-कुण्डली

सत नमो आदेश, गुरू जी को आदेश। ॐ गुरू जी! प्रथमे बोलिए श्री शम्भू यति गुरु गोरक्षनाथ जी देव, विष्णु देव, महेश्वर देव, ब्रह्मा देव, शक्ति देव, आकाशे-पाताले शेष अनन्त कोटि सिद्धों पर कर लो आदेश। आरती दर्शन नाम तुम्हारे, आप तरे जगत को तारे। ज्ञान खड़ग ले काल को संहारे। जब हाँक पै डङ्का बजावे, खेचरी - भूचरी, देव और दानव मारे, कार के मारे। गोरक्ष जपे, अनघड़ काया। सोलह कला, सम्पूर्ण माला। घट - पिण्ड की रक्षा करे, श्री शम्भू यति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। अमडो धो, धो पीवो खीर। अमर हो देही, वज्र हो शरीर। ॐ गुरु जी! मीन राय को कर लो आदेश, गौरी-शङ्कर को कर लो आदेश।

पश्चिम देश आई उमा देवी, आगे बैठी मीन मत्स्येन्द्र गोरक्ष योगी। जब देवी ने किया आदेश, नहीं लिया आदेश, नहीं दिया उपदेश। जब देवी क्रोध में आई, खञ्जर बाँध हृदय को गई, नाथ निरञ्जन सही कर लई। नवमे द्वारे ताड़ी लाई, दशवें ब्रह्म अग्नि

पर जाली, जलने लगी, तब खड़ी पछताई। राख-राख हो श्री शम्भू यति गुरु गोरक्षनाथ जी राख। तुम्हारी हूँगी चेली, जगत की हूँगी माई। माई कहे तो भोचर-सा तन का कपट-हार श्रृङ्गार गहूँ। शिव-शङ्कर स्वामी जी, तुम्हारा कौन-सा विचार है? हम कुछ नहीं जाने देवी जी! अपना गढ़ा, आप ही जानो। ईश्वर-गौरां दोनों मिला करें। हाटी ईश्वर जो गए सातवें पाताल, बाले गोरक्ष का अनन्त अपार। काया न माया, न छाया कलि विच कहा है।

हे देवी जी! हमको गुरु-मुख दिया, तुमको ब्रह्मा-मुख दिया, अनन्त-कोटि सिद्धों में दण्ड-कमण्डल-मीन, आप ही छू गुरु-मुखी चीन्ह। घटो-घटो गोरक्ष काचे कूँवे भरे न पानी। घटो-घटो गोरक्ष जागन्ता, पाप के पहिरे सोवन्ता, धर्म के पहिरे जागन्ता। घटो-घटो गोरक्ष भए उदास, पण्डित के हम गुरू, मूर्ख के हम दास। घटो - घटो गोरक्ष योग पुकारे, अमर धन कोई विरला ही जाने। इन देव अकील गुफा आए, सूर्य-सरीखा तपी नहीं, चन्द्रमा-सरीखा शीतल नहीं। इन्द्र राजा बरसन्ते, धर्ती माता सुफल फलन्ते। शिव-दर्शनी योगी, नित्य उठ ध्यान धरन्ते।

पद्म-शिला पर बैठकर श्री शम्भू यति गुरु गोरक्षनाथ जी! दुष्ट को, मुष्ट को, जादू को, टोना को, मढ़ी को, मसान को, भूत को, प्रेत को, बान्ध-बान्ध, जल्दी बान्ध, रोम-रोम में बाँध, बाल-बाल में बाँध, नव-नाड़ी, बहत्तर कोठा को बाँध, जल्दी बाँध, भस्म कर डाल। नहीं बाँधे, तो माता की दूध की धारा हराम। नाथ जी, गुरू जी आदेश, आदेश।

२५. गोरक्ष-कील

सत नमो आदेश, गुरू जी को आदेश। ॐ गुरू जी! गङ्गा-यमुना-सरस्वती, तहाँ बसन्ते योगी। गऊ दुहन्ते, ग्वाला गाव सङ्ग तरन्ते। त्रिया पुजन्ते, त्रिया मोहन्ते। तांके पीछे, मोया मसान जागे। मनसा-वाचा, कील किलन्ता। तांके आगे ऐसी चले, गर गले, घराट चले, कुम्भकर्ण का चक्र चले, द्रोपदी का खप्पर चले, परशुराम का परशा चले, शेषनाग की खोपड़ी चले। नागा वागा चोरटा, तीनों दीने फाह। ईश्वर महादेव का वाचा फुरे। गोरक्ष चले, गोदावरी आञ्चल माँगी भिक्षा, श्री नाथ जी को आदेश, आदेश ॥१

ॐ गुरू जी ! चोर का घर कीलूँ, सर्प का दर कीलूँ, शेषनाग की खोपड़ी कीलूँ, शेर का मुख कीलूँ, डाकिनी-शाकिनी का खड़ग कीलूँ, बैठती का दाड़ कीलूँ, भाजती का पुष्टा कीलूँ, छल कीलूँ, छिद्र कीलूँ, भूत कीलूँ, प्रेत कीलूँ, बिछू का डङ्क कीलूँ, सर्प का डङ्क कीलूँ, ताप तेईया-चौथईया कीलूँ, कलेजे की पीड़ा कीलूँ, आधे सिर का दर्द कीलूँ, दुष्ट कीलूँ, मुष्ट कीलूँ। सार की कोठी, वज्र का ताला, जहाँ बसे जीव हमारा। रक्षा करे श्री शम्भू यती, गुरु गोरक्षनाथ जी बाला ॥२

ॐ गुरू जी ! शीश-कील, कलेजा कीलूँ। पिण्ड-प्राण पीछे से कीलूँ। काया का सरजनहार, नृसिंह वीर कीलूँ। अञ्जनी का पुत्र वीर बङ्क-नाथ कीलूँ, सिरहाने की सूई कीलूँ। उठता अजयपाल कीलूँ। बैठा वीर बैताल कीलूँ। अष्ट कुली नाग कीलूँ। तीन कुली बिच्छू कीलूँ। वार-परवार कीलूँ। पाँव की किसमिस मिर्चा कीलूँ। मढ़ी कीलूँ। मसान कीलूँ। चौंसठ-योगिनी कीलूँ। बावन वीर कीलूँ। खेलता क्षेत्र-पाल कीलूँ। आकाश उड़ती कूंज कीलूँ। महिषासुर दानव को कीलूँ। इतनी मेरी गुरू जी की भक्ति की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वर वाचा। देखो सिद्धो गोरक्ष-कील की तमाशा ॥३

ॐ गुरू जी ! घट-पिण्ड कीलूँ। मच्छर डाँस कीलूँ। सन्ध्या-बत्ती को कीलूँ। उड़ते के पङ्ख कीलूँ। राजा कीलूँ, प्रजा कीलूँ और कीलूँ संसार। कथ के मथ के आकाश की कड़कड़ाहट कीलूँ। पाताल का वासुकिनाग कीलूँ। अङ्ग-सङ्ग गोरक्ष कीलूँ। साखियारी सत्य सवारी, चले पीर दस्तगीर सर्वर-धाम। अली अहमद फातमा धरे, श्री नाथ जी का ध्यान। मक्का कीलूँ, मदीना कीलूँ और कीलूँ हिन्दू का द्वार। देव-परी जड़ साँगले कीलूँ, कीलूँ आई बला ॥४

ॐ गुरू जी ! गोरक्ष चले मक्के - मदीने, ले मुसल्ला हाथ। कवर कीलूँ, गुस्तान कीलूँ, फिर-फिर करे आकाशा जरे। श्री नाथ जी का नाम, दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी की आन। कलयुग में सिद्धो गोरक्ष-कील प्रमाण। ॐ फट् स्वाहा। श्री नाथ जी गुरू जी आदेश, आदेश ॥५

२६. पैर बन्ध-करण तथा अधूरो जातो थम्भै मन्त्र

मन्त्र—ॐ गीर चले, पर्वत चले। लङ्का छोड़, विभीक्षण चले। गुरू का मन्त्र चले। इन्द्र की इन्द्राणी चले। काली का माई चले।

चोसठ जोगणी गुप्त चले। चोसठ जोगणी परगट चले। आरे दीठ, कन दीठ, खाण्डे की धार चले। कुहाडे की मूंद चले। मेरी आस, गुरू के पास। ॐ बङ्कार आदेश, नारसिंह वीर चीर, आटी चीर। चाटी रक्त बहे, चोरासी घाटी टपके। रक्त भीजे, चीर बन्धी। बन्धी रे बाबा नारसिंह वीर। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि——शनिवार से प्रारम्भ करे। अपना शुभ चन्द्रमा देखकर २१ माला नित्य जपे। पहले हनुमान जी का पूजन कर नारियल बँधारे (तोड़े), गुगल-धूप करे। शनिवार-मङ्गलवार को रोट बनाकर भोग दे। बाद में साधक उस रोट को खा लेवे। २१ वें दिन 'जप' के पश्चात् एक नारियल बधारे (फोड़े)।

मन्त्र सिद्ध होने के पश्चात् जब काम में लेना हो, तब पाँच रङ्ग का रेशम का डोरा बनाए। डोरे में सात गाँठ लगाए। गाँठ लगाते समय उक्त मन्त्र पढ़कर फूँके। बाद में २१ बार मन्त्र पढ़कर इक्कीस फूँक देकर, रोगी स्त्री की कमर पर रेशमी डोरे को बाँध दे। यदि रक्त बहता होगा और गर्भ अधूरा रहता होगा, तो रक्त का बहना रुकेगा और गर्भ ठहर जाएगा।



नाथ-पन्थी मन्त्रों की विशेष बातें

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री अनिल गोविन्द बोकिल

१८/१३-गोंधलेनगर, हडपसर, पुणे-४११०२८

'नाथ - पन्थ' में गुरु का बड़ा महत्त्व है। ईश्वर से भी ज्यादा महत्ता 'गुरु' को दी जाती है। सक्षम गुरु से पहले 'दीक्षा' लेना और बाद में 'साधना' करना उचित माना जाता है। किसी कारण - वश यदि गुरु की प्राप्ति नहीं हो पाती और मन्त्र-साधना में रुचि है, तो 'मन्त्र' सिद्ध करने के विधान का पूर्ण पालन आवश्यक है।

दीक्षा के बिना साबर-मन्त्र-सिद्धि-विधान

(१) 'सूर्य-ग्रहण' या 'चन्द्र-ग्रहण' में इच्छित मन्त्र का १०८ जप करना चाहिए। इससे मन्त्र-शुद्धि तथा ग्रहण-सिद्धि होती है। बाद में विधि-वत् मन्त्र-साधना की जा सकती है।

(२) किसी भी रविवार के दिन एक कांस्य - पात्र (लोटा, बर्तन आदि) को धोकर उसे भस्म - स्नान कराए। एक आसन पर उसे स्थापित करे। उसके सामने 'तेल' का दीपक जलाकर इच्छित मन्त्र का १०८ 'जप' करे। 'जप' पूर्ण होने के बाद हाथ में सफेद खैर की लकड़ी (१ या २ फीट की) लेकर उक्त कांस्य-पात्र पर यह कहते हुए आघात करे—

"हे मन्त्र ! सिद्धो भवति"

ऐसा ६ बार करे। फिर दूसरे दिन सोमवार को—(१) दाल-भात, (२) सब्जी-चपाती और उड़द के ६ बड़े 'नैवेद्य' के रूप में लेकर किसी भैरव-मन्दिर में जाकर पूजा करे और 'नैवेद्य' अर्पित करे। नारियल की 'बलि' देकर उसका 'प्रसाद' बच्चों को खिलाए। 'प्रसाद' स्वयं न खाए, न ही घर में किसी अन्य को दे। इस विधि से इच्छित मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में नियमित रूप से 'साधना' करनी चाहिए। तभी पूर्ण सिद्धि मिलेगी।

विशेष—एक रविवार को एक ही मन्त्र की सिद्धि करनी चाहिए।

२. नाथ-पन्थीय माला-संस्कार

'जप'-माला साधारणतया 'रुद्राक्ष' की ही ली जाती है। 'माला' को पहले गो-घृत लगाकर दो दिन रखे। फिर गाय का दूध, गाय का गोबर, गो-मूत्र और शुद्ध जल से उसे धोकर उपयोग में लाए। 'नाथ-पन्थ' में यही 'माला'-संस्कार है।

३. 'मन्त्र'-जप के विषय में आवश्यक बातें

(१) मन्त्र का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। (२) जैसा विधान मिले, उसी प्रकार उसका पालन करना चाहिए। (३) भाषा की दृष्टि से मन्त्र में फेर-फार कदापि न करे। (४) कुछ मन्त्र हिन्दी में, कुछ मराठी में, कुछ मन्त्रों की भाषा मिश्रित है। उसे उसी प्रकार ग्रहण करना चाहिए। (५) बहुत से 'साबर मन्त्र' अर्थ-हीन होते हैं, परन्तु उसमें बीजाक्षर ऐसे क्रम से जुड़े होते हैं कि अर्थ-हीन होने पर भी वे इच्छित कार्य पूर्ण करते हैं। (६) रजस्वला, अशौच आदि यदि घर में है, तो मन्त्र उन दिनों में बन्द रखना चाहिए। (७) गुरु से 'दीक्षा'-प्राप्ति का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।

४. दैवी कृपा-प्राप्ति के लिए

(१) पहले कोई भी एक पुराना मन्दिर—भग्न मन्दिर ढूँढ़े, जहाँ कोई न जाता हो। फिर किसी भी दिन वहाँ जाकर देवता को अक्षत आदि देकर निमन्त्रण दे दें कि आपकी कृपा के लिए मैं यहाँ ४० दिन नित्य आऊँगा।

दूसरे दिन से रात को १२ बजे वहाँ जाकर यथा-शक्ति पूजन, नैवेद्य आदि करें। समय चूकना नहीं चाहिए। इस प्रकार ४० दिन करें। मन में कुछ भी अपेक्षा न रखें। इस विधि से जो चमत्कार होगा, उसे स्वयं ही अनुभव कर ले। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि ४० दिन की विधि पूर्ण करना कठिन है क्योंकि इन दिनों में एक-से-एक विघ्न सामने आएँगे, जिससे देवता के पास पहुँच न सकें। जैसे कि रास्ते में विषधर भयभीत करेगा, डरावनी आवाजें सुनाई

देंगी। यही तो साधक की परीक्षा होती है। इन पर विजय पाकर ही विधि पूर्ण करनी होती है।

साधक की योग्यतानुसार उसे किस प्रकार से लाभ होगा, इस विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता।

(२) नाथ-पन्थ में 'श्रीनव-नाथ-भक्ति-सार' 'श्रीनाथ-लीलामृत' आदि अनेक ग्रन्थ हैं। किसी भी ग्रन्थ का विधि-पूर्वक और सङ्कल्प-पूर्वक पारायण रात्रि में करें। निर्बल - हृदय साधक इस साधना को न अपनाएँ। पारायण - काल में किसी भी दशा में आसन छोड़कर भागना नहीं चाहिए। साथ ही पारायण-पूर्ति तक 'अखण्ड' दीप होना चाहिए। 'दीप' बुझना नहीं चाहिए - इस बात का विशेष ध्यान रहे। साधन - काल में भयावह दृश्य दिखते हैं, यह सत्य है। साधना पूर्ण होने के बाद 'नव - नाथ' की पूर्ण कृपा होती है। उनके दर्शन भी हो सकते हैं।

५. सङ्कट-मुक्ति के लिए

यदि कोई भयङ्कर आपत्ति आई हो; अपनी तरफ से सभी प्रकार के प्रयत्न निष्फल हो चुके हों; आपत्ति से छुटकारा न मिल रहा हो-- ऐसी स्थिति में निम्न साधना लगातार ८ दिन नित्य निश्चित समय पर करें—

ब्राह्म मुहूर्त पर स्नान करके, गीले कपड़े पहने ही अपने इष्ट नाथ का 'नाम-मन्त्र' १०८ बार खड़े - खड़े ही जपे। जैसे—(१) ॐ चैतन्य-गोरक्षनाथाय नमः, (२) ॐ चैतन्य-कानिफ-नाथाय नमः, (३) ॐ चैतन्य-मच्छिन्द्रनाथाय नमः··· आदि।

८ दिन एक - भुक्त रहे, कान्दा (प्याज), लहसुन आदि तामस आहार न करें। ८ ही दिनों में सङ्कट - मुक्ति की राह दिखती है, या अचानक रूप से कुछ-न-कुछ होकर सङ्कट सौम्य होने लगता है—दूर होता जाता है।



नाथ-पन्थीय शाबर-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री अनिल गोविन्द बोकिल

श्रीहनुमान सिद्ध 'शाबर'-प्रयोग

कुछ नाथ-पन्थी प्रयोगों की विधि अत्यन्त गूढ़ होती है। मन्त्र तो ठीक होते हैं, विधान भी स्पष्ट होते हैं, परन्तु प्रमुख अङ्ग (मूल-तत्त्व) का ज्ञान न होने के कारण सिद्धि नहीं मिलती। इस प्रकार के मन्त्र-प्रयोग गुरु - कृपा से ही प्राप्त हो सकते हैं। फिर भी कुछ गोपनीय प्रयोग सज्जन-हितार्थ यहाँ प्रस्तुत हैं। ये मन्त्र श्रीहनुमान् जी की कृपा-प्राप्ति के लिए अनुभूत हैं। 'साबर मन्त्र' होने पर भी इनके प्रमुख अङ्ग श्रीराम-मन्त्र ही हैं। अत: श्रीराम - मन्त्रों की साधना करने के बाद ही ये हनुमान्-मन्त्र प्रयोग करने पर फल-प्रद होते हैं। इसी से क्रम-पूर्वक विधान निम्न प्रकार है—

'श्रीराम-रक्षा-स्तोत्र' केवल स्तोत्र नहीं है, अपितु दिब्य महा-मन्त्र है। सर्व-प्रथम इस महा-मन्त्र की साधना करनी चाहिए।

'वासन्तिक' या 'शारदीय' नवरात्र में नित्य ब्राह्म-मुहूर्त पर स्नान करके गीले कपड़े पहने हुए ही श्रीराम-पञ्चायतन (चित्र या मूर्ति) की पूजा करें। फिर सिद्धि के लिए सङ्कल्प कर उक्त स्तोत्र के ११ पाठ करें। उच्चारण शुद्ध होना चाहिए और स्तोत्र कण्ठस्थ होना चाहिए। घर में किसी प्रकार का अशौच, अपवित्रता आदि न हो। इस प्रकार 'श्रीराम-रक्षा-स्तोत्र की सिद्धि करने के बाद श्रीहनुमान् के 'शाबर-मन्त्र' प्रभावी होंगे। यहाँ १९९०-९१ के आस-पास की एक सत्य कथा का उल्लेख करना उचित होगा—

मेरे एक साधक मित्र हनुमान् - सिद्धि करना चाहते थे। मुझसे उन्होंने विधान पूछे। मैंने सहर्ष बता दिए। उन्होंने 'श्रीराम-रक्षा-स्तोत्र' का पाठ तो किया, परन्तु ८ वें दिन घर में अशौच की स्थिति हो गई। फिर भी वे पाठ करते रहे। १०वें दिन जब वे घर के बाहर

आए, तो आकाश-गमन करते हुए— श्रीहनुमान्‌जी के दिव्य दर्शन उन्हें हुए, परन्तु अशौच के कारण सम्वाद नहीं हो सका।

'राम-रक्षा-स्तोत्र' की सिद्धि के बाद हनुमान्-जागृति और अन्य अनेक प्रकार के 'शाबर-मन्त्र-प्रयोग' सहज ही सफल हो जाएँगे। कुछ अनुभूत प्रयोग निम्न प्रकार हैं—

मन्त्र १—"ॐ हं हनुमते नमः। हनुमान पुकारो, वज्र फोड़ू। सात समुन्दर लङ्का तोड़ू। कहाँ है लङ्का, कहाँ है आकाश? आकाश बैठे, आकाश फाटे। धरतरी बैठे, धरतरी फाटे। श्रीराम सरीखा मित्र कीजे, पाँच पान का बिडा दीजे। श्रीहनुमन्त जी हमारे काजकू आईजे, हमारे काज सिद्ध कीजे। चलो मन्त्र, भगवन्त वाच्छा पुरी छू॥"

मन्त्र २—"ॐ बजरू साले, बजरू साले! उन पर खैर। उनकी गाता जोगण-सरी, उनका बेटा आम्या वेजाळ। आदेश नमो गुरुकू। नाव-नाथ चौऱ्यांशी सिद्धनकू। अलटन भेद, पलटन काया। हाक मारता, हनुमान आया। गाँजता आया, घोरता आया, बिजली कवाडे फोडता आया, लोहे के चने चाबता आया। तेल सिन्दूर, लाल लँगोट। अपनी पूजा लेना। श्याम सवेरे हमकू दरशन देना। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। वाच्छा पुरी छू॥"

विधि—किसी भी शुभ मुहूर्त पर साधना प्रारम्भ की जा सकती है। यह उपासना २१ दिन की है। इसके लिए ब्राह्म-मुहूर्त उत्तम है। या दिन में किसी भी निश्चित समय पर भी की जा सकती है। २१ दिन तक समय बदलना नहीं चाहिए।

जिस दिन से उपासना करनी है, उस दिन वीर-हनुमान् के मन्दिर में जाकर तेल, सिन्दूर, दही-भात नैवेद्य, पुष्प, अगर-बत्ती, दीप आदि द्वारा श्रीहनुमान् जी का यथा-शक्ति भक्ति-पूर्वक पूजन करें।

कुछ अक्षत 'श्रीराम-रक्षा-स्तोत्र' द्वारा अभिमन्त्रित करके साथ में रखें। फिर 'साबर मन्त्र १' को पढ़कर एक अक्षत श्रीहनुमान् जी के चरणों पर रखें और मन्त्र - सिद्धि के लिए उनकी प्रार्थना करें। इस प्रकार २१ बार करें। यही विधि 'साबर मन्त्र २' के लिए भी अपनाएँ।

२१ दिनों तक उक्त प्रकार साधना करने से श्रीहनुमान् जी अत्यन्त विराट् रूप में दर्शन देते हैं। उनसे इच्छित वर माँग सकते हैं।

चेतावनी—(१) श्रीहनुमान् जी भय-दायक रूप में प्रत्यक्ष होते हैं। यदि भय को सहन न कर सकें, तो उक्त प्रयोग न करें।

(२) साधना-काल में ब्रह्मचर्य-पालन आवश्यक है।

(३) घर में अशौच हो, तो साधना कदापि न करें। 'रजस्वला' का बन्धन है।

(४) कुछ भी उत्पात हों, तो डरे नहीं। जैसे बड़े-बड़े वानर मन्दिर में जाने से रोकेंगे, मार्ग में सर्प दिखेंगे, भयङ्कर आबाजें सुनाई देंगी आदि।

मन्त्र ३—"बीर-सो-बीर लढे। बीर जे ठकनीर जन लढे। जोर मसली नारसींग धडक से लढे। हनुमान धुर पकड, पलक पछाड। मेरा बल वाचे, दुसरे का बलसरे करना। न करें, तो माता अञ्जनी का दूध हराम करे। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। वाञ्छा पुरी छू॥"

विधि—मन्त्र १ और २ के समान। २१ दिन पूरे करना। बाद में कुश्ती या सङ्घर्ष के समय केवल ३ बार मन्त्र उच्चारण करके कार्य करें। जीत ही होगी।

मन्त्र ४—"बावीस बीराचे लोह मारे। आम्या वेताल ! सुनो मेरी बात। बीर हनुमान रखे मेरी पाठ। हनुमान की चले सवारी। श्री कड-कडीत मन्त्र चले। पकड ले चुडेलीन को। आसान बाँधू, मसान बाँधू, साती आसन बाँधू। चौसष्ट जोगिनी बाँधू। चौंसष्ट योगिनी बाँधू। सात आसरा बाँधू। आठवा म्हशासूर बाँधू। नववा भिक्सन बाँधू। सब भुतावळ पलित बाँधू। चिश्चीवरील लावटीण बाँधू। झोटीन बाँध्। ना बाँधू, तो हनुमान गुरु की दुहाई। गुरु की शपथ, मेरी भगत। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।"

विधि—मन्त्र १ और २ के समान सिद्ध करें। बाद में प्रयोग करें। इस मन्त्र ४ के द्वारा अभिमन्त्रित विभूति लगाने से या जल पीने से या केवल उच्चारण से ही अभिचार, भूत-प्रेत-बाधा आदि

दूर होकर संरक्षण होता है। कम-से-कम ११ बार मन्त्र पढ़कर कोई भी वस्तु अभिमन्त्रित करें और प्रयोग में लाएँ।

मन्त्र ५—"उलटा बीर बजरङ्ग का पावकर, नींसम कवटाल खाय। बारा कोस आघाड - सम तेरा कोस। पिच्छाड-सम। आन पोहोंच रे उलटा, बीर बजरङ्ग का पाँव। जहाँ है, वहाँ से लाव। इस काया-पिण्ड के बालाकू नव-नाडी से, बहात्तर कोठडी से, रोम-रोम से, चाम-चाम से, गुद-गुद से, पकड के लाव। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।"

विधि—पहले किसी भी ग्रहण में १०८ बार जप कर उक्त मन्त्र को सिद्ध करें। श्रीहनुमान् जी की मूर्ति प्रतिमा ले आएँ। विधि-वत् प्राण-प्रतिष्ठा स्वतन्त्र कमरे में करें। फिर किसी भी शनिवार को दाहिने हाथ से कुएँ का पानी एक पात्र में ले आएँ। पात्र जमीन पर न रखें, हाथ में ही रखें। अब इस जल को, 'श्रीराम-रक्षा स्तोत्र' द्वारा अभिमन्त्रित करें। इस अभिमन्त्रित जल से मूर्ति को स्नान कराएँ। बाद में पात्र जमीन पर रखें।

फिर हलदी-कुंकुम, आक के फूल, शक्कर की नैवेद्य, सिन्दूर, उड़द के २१ दाने, अगर-बत्ती आदि उपचारों द्वारा पूजन करें। आटे का एक दिया बनाकर उसमें शुद्ध घी डालकर उसमें पाँच ज्योतियाँ जलाकर दिया प्रज्वलित करें। कपूर और गुग्गुल का धूप दें। सवा किलो आटे का रोट बनाकर उस पर यह दीपक रखें।

अब उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करें और घी + उड़द से १८ आहुतियाँ इसी मन्त्र से दें, फिर 'श्रीराम-रक्षा स्तोत्र' पढ़ें।

उक्त विधि से हनुमान् जी प्रत्यक्ष होते हैं तथा मनो-वाञ्छित फल देते हैं। यदि पहले शनिवार को श्रीहनुमान् जी प्रत्यक्ष नहीं हुए, तो यही विधि ५ शनिवार तक करें। वीर हनुमान् जी अवश्य प्रसन्न होते हैं। साधना-काल में ब्रह्मचर्य-पालन आवश्यक है। ग्रहण-सिद्धि अनिवार्य है। यह प्रयोग एकान्त में ही करें।

मन्त्र ६—"अरे अरे, अञ्जनी-कुमारा ! मार-मार, जाल-जाल, कोट-कोट, बन्द-बन्द। पूर्व बन्द, पश्चिम बन्द, उत्तर बन्द, दक्षिण बन्द, आकाश बन्द, पाताल बन्द, ताल के देव बन्द।"

विधि – पहले उक्त मन्त्र की ग्रहण सिद्धि करें। फिर श्रीहनुमान्-मन्दिर में जाकर यथा-शक्ति पूजन तथा १००० जप करके २१ प्रद-क्षिणा करें। नित्य ऐसा ही करें। कुछ ही दिनों में श्रीहनुमान् जी प्रसन्न होते हैं।

मन्त्र ७—"ॐ ओङ्कार सत्र मङ्गळवार, तेव्हां जन्मले ब्रीदवाद हनुमन्त। बिलखिला के पूत्र, जय हो पूत्र। अलख डोंगर मुद्गर पाणी, पाणी-पाणी मुख-चून पाणी। जेसा बीर श्रीरामचन्द्र जी का काज करें, वैसा ही काज मेरा ही कीजिए। अष्ट-भैरव की दूवाई।"

विधि—उक्त मन्त्र को १०८ वार नित्य जपें—४१ दिनों तक। इससे यह सिद्ध होता है। फिर किसी भी कार्य के लिए ११, २१ या १०८ बार, जैसी आवश्यकता हो, जप कर अभीष्ट - प्राप्ति के लिए मन्त्र-प्रयोग करें।

अन्य सिद्ध शाबर-प्रयोग

(१) मुद्रा-आकर्षण-प्रयोग

मन्त्र—"ओम् नमो आदेश गुरू का। भैरव - भैरव सुवर्ण-भैरव ! द्रव्य आन-आन। नाही आने, तो माता पार्वतीची आन, पिता महादेव की आन, मेरी आन, मेरे गुरू की आन। छू॥"

विधि—पहले निम्न प्रकार से मन्त्र सिद्ध करना चाहिए—श्मशान अथवा भैरव-मन्दिर में जाकर, दीपक जलाकर सामान्य पूजा कर 'रुद्राक्ष'-माला पर १००० मन्त्र-जप करे। मन्त्र-जप पूर्ण होने के बाद उड़द तथा शहद से जलती हुई चिता पर १०८ आहुतियाँ इसी मन्त्र से दे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में किसी भी दिन 'प्रयोग' कर सकते हैं।

प्रयोग—कोई भी एक प्रचलित सिक्का लेकर उसे कच्चे दूध से धोए। उसे अपने सामने रखकर उस पर कटोरा (भर्तरी) रखे। कटोरे (भर्तरी) पर अपना दाहिना हाथ रखकर सामने ऊद जलाकर मन्त्र-जप करे। इससे अपने सामने उसी प्रकार के सिक्के आते रहते हैं। मन्त्र - जप बन्द करने पर आकर्षण बन्द होता है। जितना आवश्यक है, उतना ही द्रव्य (मुद्रा) आकर्षण करना चाहिए। भर्तरी

याने कटोरा। यह एक प्रकार का समुद्र-फल है। नारियल-जैसा बड़ा होता है। उसके दो टुकड़े करने से दो भर्तरी बनते हैं।

(२) काम-देवता-सिद्धि

मन्त्र—"ओम् नमो आदेश गुरू का। कामदेव - कामदेव क्या करे ? तुम मेरे पास हाजिर होकर सब स्त्री - पुरुष को मेरे वश में करे। हर वक्त मेरे साथ रहे। मेरा कार्य करे। ऐसा न हो, तो महा-देव के नेत्र से भस्म हो जाए। आदेश गुरू महादेव का, मेरे गुरू का। छू ॥"

विधि—बसन्त - पञ्चमी से पाँच दिन तक नित्य १००० 'जप' रुद्राक्ष-माला पर करे। मन्त्र-जप, शिव-मन्दिर में ब्राह्म-मुहूर्त में करे। रात्रि में भी कर सकते हैं।

पाँचवें दिन भगवान् कामदेव प्रत्यक्ष होंगे। उनसे ३ बार वचन लेकर अदृश्य हो जाने की प्रार्थना करे।

उक्त 'मन्त्र' की सिद्धि से सभी प्रकार के वशीकरण-कार्य किए जा सकते हैं। पाप-पूर्ण, निन्दनीय तथा व्यभिचार-पूर्ण कार्य नहीं कराना चाहिए। बार-बार देवता को बुलाकर उसे कष्ट नहीं देना चाहिए। अत्यन्त आवश्यकता होने पर एकान्त में उसे मन्त्र द्वारा बुलाना चाहिए।

(३) अल्लाउद्दीन की चिराग-सिद्धि

मन्त्र—"जाग-जाग रे अल्लाउद्दीन के सैतान। ना जागे, तो तुझे माँ-बहिन को तीन सो तीन तलाख, पीर पैगम्बर की आन, मेरी आन, मेरे वस्ताद की आन।"

विधि यह साधना किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ की जा सकती है। पहले ताँबे या पीतल का एक छोटा दीपक (दिया) लेकर मुस्लिमों के कब्रिस्तान में जाएँ। सूर्यास्त के बाद ही (६ बजे) जाएँ। साथ में गुलाब, मोगरा आदि के सुगन्धित पुष्प, इत्र, शेरणी (बताशे) आदि रखें। फिर किसी भी कब्र के सामने बैठकर, उक्त वस्तुओं द्वारा पूजन कर 'प्रणाम' करके प्रार्थना करे—'मैं अल्लाउद्दीन चिराग सिद्ध कर रहा हूँ। इसमें आप सहयोग दें।"

अब मन्त्र - जप प्रारम्भ करे। नित्य ४० बार मन्त्र - जप करे। ऐसा ४० दिन करे। ४१ वें दिन फिर उसी समय जाकर यही विधि करे। ४१ वें दिन दीपक (चिराग) अपने आप प्रज्वलित होता है। यही सिद्धि - लक्षण है। बाद में राक्षस प्रत्यक्ष होगा। उससे अपने सभी कार्य तुरन्त करने का ३ बार वचन ले। राक्षस अदृश्य हो जाएगा। भविष्य में, चिराग को थोड़ा घिसने पर वह फिर से प्रत्यक्ष होगा और आज्ञा माँगेगा। उससे अपना कार्य करवा लें। अनुचित कर्म उससे कदापि न करवाएँ।

(४) हाजिरात-जिन्नात

मन्त्र "या यैय्यल अलअु ईन्नी कलकिया इलैलया किताबून करिम। ईन्न अुन्नहु मिन सुलैमाना मिन्न हु बिसमिल्लाहि रहिमाने रहिम ॥"

विधि– जब किसी गुरुवार को अमावास्या हो, तो शुक्रवार को प्रतिपदा के दिन चन्द्रोदय के बाद, गाँव के बाहर जाकर लोभान धूप जलाकर ५१ बार मन्त्र - जप करे। ऐसा ५-६ दिन करने से 'जिन' प्रत्यक्ष होता है। उससे ३ बार वचन लेकर अदृश्य करना। भविष्य में मन्त्र-जप द्वारा उसे बुलाकर मन-चाहा उचित कार्य सम्पन्न करा सकते हैं।

(५) भ० गहिनीनाथ-परम्परा के दो साबर-मन्त्र

मन्त्र (१)–"ॐ निरञ्जन जट - स्वाही तरङ्ग ह्लाम् ह्लीम् स्वाहा।"

मन्त्र (२)– "ॐ रां रा ऋतं रौभ्यं स्तौभ्यं रिष्टं तथा भगम्।
धियं च वर्धमानाय सूविर्याय नमो नमः ॥"

(रजस्वला-काल में इन मन्त्रों का प्रयोग न करे)

विधि– नित्य प्रातः-काल स्नान के बाद उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। ऐसा ८ दिन करने से मन्त्र सिद्ध होते हैं। बाद में नित्य २७ बार 'जप' करे। इससे सभी सङ्कट, क्लेश दूर होते हैं। अध्यात्म-मार्गी साधक को विविध अनुभूतियाँ होती हैं। साधना में साधक अग्र-सर होता रहता है। जीवन शान्ति-पूर्ण रहता है। एक अनुभव यहाँ उल्लेखनीय है। एक दिन मन्त्र-जप करते समय पूरा कमरा प्रकाश-

मय हो गया था। 'भगवान् गोरक्षनाथ अब प्रत्यक्ष होंगे, उनका तेज और दर्शन मुझसे सहन नहीं होगा'—इस भय से मैं कमरे के बाहर भाग आया था। बाद में मेरे गुरुदेव ने मुझे बहुत डाँटा कि 'सुनहरा मौका खो दिया।' ऐसे अनेक अनुभव हैं, गौण अनुभव तो आते ही हैं। इन्हीं मन्त्रों द्वारा (१०८ बार पढ़कर) विभूति करके पास रखे, तो अनुभव होते ही हैं। भय-मुक्ति होती है। सङ्कटों से छुटकारा मिलता है।

(६) अञ्जन-विधान

मन्त्र (१) देखने का मन्त्र—"ओम् नमो आदेश गुरू को। अञ्जन-अञ्जन महा-अञ्जन। यह अञ्जन किसने बनाया ? काली माता ने बनाया, पिता महादेव ने बनाया। बना के क्या किया ? मेरे आँखों में लगाया। आँखों में लगा के क्या देखा ? ब्रह्मा को देखा, विष्णु को देखा, महादेव को देखा, सारा त्रिभुवन देखा, तेहतीस कोटी देव देखा, दानव देखा, दैत्य देखा, म्हशासूर देखा, ब्रह्म-राक्षस देखा, झोटिङ्ग देखा, बारा सटव्या देखा, अठरा कोटी भुतावळ देखा, नव-नाग को देखा, अन्दर का देखा, बाहेर का देखा, भितर का देखा। जो मन चाहा, उसी को देखा। स्त्री-पुरुष को देखा, गण-गोत को देखा। दिखानेवाला कौन ? गुरू मच्छिन्द्रनाथ, गुरू गोरखनाथ। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरे मन्त्र, ईश्वरी वाचा। छू॥"

(२) बोलने का मन्त्र—"ओम् नमो आदेश गुरू को। माता सरस्वती ने मारली हाँक। हाँकेला ओ दिला। विचारले त्या शब्दाला उत्तर दिले। नाहीं दिले तर आन तुला गुरू मच्छिन्द्रनाथाची, गुरू गोरखनाथाची। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरे मन्त्र, ईश्वरी वाचा। छू॥"

विधि—उक्त दोनों मन्त्रों की सिद्धि पहले करनी चाहिए। सिद्धि करने के प्रकार—(१) ग्रहण-काल में या सिद्ध-योग में १०८ बार जप करे। (स्वरोदय का ज्ञान हो, तो अति उत्तम) या (२) २१ दिनों तक नित्य १०८ जप करे।

इससे मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं। फिर निम्न विधि से अञ्जन बनाना चाहिए।

अञ्जन बनाना—किसी भी पूर्णिमा या अमावास्या को शुद्ध घी (गो-घृत) के ९ दिए जलाएँ। उन सबका 'अञ्जन' अलग - अलग

तैयार होगा। वह सब इकट्ठा करके उस पर पूर्वोक्त पहला 'देखने का मन्त्र' १०६ बार पढ़े। 'अञ्जन' बनाने के लिए निम्न मुहूर्त उत्तम हैं—(१) ग्रहण-काल, (२) दशहरा, (३) लक्ष्मी-पूजन-दिवस

अञ्जन या तो स्वयं बनाएँ या कुँवारी कन्या से बनवाना अच्छा होता है। सबसे उत्तम और प्रभाव - शाली 'अञ्जन' बनाना हो, तो किसी युवा वेश्या द्वारा बनवा लें। पहले उसे स्नान द्वारा पवित्र होने को कहना, बाद में उससे 'अञ्जन' बनवा लेना। तब उस पर १०६ बार उक्त मन्त्र पढ़ना।

प्रयोग –आवश्यकता होने पर उक्त 'अञ्जन' आँखों में लगाकर मन्त्र पढ़कर, फूँक मारकर, सामने देखते रहें या किसी दीवार पर दृष्टि को स्थिर करें। दाहिने अँगूठे के नाखून पर 'अञ्जन' लगाकर भी यह प्रयोग हो सकता है।

ऐसा करने से जिसे भी चाहें, उसका ध्यान कर स्पष्ट रूप में सब कुछ–जो चाहेंगे, वह –प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगा। कुछ साधक गुप्त धन, ईश्वर-दर्शन, दूर की घटनाएँ, खोया हुआ व्यक्ति आदि देखना चाहते हैं। देख सकते हैं, किन्तु इस विधान का दुरुपयोग कदापि न करें। 'ईश्वर-दर्शन' करना हो, तो इष्ट के आवाहन से वह प्रत्यक्ष दर्शन देता है। 'गुप्त-धन' देखने के सम्बन्ध में सज्जन पाठकों को मेरी सलाह यही है कि 'गुप्त-धन' के पीछे न लगें क्योंकि ८०-६० प्रकार की शक्तियाँ उसकी रक्षक होती हैं। उनके द्वारा प्राण तक जा सकते हैं।

'गुप्त-धन' प्राप्त करने का विधान—'सर्वस्वी' अलग विद्या है। पहले सभी रक्षकों को नष्ट करना होता है। बाद में भी कुछ विधान पूर्ण करने होते हैं। तभी 'गुप्त-धन' सुरक्षित रूप से प्राप्त होता है।

'अञ्जन' द्वारा मन-चाहा देखा जा सकता है। इष्ट से बातचीत नहीं होती। इसके लिए दर्शन होने के बाद पूर्वोक्त दूसरा 'बोलने का मन्त्र' पढ़कर फूँक मारें, तो इष्ट से बातचीत भी होगी। स्वयं कानों में उत्तर मिलेंगे। मृतात्माओं से भी वातचीत हो सकती है। यदि किसी रिश्तेदार, मित्र आदि से बातचीत करनी हो, तो जब वह रात को सोता है, तब 'अञ्जन'-प्रयोग करना चाहिए। उस समय उसके अन्तर्मन द्वारा उत्तर मिल जाएँगे। जीवित व्यक्ति से इसी प्रकार से बातचीत करनी होगी।

(७) हनुमान जी द्वारा देखने का विधान

मन्त्र –"जाग रे जाग हनुमान बली, षांड पिडकी कर रखवाली। दोनों हाथ के बजावे टाली। दन्दी दुष्मान की तोड नली। ये दुख का निवारा करे हनुमान बली। आला आला हनुमन्ता, खांधावर भाले, दुरून उडाले जाबून कवलासात पडली, त्वांची मोड कम्बर, आ रे आ रे वीर हनुमन्ता, तुइया कपाली म्हशीचा टिला, तुमको नमती बुधकुमारा, या दुख-दरदाच्या भूत-पलिताच्या, जादू जंत्राच्या मारी मस्तकी खिला, आटा की सटा, खीव खीव चा वर ऊंता, गङ्गा-तीर जाचे हाड तुटो, महादेव का चक्र पडो, सुखदेव की पोथी पडो, भीम की गदा पडे, नारसिंग जसपाल, आव देखो तेरे मन्त्र की सङ्गत, गुरू की सङ्गत, मेरी भगत, ईश्वरी वाचा फुरे ॥"

विधि—शनिवार को श्रीहनुमान मन्दिर में जाए। श्रीहनुमान जी का पूजन कर ऊद (अगरबत्ती), कपूर, खारीक, सुपारी, ताम्बूल आदि नैवेद्य दे। सिन्दूर तथा तेल लगाए। सवा-पाव सेर (३१५-३२० ग्राम) का रोट 'नैवेद्य' में दे। फिर २१ बार मन्त्र-जप करे। रोट बाद में स्वयं खा ले। ऐसा करने से मन्त्र-सिद्धि होती है।

उपयोग—आवश्यकता पड़ने पर उक्त मन्त्र पढ़कर अपने करतल पर या पानी में या दूध में, आइने में, भस्म के रिङ्गण में, खाने के पान पर—फूँक मारने से मन-चाहा देखा जा सकता है। बातचीत के लिए क्रमाङ्क ६ में दिए गए 'बोलने के मन्त्र' का उपयोग करे।

(८) नाथ-पन्थी अस्त्र-विद्या

पूर्व-काल में अस्त्र-विद्या के प्रयोग होते थे। अब व्यक्ति इस पर विश्वास नहीं करते, परन्तु यह सत्य विद्या है और आज भी सुरक्षित है। अस्त्र की चरम सीमा 'मारण' ही है, अगर यह नहीं है, तो उसे अस्त्र कहना व्यर्थ है। फिर चाहे वह दरिद्रता को मारे या शत्रु को। मारण-प्रयोग देना उचित नहीं है क्योंकि उसके दुरुपयोग की अत्य-धिक सम्भावना है। 'दर्शन' और 'रक्षण' हेतु भी हम इस प्रयोग को अपना सकते हैं। यहाँ 'श्रीसुदर्शन - चक्र' का दर्शन - मन्त्र दिया जा रहा है।

'श्रीसुदर्शन-चक्र-दर्शन' का मन्त्र--"ॐ नमो सुदर्शन-चक्राय स्मरण-मात्रेण प्रकटय प्रकटय, त्वं स्वरूपं मम दर्शय दर्शय, मम सर्वत्र रक्षय रक्षय स्वाहा ॥"

विधि--'ग्रहण-काल' में १०८ 'जप' कर ग्रहण-सिद्धि करे। फिर किसी भी दिन, रात को १२ बजे के बाद भगवान् श्रीकृष्ण, शिव, विष्णु या नृसिह् मन्दिर में जाकर पूजन कर धूप जलाकर १०६ बार उक्त मन्त्र - जप करे। 'सुदर्शन - चक्र' का दर्शन हो जायगा। अगर उसका तेज सहन न हो, तो उसे नमस्कार कर रक्षण करने की प्रार्थना करे। 'नमस्कार' करने से वह लुप्त हो जाएगा। स्वयं की रक्षा सदैव होती रहेगी।

(६) वीर-जागृति

'नाथ - पन्थ' में वीर अपनी असाधारण शक्ति के कारण महत्त्व रखते हैं। प्रायः बहुत से कार्य वीर करा देता है। निम्न वीरों की जागृति इस विधि से की जाती है--

वीर	कार्य
(१) अबीर वीर	इत्र, हल्दी, कुंकुम आदि देता है।
(२) जादू वीर	कोई भी जादू-इन्द्रजाल का काम करता है।
(३) लंगडया वीर	किसी को भी लूला, लँगड़ा करता है।
(४) चन्द्रया वीर	किसी को भी पीड़ा देता है। सरक्षण भी करता है।
(५) काल्या वीर	कुश्ती में विजय देता है।
(६) कबल्या वीर	जानवरों का संरक्षण करता है।
(७) मोहन्या वीर	सम्मोहन के लिए।
(८) बावन्न (५२) वीर	सभी काम करते हैं।
(९) हनुमान वीर	सभी काम करता है।
(१०) शैतान वीर	सभी बुरे कार्य कर देता है।
(११) टोण्या वीर	कष्ट देने के लिए।
(१२) शिलका वीर	किसी को भी शिलका (पीड़ा) देता है।
(१३) काली कमली वीर	फूल, फल आदि देता है।
(१४) कमल्या वीर	जलाशय के फूल देता है।
(१५) ढकल्या वीर	किसी को भी ढकेल देता है।

(१६) हमामबाद वीर इत्र तथा सुगन्धित फल देता है।
(१७) माहिती वीर सभी प्रकार की जानकारी देता है।

अब इन वीरों को जागृत करके उनसे किस प्रकार कार्य करवाया जा सकता है, इसकी विधि बताते हैं--

विधि—पहले भोज-पत्र (भूर्ज-पत्र) पर निम्न यन्त्र बनवा ले। सिन्दूर-तेल से रुई (आक) की कलम से यन्त्र बनवाना चाहिए--

७	६
२४	६

मन्त्र (१)—"आकाशी गेला, पाताली आला। चौथे गेले मेस-कायी पाई। यशवन्त-रूप धेऊन उभे राहिले, हलदी - कुंकवाने गजब-जले। माझ्या वैयाची साडेतीनशे मूठ आली, ती भस्मात बुडाली। 'अमुक' वीर दौड़े जादू-टोना, 'अमुक' को पकड़ना। गुरू की शपथ, मेरी भगत। चले मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

मन्त्र (२)—"रूई माय फुई राम तुझा भाचा, सोड या वीराची वाता। पाणी सोड, पोहन सोड, पोहन का तीर सोड, सच्चा हनु-मान वीर।"

मन्त्र (३)—वीर की आवश्यकता न हो, तो 'वीर' को वापस भेजने का मन्त्र—"शीथ गोरा शीथ पल्या, उस पर बैठा ललन्या वीर। बारा-बारा कोस की खड़ी सवारी। घोर चेटती, रान चेटती, नद चेटती, नाला चेटती, आरसी-तारसी टकतारे, न जाशील तर कानिफनाथ, गोरखनाथ की शपथ।"

पहले एक ही फोक (डाली) वाला रुई (आक) का पौधा ढूँढ़े। अर्थात् जमीन में से वह एक ही डाली लेकर सीधा बाहर उगा हो और उसमें अन्य डालियाँ न हों। ढूँढ़ने से ऐसा पौधा मिल जाता है। जब अनुराधा नक्षत्र हो, उस दिन वहाँ पर निम्न सामग्री लेकर जाए—

(१) गेहूँ के आटे से बने चार दिए, (२) खोबरा (काले पीठवाला) १ टुकड़ा, (३) शक्कर, (४) भूर्ज-पत्र पर बनाया हुआ यन्त्र, (५) पीला

वस्त्र १ मीटर, (६) बबूल के २१ काँटे, (७) कपूर, (८) अगर - बत्ती, (९) हलदी, कुंकुम आदि।

अब उक्त पौधे के ५ पत्ते तोड़कर उन्हें पौधे के सामने ही रखे। उनमें से चार पत्तों पर चार दिए जलाकर रखे। ५ वें पत्ते पर वीर के लिए नैवेद्य (खोबरा + शक्कर) रखे।

इसके बाद भोज-पत्र पर अङ्कित यन्त्र की सामान्य पूजा करे। वीर को नैवेद्य अर्पित करे। सूची में वर्णित वीरों में से इच्छित वीर-सिद्धि के लिए मन्त्र (१) को २१ बार पढ़े। 'अमुक' के स्थान पर इच्छित वीर का नाम उच्चारण करे। दूसरे 'अमुक' के स्थान पर इच्छित का नाम प्रत्यक्ष प्रयोग के समय लेना।

इतनी विधि पूर्ण करने के बाद बबूल का एक काँटा लेकर मन्त्र (२) पढ़कर वह काँटा आक के पौधे में चुभो दे। इस प्रकार २१ बार मन्त्रोच्चारण-सहित २१ काँटे चुभो दे।

फिर यह सारी पूजा (सामग्री-सहित) उसी पौधे के पास जमीन में गाड़ दे—पीले वस्त्र में बाँधकर। पीछे न देखते हुए घर चले आएँ। जब पलँग पर आराम के लिए बैठेंगे, तब कानों में "घुऽऽर्ऽऽर्ऽऽऽ' ऐसी आवाजें आएँगी। यही सिद्धि-लक्षण है।

'वीर' कानों में बातें करेगा। उससे इच्छित सभी कार्य करवाए जा सकते हैं। इसमें एक बात ध्यान में रखना अनिवार्य है कि 'वीर' को २४ घण्टे काम देना पड़ता है। अन्यथा वह कष्ट देता है। ऐसी स्थिति में 'वीर' को निम्न प्रकार काम देना चाहिए—

(१) एक पेड़ दिखाकर उससे कहे कि इस पर चढ़ो और उतरो—यही काम करो। जब मैं तीन तालियाँ बजाकर बुलाऊँगा, तब शीघ्र आना। ऐसा भी वचन उससे ३ बार लेना चाहिए, (२) हिन्द महा-सागर में से एक बूँद पानी अरब समुद्र में और अरब समुद्र का एक बूंद हिन्द महा-सागर में डालते रहो—इस प्रकार के काम उसे दे दे। अपने दिमाग से 'वीर' को काबू में रखे। इस तरह अपने छोटे - मोटे काम 'वीर' से तुरन्त करवा ले। यदि वीर की जरूरत न हो, तो—

एक सफेद कागज पर 'वीर' लिखकर उस पर 'चिञ्च' की डाली से "वीर को वापस भेजने का मन्त्र क्र. (३)" ३ बार पढ़कर मारे। इससे वीर सर्वदा के लिए चला जाएगा, फिर नहीं आएगा। ● ●

बिच्छू-विष का हनुमान्-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री जी० डी० अग्रवाल
उप-डाकपाल दोराहा, जि० सिहोर (म० प्र०)

वर्ष १९७२-७३ में जब मैं नरसिंहगढ हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पढ़ता था, तब होस्टल में रहता था। होस्टल एवं स्कूल एक ही स्थान पर थे। वहाँ के रात्रि - कालीन चौकीदार के पास लोग 'बिच्छू' का विष उतरवाने आते थे। चौकीदार ने मुझे श्रद्धावान् जानकर बिच्छू उतारने का मन्त्र सिखाया था। उस मन्त्र से मैं लगातार २२ वर्षों से बिच्छू-विष उतार रहा हूँ।

मन्त्र—उतर-उतर बिच्छू ! अघोरी हनुमान की आन।

विधि—उक्त मन्त्र को सिद्ध करने के लिए किसी भी नवरात्रि में शाम के समय नहाकर, धुले वस्त्र पहनकर, हनुमान जी के मन्दिर में जाकर प्रति-दिन मन्त्र का २१ बार जप करे। जप के पूर्व दो अगर-बत्तियाँ लगा दे। नवें दिन एक नारियल फोड़कर हनुमान जी को होम दे। जप का समय, स्थान, मूर्ति प्रति-दिन एक ही होना चाहिए।

रोगी के आने पर उसे अपने सामने बिठा ले। स्वच्छ राख से जहाँ तक रोगी को बिच्छू का जहर चढ़ा है, मन्त्र पढ़ते हुए वहाँ पर राख से बन्ध लगा ले। फिर राख से नीचे की ओर मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ते जाएँ। जितना बिच्छू उतर जाय, उतना 'बन्ध' मन्त्र पढ़ते हुए राख से नीचे की ओर लगा दे, जिससे बिच्छू पुनः ऊपर न चढ़े। बिच्छू का विष पूरा उतर जाने पर रोगी के हाथ को जमीन पर थपथपाने को कहे। फिर विष नहीं चढ़ेगा। रोता हुआ रोगी आएगा एवं आपके पास से हँसता हुआ जाएगा। रोगी को स्वस्थ होने पर हनुमान जी के मन्दिर में अगर-बत्ती या प्रसाद नारियल आदि चढ़ाना चाहिए।

प्रति नवरात्रि में उक्त विधि कर लेने से मन्त्र चैतन्य रहता है, सदैव कार्य करता है। गर्भवती को झाड़ने से सिद्धि चली जाती है। पुनः सिद्ध करना चाहिए। गर्भवती को झाड़ने से गर्भस्थ शिशु को आजीवन बिच्छू का विष नहीं चढ़ता। चाहे वह बिच्छुओं से खेले, तो भी बिच्छू का विष नहीं चढ़ता। श्मशान में जाने या मुर्दे को छूने पर भी मन्त्र को दुबारा 'नवरात्रि' में सिद्ध करना चाहिए। ● ●

हाजरात के सुगम उपाय

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामशङ्कर उपाध्याय
उप-डाकपाल, बड़का राजपुर, बक्सर (बिहार)-८०२११३

(१) हाजरात-तन्त्र

शनिवार की सन्ध्या को पवित्र हो, बिना बन्धन दिए धोती पहन-कर, चावल-हल्दी और कच्चे सूत से किसी 'अपामार्ग' के पौधे को निमन्त्रण दे। पौधे की जड़ में चावल-हल्दी रखकर, कच्चा सूत पौधे पर लपेट दें और एक लोटा पवित्र जल पौधे की जड़ में डाल दें। फिर अगरबत्ती जलाकर 'प्रार्थना' करें–"हे वृक्ष-राज! आपकी महिमा अपार है। मुझ पर कृपा कीजिए और मेरा मनोरथ सिद्ध कीजिए। कल प्रातः-काल मैं आपको लेने आऊँगा।"

इस प्रकार 'प्रार्थना' कर चुपचाप घर चले आएँ। रास्ते में किसी से बात न करें और न पीछे मुड़कर देखें। यह भी ध्यान रहे कि आते-जाते कोई टोके नहीं। फिर रविवार को सूर्योदय के पूर्व उषा-काल में ही पवित्र हो पौधे के पास जाएँ और पौधे की जड़ के पास अगर-बत्ती जलाकर रख दें। पौधे को 'प्रणाम' कर पौधे को उखाड़ लाएं। घर आकर पौधे को धूप दिखाकर, पवित्र स्थान में रख दें।

इस प्रकार पौधा प्रयोग हेतु सिद्ध हो जाएगा। पौधे को सूखने दें। सूख जाने पर पौधे से एक अंगुल की लकड़ी तोड़ लें। लकड़ी में कपास की रुई लपेटकर बत्ती बना लें और शुद्ध घी के 'दीपक' में डालकर जलाएँ। 'दीपक' के सम्मुख किसी उच्च-वर्ण के ७ से १२ वर्ष के बालक को स्नान कराकर और स्वच्छ वस्त्र पहनाकर बैठाएँ तथा उसे 'दीपक' की लौ देखने को कहें। बालक को 'दीपक' की लौ में कोई साधु-वेष-धारी पुरुष दिखाई देगा। बालक से पूछ लें कि 'कुछ दिखाई पड़ रहा है?' जब वह 'हाँ' कहे, तब आप उससे जो कुछ पूछना हो, पूछें। वह सब कुछ सच-सच बताएगा।

उक्त सिद्ध पौधे के अनेक लाभ-दायक 'प्रयोग' हैं, किन्तु यहाँ 'हाजरात' का प्रसङ्ग है। अतः केवल यही दिया जा रहा है। अन्य 'प्रयोग' 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के आगामी भागों में दिए जाएँगे।

(२) हाजरात का मन्त्र

विस्मिला हिर्रहमानि रहीम खुदाई बड़ा—तू बड़ा। जैनुद्दीन पैगम्बर दुनी तेरी सादात फुरो वादा। नामुरादी बेबुनियादी तुर्क मापीर ताइया सिलार देखूँ। तेरी शक्ति, बेगि बाँधि ल्याव। नौ नारसिंह, चौरासी कलुआ, बारह ब्रह्मा, अठोतर से शाकिनी का मन दुरामन। छल-छिद्र, भूत-प्रेत, चोर-चाखर, आगिया-बेताल बेगी बाँधि ल्यावे। तो दुहाई सुलेमान पैगम्बर की।"

विधि—तेल-फुलेल, धूप, मिठाई से शुक्रवार से शुक्रवार तक पूजा कर २१ बार उक्त मन्त्र जपे, तो सिद्ध हो। जब 'हाजरात' करनी हो, तो पहले स्थान पवित्र कर लें। फर्श कच्ची हो, तो गाय के गोबर से लीप लें अथवा पक्की हो, तो शुद्ध जल से धो लें। फिर चावल की 'मजहृत' बनाएँ। कपास की रुई की बत्ती बनाकर घी का दीपक जलाएँ। वहाँ पर त्रिशूल लिखकर, क्वारी कन्या को स्नान कराकर, श्वेत-वस्त्र पहनाकर बैठाएँ। मन्त्र पढ़कर उस पर चावल फेकें और दीपक उसके माथे पर रख दें। फिर जो कुछ पूछना हो, उससे पूछें। सब सच-सच बताएगी।

(३) हाजरात यन्त्र

१	८	३	८	त
५	६	३	६	र
७	२	९	२	क
७	४	५	४	ली

विधि—उक्त 'यन्त्र' को रुई में लपेटकर कोयले की राख मिलाकर बत्ती बनाएँ और तेल में भिगोकर दीपक जलाएँ। दीपक का

पूजन कर ८-१० वर्ष के लड़के या लड़की को बैठाएँ। लड़के की हथेली पर कोयले की राख तेल में मिलाकर लगाएँ। तब उससे जो पूछना हो पूछें।

(४) घड़े द्वारा हाजरात

विधि—सन्ध्या गो-धूलि बेला बीत जाने पर, रात में कभी भी एक कमरे की फर्श लीपकर या धोकर शुद्ध कर लें। कमरे में धूप-बत्ती जलाकर वातावरण सुगन्धित करें। सम्भव हो, तो इत्र भी छिड़क दें, अथवा सुगन्धित फूल रक्खें। तत्पश्चात् चार या पाँच व्यक्ति, जो प्रयोग करना चाहते हैं, स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन लें। यदि दो-चार अन्य व्यक्ति भी शुद्ध होकर तैयार रहें, तो अच्छा होगा क्योंकि सम्भव है कि प्रयोग-कर्त्ताओं में से किसी को 'हाजरात' न होने पर हटाना पड़े और नए व्यक्ति को बैठाना पड़े।

पहले से एक नए घड़े का प्रबन्ध किए रहें। घड़ा बेदाग और कोरा होना चाहिए। फर्श पर एक एक-रङ्ग वाला कम्बल फैलाकर बिछा दें, जिस पर कम-से-कम पाँच आदमी मालाकार बैठ सकें। घड़े को कम्बल के बीचों-बीच औंधा कर रख दें और उसे घेर कर पाँचों व्यक्ति गोलाकार में बैठ जाएँ। १० से १५ वर्ष के बालक यदि 'प्रयोग' करने बैठें, तो अति उत्तम है। सभी पालथी मारकर बैठें। सबके टेहुने एक-दूसरे से सटे रहने चाहिए। सभी अपने दोनों हाथों की हथेलियों को घड़े की पेन्दी पर इस प्रकार रक्खें कि सबकी उँग-लियाँ एक-दूसरी से जुड़ी रहें और एक वृत्त-सा बन जाए। इससे दो वृत्त होंगे—एक कम्बल पर और दूसरा घड़े पर। अब सभी शान्त-चित्त हो जाएँ।

कोई व्यक्ति 'गायत्री मन्त्र' का स-स्वर कम-से-कम ग्यारह बार जप करे। यदि सभी प्रयोग-कर्त्ता मिलकर यह जप करें, तो अधिक अच्छा होगा। पुनः ईश्वर की कोई 'प्रार्थना' करें। 'प्रार्थना' के बाद सभी शान्त और स्थिर हो जाएँ। प्रयोग-कर्त्ताओं में से एक श्रद्धा-पूर्वक इस प्रकार 'प्रार्थना' करे—

"ईश्वर की कृपा से कोई पवित्र आत्मा आए और इस घड़े को ऊपर उठाए, जिससे हम समझ जाएँ कि आप आ गए हैं।"

उक्त 'प्रार्थना' कई बार करें। 'प्रार्थना' को किसी भी भाषा में कहा जा सकता है। कुछ बार 'प्रार्थना' करने पर घड़ा फर्श छोड़कर ऊपर उठने लगेगा और तब तक ऊपर जाएगा, जब तक प्रयोग-कर्त्ता नीचे आने को न कहेंगे। नीचे आने के लिए प्रयोग-कर्त्ताओं को कहना चाहिए कि—

"हम समझ गए कि आप आ गए हैं। कृपया मेरे प्रश्नों का उत्तर दें। यदि प्रश्न का उत्तर हाँ हो, तो कृपया घड़ा ऊपर उठाएँ। अन्यथा घड़े को घुमा दें।"

प्रयोग-कर्त्ता आगन्तुक आत्मा से किसी भी तरह का प्रश्न पूछ सकते हैं। सबका उत्तर 'हाँ' या 'ना' में मिलेगा। ध्यान रहे कि किसी आत्मा को आधा घण्टे से अधिक देर तक न रोकें, अन्यथा उन्हें कष्ट होगा। 'प्रयोग' की सिद्धि प्रयोग-कर्त्ताओं की मानसिक पवित्रता और विश्वास पर निर्भर है।

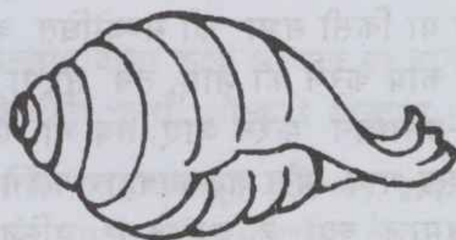
(५) सिद्ध बालक द्वारा हाजरात

विधि—प्रातः-काल या सन्ध्या में किसी उच्च-वर्ण के सदाचारी ५ वर्ष से १२ वर्ष तक के बच्चे को स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र पहनाकर फर्श पर कम्बल बिछाकर बैठाएँ। धूप भी जला ले, तो अच्छा होगा। स्वयं भी स्नानादि से पवित्र होकर बच्चे के सामने बैठ जाएं। अब बच्चे को अपने दोनों हाथों की हथेलियों से अपने कान-आँख बन्द करने को कहें। वह बच्चा दाएँ हाथ के अँगूठे को कान में, तर्जनी को आँख पर, मध्यमा को नाक पर और अनामिका एवं कनिष्ठा को मुँह पर रखे। इसी प्रकार बाँएँ हाथ की ऊँगलियाँ बाँएँ कान, बाँई आँख, नाक और मुँह पर रहेंगी। अब बच्चे को शान्त-चित्त होकर भगवान् शङ्कर का ध्यान करने को कहें। साथ ही वह मन-ही-मन "ॐ नमः शिवाय" या "शिव-शिव" का जप करे। बालक को ध्यान बताकर स्वयं भी इसी मुद्रा में साथ-साथ ध्यान करें। यह अभ्यास १५ मिनट से ३० मिनट तक करें। ग्यारहवें दिन बालक से पूछें कि 'ध्यान में शङ्कर भगवान् की मूर्ति आती है?' यदि वह 'हाँ' कहे, तो समझें, वह सिद्ध हो गया। अब उससे ध्यान कराकर जो पूछना हो, पूछें। सब ठीक-ठीक बताएगा।

निषेध--उक्त सिद्ध बालक से चोरी, हत्या या अपराध के सम्बन्ध में प्रश्न न करें। यद्यपि बालक सब कुछ बताएगा, किन्तु वैसे प्रश्नों से सामाजिक खतरा हो सकता है। अपराधी उस बालक का शत्रु बन जाएगा। अतः सावधान रहें।

(६) हाजरात स्वतः सिद्ध करें

विधि –स्नानादि से पवित्र होकर गङ्गा-तट पर पद्मासन से बैठ कर एक दृष्टि से गङ्गा जी की तरङ्गों को कुछ देर देखें, कुछ देर बाद ध्यानस्थ हो "ॐ नमः शिवाय" का जप करें। सात दिनों में अलौकिक शक्ति अपने में पाएँगे। उसके बाद जितने दिन साधन करेंगे, उतने दिन भविष्य की बात बता सकेंगे। यह साधना ब्रह्मचर्य-पूर्वक अखण्ड होनी चाहिए। यदि गङ्गा-तट सुलभ न हो, तो किसी शिव-मन्दिर में भी यह साधना कर सकते हैं। यदि शिव-मन्दिर भी दूर हो, तो अपने घर में ही रात में सबके सो जाने पर करें। निर्भीक साधना है, निरापद है, कोई भी कर सकता है। अनुभूत है। शङ्का हो, तो जवाबी पत्र द्वारा पूछ सकते हैं।



बहु-जन-हिताय

अनुभूत शावर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह
ताकफरी, बनियावाड, जामनगर (गुजरात)

१. सभा-मोहक सुरमा

मन्त्र--कालू मुख धोएँ, करूँ सलाम। मेरी आँखों में सुरमा बसे। जो देखें, सो पायन पड़ें। दुहाई गउसल आज़म--दस्त-गीर की छूः छूः छूः।

विधि---सवा लाख गेहूँ पर मन्त्र पढ़े। आटा पिसाए। कढ़ाई में घृत, शक्कर मिलाकर हलुआ बनाए। 'गोसुल आज़म दस्त-गीर' की नमाज़ दिलाकर हलवे को स्वयँ ही भोग लगाए। जब सभा में जाए, तब उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित 'सुरमा' आँखों में लगाकर जाए, तो सारी सभा वश में हो जायगी।

ध्यान रहे कि एक-एक दाने पर एक-एक बार मन्त्र जपना है। सुरमे की शीशी का मुँह खोलकर जप-स्थान में रख ले और उक्त विधि पूर्ण करने के बाद सुरमे को अभिमन्त्रित करके आँख में लगाए। तब सभा में जाए। जो-जो देखेंगे, वे सभी वश में रहेंगे। वर्तमान युग में कोर्ट-कचहरी में या किसी सभा को सम्बोधित करने यदि जाए या कोई महत्त्व का कार्य करने को जाए, तब सुरमा लगाकर ही जाए। कभी कोई शङ्का-समाधान करने जाए, तब भी ऐसा करे। सुरमे के प्रभाव से लोग सद्-भाव और सद्-व्यवहार करेंगे। 'गोसुल आज़म दस्त-गीर की नमाज़' क्या है, यह किसी मस्जिद में जाकर किसी बुज़ुर्ग या ज्ञानी मौलाना से जान ले। गेहूँ के सवा लाख दानों पर साढ़े बारह हजार जप करे, तब भी कार्य होगा।

२. सभा-मोहक सिन्दूर

मन्त्र—हथेली तो हनुमन्त बसै, भैरों बसै कपाल। नृसिंह की मोहनी मोहचो सब संसार ! मोहन रे मोहता बीर, सब बीरन में तेरा

सीर। सबकी दृष्टि बाँधि दे, तोहि तेल-सिन्दूर चढ़ाऊँ। तोहि तेल-सिन्दूर कहाँ से आया? कैलास - परवत से आया। कौन लाया? अञ्जनी का हनुमत, गौरी का गणेश। काला-गोरा-तोतला-- तीनों बसे कपाल। बिन्दा तेल-सिन्दूर का, दुश्मन गया पताल। दुहाई कामिया सिन्दूर की, हमें देख शीतल हो जाय। हमारी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरु का।

विधि—सात शनिवार दीपक तेल भर के, लोबान, खेवे मिठाई भोग धरे। १०८ बार जपे। फल-पान से पूजा कर सिद्ध करे। जब जहाँ जाए, सिन्दूर पर सात बार मन्त्र पढ़कर माथे पर लगाकर जाए। कोई क्रोधित होकर दण्ड देने को भी बुलाए, तो देखते ही शान्त हो जाएगा।

सूचना—(१) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' भाग ४, पृष्ठ २७ पर जो मन्त्र दिया है, उसकी विधि वहाँ नहीं दी है। यहाँ सविधि है। भाग १ में भी ६३-६४ मन्त्र है, लेकिन यहाँ विधि के साथ दिया गया है।

(२) कोर्ट-कचहरी में, थाने में, सचिवालय में या किसी उच्च अधिकारी द्वारा बुलाया जाय या आपको जाना आवश्यक हो, तब यह प्रयोग उपयोगी हो सकता है।

३. कामदार का वशीकरण

मन्त्र—बिसमिल्लाह दाना कुल्हू अल्लाह या दाना दिल है। सख्त तुम हो दाना, हमारे बीच 'फ़लाँ' को करो दिवाना।

विधि-४१ बिनोले लेकर एक-एक दाने को, क्रमशः ४१ बार मन्त्र जप कर, अर्द्ध-रात्रि के समय अग्नि में डाले। तीन दिनों में मनोरथ सिद्ध होगा। प्रथम २१ दिन तक २१ बिनौलों पर २१-२१ बार मन्त्र पढ़कर जलाए, तो मन्त्र सिद्ध हो जायगा। 'फ़लाँ' के स्थान पर अभीष्ट व्यक्ति का नाम जोड़ ले। पहले मन्त्र को सिद्ध करे, बाद में प्रयोग करे। 'कामदार' शब्द से सत्तारूढ़ व्यक्ति के नीचे जो मुख्य सचिव, अग्र सचिव हों, उन्हें समझे या बड़े लोगों के जो व्यक्ति-गत सहायक (पी० ए०) आदि सलाह देनेवाले हों, उन्हें समझना चाहिए।

४. सर्व-वशीकरण

मन्त्र--ॐ नमो आदेश गुरु को । राजा मोहूँ, प्रजा मोहूँ, ब्राह्मण बनिया । हनुमन्त-रूप से जगत मोहूँ, तो रामचन्द्र पर मनिया । गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि--पूर्वोक्त श्री रामजी का ध्यान करे । २१ दिनों तक प्रति-दिन १२१ बार जप करे । फिर गाँव के चौराहे पर जाकर चुटकी भर धूल ले । उसे ७ बार अभिमन्त्रित कर उससे माथे पर बिन्दी लगाए । सभी लोग देखते ही वश में होंगे ।

सूचना—भाग ४, पृष्ठ ५३ में यही १५ वाँ प्रयोग है । यहाँ विधि अलग दी है, जो सरल है ।

५. वशीकरण-पान

मन्त्र—हरे पान, हरियाले पान । चिकनी सुपारी, श्वेत खैर । दाहिने कर चूना, मोहि लेय । पान हाथ में देय, हाथ रस लेय । पेट दे, पेठ रस लेय । श्री नरसिंह वीर ! तुम्हारी शक्ति, मेरी भक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वर महादेव की बाचा ।

विधि—मन्त्र को २१ बार पढ़कर जिसे पान खिलाएँगे, वही वश में होगा ।

सूचना—भाग २, पृष्ठ ३० में ऐसा ही प्रयोग है । यह उससे भिन्न प्रकार का है । मन्त्र की सिद्धि करके ही प्रयोग करे ।

६. रोजी मिले—धन बढ़े

मन्त्र—ॐ नमो भगवती पदुम पदमावी । ॐ ह्रीं श्रों श्रीं पूर्वाय दक्षिणाय उत्तराय आण पूरय, सर्व-जन वश्य कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि---प्रातः-काल बात करने से पहिले १०८ बार जप कर ले । बाद में चारों कोनों में दश-दश बार मन्त्र पढ़कर फूंके, तो चारों दिशाओं से लाभ होगा । सदैव करते रहेंगे, तो लाभ-दायक होगा ।

७. आकर्षण-मन्त्र

मन्त्र—ॐ नमो आदि-रूपाय 'अमुक' आकर्षण कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि---काले धतूरे के पत्तों का रस और गोरोचन को मिलाकर सफेद कनेर की कलम से भोज-पत्र पर मन्त्र को लिखे । खैर-सार के

अङ्गारों में तपाए, तो कोई व्यक्ति यदि एक सौ कोस दूर भी चला गया हो, तो वापस आ जाएगा। 'अमुक' स्थान पर अभीष्ट व्यक्ति का नाम बोले। वही नाम भोज-पत्र पर भी लिखे।

८. पुरुष-आकर्षण-मन्त्र

मन्त्र—ॐ नमो काल-संहाराय ह्लीं हूं फट् 'अमुक' आकर्षण स्वाहा।

विधि—उक्त मन्त्र का जप १०८ बार नित्य करे। 'अमुक' के स्थान पर जिसे बुलाना हो, उसका नाम ले। थोड़े ही दिनों में वह व्यक्ति मन्त्र-जप-कर्ता से मिलने आएगा।

पति या पत्नी-वशीकरण-मन्त्रों से यह मन्त्र भिन्न है। उक्त मन्त्र से किसी भी पुरुष का, वह कोई भी हो, आकर्षण होता है।

६. मृतक आत्मा का आकर्षण

मन्त्र--ॐ ह्लीं फ्लों अं श्री महा सर्वे स्व-प्रदातै नमः।

विधि- श्मशान - भूमि में जाकर, वट-वृक्ष के नीचे खड़े होकर उक्त मन्त्र का सवा लाख जप करे, तो मृतात्मा का आकर्षण होता है।

१०. देव-आकर्षण

मन्त्र ॐ एं हीं श्रीं धनं धनं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर एकाग्र-चित्त से उक्त मन्त्र का सवा लाख जप करने से अभीष्ट देवता का आकर्षण होगा।

अच्छी तरह से जप होगा, तो जप-काल में ही चिन्तित कार्यं सम्पन्न हो जाएगा। तब प्रयोग छोड़ दे। देव या देवी का बारम्बार आकर्षण करने से कभी-कभी प्रयोग-कर्ता को कष्ट भी हो सकता है। किसी भी प्रयोग का दुरुपयोग कभी न करे।

११. हनुमान जी का झारा

मन्त्र—जयत हनुमान जी। निज ध्यान - धूप - ध्यान धरूँ। सेबूँ वीर हनुमान। जटा-जूट अवधूत, जङ्ग जञ्जीर, लँगोट। गाड़ी भूत कूँ बस कर, प्रेत कूँ बस कर। गादी की मार दे। तेल - सिन्दूर - फल-फूल-पान मङ्गल चढ़े आप। आप देख, जब रोठ होवे। सत्य की नाव नरसिंह खेवै। दुष्ट के लात बजरङ्ग देवे। तोड़ बज्र किवाँड़, भक्ति की कड़ी। चार लाख अस्सी हजार बस कर। रावण के कीनी घड़ा-

धड़ा, सत्य वीर हनुमान ! बरस बारह के ज्वान, हाथ में लाड़ू, मुख में पान। सीता की गए खोज, तो मोसे पतित अनाथ की नाही करोगे का ? हनुमन्ता, गुणवन्ता, गाजन्ता, घोरन्ता ! डगरी बैठे, राज करन्ता ! रिद्धि लाओ, सिद्धि लाओ। राजा - परजा बस कर। बड़ी वेग मेरे पास लाओ। मेरी पास बड़ी वेग नहिं लाओगे, तो माता अञ्जनी का दूध पीया, हल्लाल से हराम कराओगे। बड़ी बार वेग लाओगे, तो माता अञ्जनी का दूध पीया हल्लाल करोगे। यही पान का बीड़ा तुम्हारी भेंट है।

जो वाचा चूके, ऊम्योई सूखे। मेरे हँकारे नहीं हंकेगो, तो माता अञ्जनी की दुहाई। सती सीता कूँ देखूँ। हनुमन्ता वीर ! तेरी शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—उक्त मन्त्र से बालक को झाड़ने से भूत-प्रेत-मसान—सब भाग जाएँगे। मोर-पङ्ख से झाड़ना चाहिए।

यही प्रयोग भाग १, पृष्ठ ३२ में श्री भैरवानन्दनाथ ने दिया है। उनका दिया हुआ प्रयोग व विधि उत्तम है। मेरे पास जीर्ण ग्रन्थ में जो लिखा है, वही मैंने यहाँ दिया है। सुरक्षित रहे, इसीलिए भेजा है। अन्यथा न समझें। मन्त्र व विधि में अति अल्प अन्तर है।

१२. भैरव-सिद्धि प्रयोग

मन्त्र—काली कङ्काली महा-काली के पुत्र, कङ्काल-भैरव ! हुक्म हाजिर रहे, मेरा भेजा काल करे। मेरा भेजा रक्षा करे। आन बाँधूँ, बान बाँधूँ। चलते-फिरते के औसान बाँधूँ। दसो स्वर बाँधूँ, नौ नाड़ी-बहत्तर कोठा बाँधूँ। फूल में भेजूँ, फूल में जाय। कोठे जीव पड़े, थर-थर काँपे। हल-हल हलै, गिर-गिर पड़ै। उठ-उठ भगे, बक-बक बकै। मेरा भेजा सवा घड़ी, सवा पहर, सवा दिन, सवा माह, सवा बरस को बावला न करे, तो माता काली की शैया पर पग धरै। वाचा चूके, तो ऊमा सूखे। वाचा छोड़ कुवाचा करे, तो धोबी की नाँद में, चमार के कूड़े में पड़े। मेरा भेजा बावला न करे, तो रुद्र के नेत्र से अग्नि की ज्वाला कढ़ै। सिर की लटा टूट भूमें गिरै। माता पार्वती के चीर पर चोट पड़ै। बिना हुक्म नहीं मारता हो। काली के पुत्र, कङ्काल - भैरव ! फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरु को।

विधि —उक्त मन्त्र को 'काल-रात्रि' या 'सूर्य-ग्रहण' की रात्रि में सिद्ध करे। त्रिखूटा चौका देकर, दक्षिण की ओर मुँह करके, मन्त्र का एक हजार जप करे। तब लाल कनेर के फूल, लड्डू, सिन्दूर, लौंग का जोड़ा और चौमुखा दीपक आगे धरे। जप के दशांश का हवन करे। जब भैरव जी भयङ्कर रूप में दर्शन दें, तो डरे नहीं। तत्काल फूल की माला उनके गले में डालकर लड्डू उनके आगे रक्खे। फिर उनसे जो माँगना हो, वह माँग ले।

यही प्रयोग भाग १, पृष्ठ ५५ में 'कामना-सिद्धि - प्रयोग' नाम से प्रकाशित है। विधि अल्प मात्रा में भिन्न है। श्री भैरवनाथ दर्शन न दें, तो भी कार्य-सिद्धि अवश्य होगी। दर्शन न मिले, तो उनकी मूर्ति को माला पहना दे और लड्डू वहीं रख दे। अभीष्ट कार्य कुछ ही दिनों में हो जाएगा। मेरे स्वर्गीय मित्र श्री ओझा जी का यह अनुभूत मन्त्र है।

१३. भूतों के उतारने का मन्त्र

मन्त्र—ॐ नमो ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं नमो भूत-नायक ! समस्त-भुवन-भूतादि साधय साधय ह्रें ह्रें ह्रें।

विधि —शनिवार को २१ दिनों तक प्रति - दिन उक्त मन्त्र का १४४ बार जप करे। दीपक पर आगे गूगल से फूल - बताशा चढ़ाए। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध होगा। तब मोर - पङ्ख से भूत झाड़े। भूतादि उतर जाएँगे।



पञ्जाबी भाषा का चमत्कारी शाबर-मन्त्र

मुन्दरा अर्थात् जंजीरा

प्रस्तुत-कर्त्ता : सर्वश्री सैयद मोहम्मद कादरी बापु
'रूहानी आलम', गुलाबनगर, हुसैनी चौक, जामनगर (गुजरात)

मर्दाने शाह अली झरब जोर से लगा, गए बात पर सवार हुए आप शहेनशाह। अल्लाहो ला-इलाह को पढ़ा पीर मुरतुझा, सन जो अल्लाहो की उना आप लय लगा।

'अत्हय्यातो लिल्लाह' की ढाल हुई सयी अता, 'अलम तर फेफ़' फ़अलों रब्बो का शम्शीर लय लगा। 'ला-इलाफ़ कुरेश' कटार सान लगा, 'कुलहो वल्लाहो अहद' का नेजा दस्त में पड़ा।

'कुल आउजो बे रब्बीन्नाश' की कमान हे शीफ़ा, 'या अय्योहल मुझम्मीलो' तरकश में तीर पा, 'वत्तीन वझयतुन' गरझ आपकी इला, मोमेनीन कमर बाँधकर तैयार हो खड़ा।

अन ला-ईला को पढ़कर जीब रईल को बुला, मा वजरा 'ईल्ला अन्ता' मीकाईल जी भी था। सुब्हान का इसराफ़ील जल्दी से फेरा था, 'इन्नी कुन्तो' ईझराईल या अली दीघा। 'मिनझ झालेमीन' या कलका या बुद्दुह मदवा, महम्मद जी ईश्मे आझम पडकर पुस्त में हुवा था।

ख्वाजा अवेश करनी सब नबी के यार था, ख्वाजा खिजर आए हे जो बहेरों के मलाह। चढ़े मोहीय्युदीन जो गोशों का बादशाह, फ़रीद शकरगञ्ज ख्वाजा कुतुब को बुला ! आदम थे नबी नुहजी कर शीश का भी था, याकुब अथ इदरीश हझरत युसुफ़ भी नाल था।

मुशा तोरेत सतर में असा को पकड़ा, ईशा ईञ्जील नाल लाए हझरत युनुस को नाल ला। सुलेमान भी झबुर ले दाउद आ गया, तुरत चढ़े हझरत ईब्राहीम ईस्माइल नाल था। चढ़े हें सब मुरशल मोहम्मद सल्लाहो।

अलय हे वस्सल्लम का हुकम था, दुलदुल पर सवार हुए आप शाहेला फ़वाह।

कुफ़र की बली सत हे रुश्तम भी काम था, महेमुदी को कैद कीया, जो जीन्नों का बादशाह। रावन मसन्दर शाह शरफ़ को बाँध ला, जसरथ गुरु गोरखनाथ बु अली को फ़ीरा। दहसर को कीया कैद, जो लङ्का में रहेता था, बारा ईमाम नाल ले हज्ञरत इलयास चढ़े धा। जोगी ईस्माइल रामचन्दर को कैद कर दीया, दहन्त भीमशेन इसर माहु को पकडा।

लुना चमारी का लका पकड़ धरत में दबा, जो अल्लाह को न माने, उसको मार वीघा। नानक ते मरदाना पकड़ देवयु को ला, तारों को सभी जोगना कुल को जञ्जीर था। भैरव सबको कैद कर दीया, छे राग छत्तीस रागनी हुजुर में बुला।

जन्तर की तार बन सभी नार थी हठा, जादु मशान कील सब जुडीया को बुला। काले ईलम को बुन शर मेंठा को पकड ला, उल्लु बदन बाँध गण्डा तावीझ पा। मन्तर सबुको बीन सभी तन्तर को पेंच पा, जादु-जल को भी मड़ीया की खाक पा।

वेद अहेमद कबीर सब डानीया को बाँध ला, खेल सभी बीन मदार के मदार का। जुनेद पीर ताप सभी कैद कर दीया, मासक्की वश बीन भी गुङ्गे का जोर ला। सरपों सभी वअनाँ को उना कैद कर दीया, सरपों झहर कील बीछु की तरफ़ जा।

फ़न उसकी पकड़ बन डङ्ग सभी चीझ का, हझरत सुलेमान बेठा तख़्त पर सभी परीयो की तरफ जा। देव, जीन्न, भूत, परी, सब चुडेलों को बाँध ला, साए में सबको बाँध, जो गए बात में रहा। नजर ओर पटार एक पलक में हठा, बीमारी सब दफे कर, वीर दयड 'बिस्मील्लाह'।

मदद मेरी पीर दस्तगीर बादशाह, बन्दुक ओर तोप—सभी बाँध दे कुलाह। नेझा ओर तल्वार गुरझ सब बाँधो को बाँध ला, हथियार जो जमीन में रहा, रझा कहो अलहम्दो लिल्लाहे रब्बील आलमीन।

विधि—उक्त 'जञ्जीरा' पञ्जाबी भाषा में बड़ा अच्छा 'शाबर-मन्त्र-प्रयोग' है। पञ्जाबी भाषा में इसे 'मुन्दरा' अथवा 'मुन्द्रा' कहते हैं। झाड़-फूँक के लिए मेरे विचार से इससे बड़ा कोई अनुष्ठान नहीं है। इस 'जञ्जीरा' की सिद्धि होने पर साधक इसके द्वारा लोक-कल्याण की सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति करने में समर्थ होता

है। इस 'जञ्जीरा' की 'प्रयोग'-विधि बहुत जटिल थी। शाबर-मन्त्र-प्रेमी बन्धुओं के लिए इसे हमने व श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह जी ने सरल रूप में क्रम - पूर्वक निम्न प्रकार लिपि-बद्ध किया है, जिससे अधिक-से-अधिक बन्धु लाभ उठा सकें। यथा--

१ **पात्रता आदि** : जो साधक निर्भय हो, वही इस 'जञ्जीरा मन्त्र' का प्रयोग करे। 'जञ्जीरा मन्त्र' को सिद्ध करने का प्रयोग अपने घर में न करे। प्रयोग सिद्ध करने के बाद लोक - कल्याण हेतु अनुष्ठान किसी भी स्थान पर कर सकते हैं। इस प्रयोग की सिद्धि से सभी प्रकार की बाधाओं, कष्टों, आपत्तियों का निवारण होता है।

२ **माला** : किसी प्रकार की 'माला' की आवश्यकता नहीं। 'कर-माला' से जप करे।

३ **आसन** : किसी भी स्वच्छ 'आसन' का उपयोग करे।

४ **वस्त्र** : स्नान करके कोई भी स्वच्छ वस्त्र पहने।

५ **दिशा** : पश्चिम की ओर मुख करके जप करे।

६ **समय** : सूर्यास्त के बाद अथवा रात्रि में जप करे।

७ **जप-संख्या** : १२० दिन तक ४१ बार जप करे। १२० दिन का जप तीन भिन्न स्थानों में करे। तीनों भिन्न स्थानों का क्रम नीचे लिखे प्रकार रक्खे। इसमें परिवर्तन न करे---

८ **स्थान** : पहले ४० दिन मुसलमानों के कब्रस्तान में कबरों के बीच में बैठकर जप करे। दूसरे ४० दिन, झाड़ू देनेवालों के कब्रस्तान में कबरों के बीच में बैठकर जप करे। तीसरे ४० दिन, हिन्दुओं के श्मशान में बैठकर जप करे।

९ **विशेष** : (१) जब जप प्रारम्भ करे, तब सबसे पहले 'ह्रींसार' या किसी 'आत्म-रक्षा-मन्त्र' का ११ बार जप 'जल-पात्र' के ऊपर दाहिनी हथेली रख कर करे। इस अभिमन्त्रित जल को अपने ऊपर छिड़के अथवा उससे अपने चारों ओर रेखा खींच दे। जब तक जप करे, तब तक इस स्थान को न छोड़े। 'ह्रींसार' का पाठ इस प्रकार है—

"इल्लाह इल्लाह इल्लाह कोट उठावै। इन इल्लाह की खाँईं अली की चौकी, मदियाहिं की दुहाई। अल्लाह, इल्लाह, इनिल्लाह, महम्मद इवा रसूल लिल्लाह।"

(२) 'आत्म-रक्षा' अथवा 'हींसार' के जप के बाद उक्त 'जञ्जीरा मन्त्र' का ४१ बार 'जप' करे। प्रत्येक 'जप' के पहले और अन्त में यह कहे—

"बिस्मील्लाह हीरंहेमान निरंहीम"

(३) वर्षा ऋतु में यह 'प्रयोग' न करे क्योंकि उस समय कब्रस्तान या श्मशान में सुख-पूर्वक बैठना सम्भव न हो सकेगा।

(४) 'प्रयोग' प्रारम्भ करने से पूर्व अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेवे।

(५) 'प्रयोग'-काल में यदि कुछ भयानक दृश्य आदि दिखाई दें अथवा आवाजें सुनाई दें, तो घबड़ाए नहीं। अपना स्थान न छोड़े। निर्भय रहे और 'जप' करता रहे। धीरे - धीरे सब कुछ स्वतः शान्त हो जाएगा।

१० **अनुष्ठान :** उपर्युक्त प्रकार से १२० दिन 'जञ्जीरा मन्त्र' का 'जप' करने से यह सिद्ध हो जाता है। इसके बाद साधक लोक-कल्याण की दृष्टि से किसी भी स्थान में इस 'जञ्जीरा मन्त्र' का अनुष्ठान कर सकता है। यथा—

(१) सात कबरों की मिट्टी लेकर उसके ऊपर ११ बार जञ्जीरा मन्त्र की फूँक देवे। फिर उस मिट्टी को जिसके घर में चलने के रास्ते में या व्यापार के स्थान में फेंकेंगे, उसका 'उच्चाटन' होगा।

(२) विरोधियों अथवा शत्रुओं के सम्मुख अथवा उनका ध्यान करके ११ बार जञ्जीरा मन्त्र की फूँक देने से विरोधियों अथवा शत्रुओं की वाणी का स्तम्भन होता है।

(३) शरीर के सभी प्रकार के रोगों में 'जञ्जीरा मन्त्र' पढ़कर ११ बार फूंक देने से सभी प्रकार के रोग शान्त होते हैं।

(४) भय की अवस्था में अथवा कष्ट - पूर्ण परिस्थितियों में 'जञ्जीरा मन्त्र' का पाठ करने से शान्ति मिलती है।

(५) काला जादू, मैला इलम, ग्रह - बाधाओं, पर-कृत कृत्यादि, दोष-पूर्ण सङ्गति के बुरे परिणामों, जिन्न-भूत-प्रेत-चुड़ैल-डाइन आदि की यातनाओं अथवा विष-दंश की अवस्था में 'जञ्जीरा मन्त्र' का ११ बार पाठ कर फूँक देने या झाड़ने या भस्म को अभिमन्त्रित कर ताबीज आदि में भरकर धारण करने से शान्ति होती है।

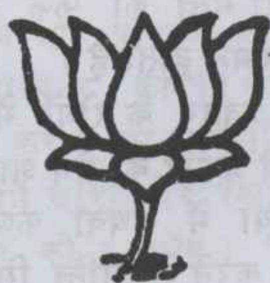
विशेष सूचना : (१) अभीष्ट मन्त्र को सिद्ध करने से पहले 'शाबर' के 'मेरु-मन्त्र' को विधि अनुसार सिद्ध कर ले। तभी किसी मन्त्र का प्रयोग करें।

(२) मन्त्र का अर्थ भाषा के किसी जानकार से समझ लेना चाहिए।

(३) भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी, योगिनी, आत्माओं इत्यादि को बुलाना, बकराना और निकालना या बांधना एवं 'उतारा - विधि' करने या करवाने का काम जटिल है। अतः किसी योग्य गुरु से समझे बिना कभी न करे, अन्यथा कष्ट होगा।

(४) प्रयोग जैसे मेरे पास थे, वैसे ही दिए हैं। कोई व्यक्ति संशोधन या परिवर्तन करके बताएगा, तभी फल-प्रद होगा। मेरा उद्देश्य प्रयोग का 'संरक्षण' मात्र है।

(५) 'जञ्जीरा मन्त्र' का प्रयोग किसी को कष्ट देने अथवा हानि पहुँचाने की भावना से कदापि न करे। यदि स्वयं को किसी के द्वारा कष्ट हो रहा है, तो स्तम्भनार्थ, उच्चाटनार्थ प्रयोग कर सकते हैं।



शाबर मन्त्र के उग्र प्रयोग

और

शाबर बराटी विद्या

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री अनिल गोविन्द बोकिल

यहाँ तीन उग्र प्रयोग न चाहते हुए भी इसलिए दिए जा रहे हैं, क्योंकि कुछ लोगों को यह भ्रम है कि भूत-प्रेत आदि की बातें झूठ हैं। कई लोग तो चैलेंज करते फिरते हैं कि हमें सिद्ध करके दिखाओ, तभी मानेंगे। वस्तुतः उनके मानने या न मानने से सत्यता में कोई अन्तर नहीं आता। तथापि अविश्वासी लोगों को यह तो मानना ही होगा कि किसी भी वस्तु या शक्ति की प्राप्ति के लिए प्रयास करना पड़ता है। फिर भूत-प्रेतादि तो मानवेतर तथा अघोर-शक्तियाँ हैं। इनकी प्राप्ति के लिए जो विधान हैं, वे दिखने में अत्यन्त सरल हैं, परन्तु प्रत्यक्ष साधना के समय पर नानी याद आ जाती है! स्वयं अपना दिया चैलेंज, लिखा-पढ़ा, कहा-सुना आदि सब हवा हो जाता है।

प्रयोग बतलाने से पहले ही नम्रता-पूर्वक यह सूचनीय है कि इन प्रयोगों के पीछे न लगें। यदि पीछे लगना ही है, तो कम-से-कम किसी उच्च स्तर के साधक को साथ में रखें, जिससे संरक्षण हो सके। अध्यात्म - मार्ग का अनुभवी व्यक्ति साथ में होना चाहिए, अन्यथा खतरा है। इस चेतावनी को ध्यान में रखते हुए ही निम्न प्रयोगों पर कृपया मनन करें।

(१) भूत-वशीकरण

मन्त्रः—"ॐ रुद्र भूत-नाथाय षट्-भुत वशं कुरु कुरु,
आज्ञा पालय पालय, रुद्राय हुं हुं फट्।"

विधि—पहले किसी भी 'ग्रहण'-काल में उक्त मन्त्र १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर किसी भी अमावास्या की रात को श्मशान में जाकर उसी दिन जले हुए शव की रक्षा (राख) लेकर उसे भूमि

पर श्मशान में ही बिखेर दें। उस पर बैठकर लोहे से अपने चारों ओर संरक्षण के लिए एक मण्डल (वृत्त) बनाएँ।

फिर भगवान् रुद्र का ध्यान कर उक्त मन्त्र का जप वहीं श्मशान में ६ घण्टों तक करें। इन ६ घण्टों में ६ भूत प्रत्यक्ष हो जाते हैं। जब वे प्रत्यक्ष हों, तब उनसे बुलाने पर आने का और सभी काम करने का वचन लेकर उन्हें जाने की अनुमति देनी चाहिए।

अन्त में घर लौटकर स्नान करके शुद्ध हो जाना चाहिए। ध्यान रहे कि एक ही भूत को वश में करना कठिन है। यहाँ तो ६ भूत प्रत्यक्ष होते हैं! १२ से ३० फीट तक इनकी ऊँचाई होती है, साधक को उठाकर ये भूत फेंक देते हैं या पत्थरों की बरसात करते हैं—कुछ भी भयावह हो सकता है। संरक्षक के रूप में कोई अनुभवी साधक यदि साथ होगा, तो वह रक्षा करेगा।

(२) वेताल-वशीकरण

मन्त्रः—"ॐ तुरुः, ॐ गुरुः, ॐ हिलिः, ॐ हुः,
महा-घोर-रावे! कालि-कपालि-बैतालाय फट्।"

विधि—पहले किसी भी ग्रहण-काल में १०८ या ११०० बार जप कर उक्त मन्त्र को सिद्ध करें। फिर किसी भी अमावास्या को (शनि-अमावास्या उत्तम है) रात्रि में श्मशान या एकान्त स्थान पर जाकर बैठे। सामने तेल का दिया जलाएँ। किसी भी दिशा की ओर मुँह कर सकते हैं। उक्त मन्त्र के लिए सङ्कल्प, न्यास, ध्यान आदि की आवश्यकता नहीं है।

१०८ दानों की रुद्राक्ष-माला पर उक्त मन्त्र का जप करते हुए ११ माला पूर्ण करें। जप के पूर्ण होते ही 'वेताल' हाहाकार मचाता हुआ प्रत्यक्ष होता है। 'बुलाने पर आकर कार्य करना'—यह वचन उससे लेकर उसे मुक्त करना चाहिए।

बाद में आवश्यकता पड़ने पर स्मरण मात्र से ही 'वेताल' आकर काम करता है। यदि पहली बार सफलता न मिले, तो अगली अमावास्या तक पुनः उक्त साधना करे। अथवा हर अमावास्या को यह साधना करे। सफलता अवश्य मिलती है।

इस साधना में भी किसी सक्षम आध्यात्मिक अधिकारी व्यक्ति को साथ रहना चाहिए।

(३) वेतोबा जागृति

"वेतोबा" भी "वेताल" की ही निम्न श्रेणी है। किसी भी गाँव में, खेतों में या नदी या नाली के तट के किनारे पर सिन्दूर लगाया हुआ गोल पत्थर होता है। इसे देहात में 'वेतोबा' कहते हैं। 'वेतोबा' रात को १२ बजे निम्न विधि से जागृत होता है—

मन्त्रः—"तारावरून आला दंत तो, गेला सितोब्राच्या कुळी।"

विधि—देहात में जहाँ पर गोबर इकट्ठा करके रखा जाता है और उसका खत वनाते हैं, उस खड्डे (गोबर-खाना) में यदि दाहिने पैर का जूता अचानक मिले, तो वह जूता (फटा हुआ भी काम देगा) लेकर रात को १२ बजे 'वेतोबा' के पास एक मुर्गी का बच्चा (या अण्डे) और शराब ले जाकर, उक्त मन्त्र पढ़ते हुए दाहिने हाथ से 'वेतोबा' को जोर से मारें। इस प्रकार २१ बार करें। मार खाने से 'वेतोबा' आग-बबूला होकर प्रत्यक्ष होता है। उसके सामने मुर्गी का बच्चा काटकर बलि दे दें या उसे अण्डे + शराब दे दें। पूर्वोक्त दो विधानों के समान उससे वचन लेकर कार्य करवा सकते हैं। याद रहे- स्व-संरक्षण हेतु किसी उच्च कोटि की देवता की उपासना, कवच आदि या अनुभवी साधक का संरक्षण अनिवार्य है। अन्यथा प्राण-सङ्कट में पड़ सकते हैं।

● ● ●

शाबर बराटी विद्या

'नाथ-पन्थी' में मन्त्रों के तीन प्रकार होते हैं—१ साबर, २ बर्भर तथा ३ बराटी। जो कार्य 'साबर-मन्त्र' द्वारा होता है, वह 'बर्भरी मन्त्र' तथा 'बराटी विद्या' से भी हो सकता है।

कई मन्त्र ऐसे भी स्वयं-सिद्ध हैं कि उन्हें सिद्धि-विधान की आवश्यकता नहीं पड़ती। मात्र उच्चारण से ही कार्य हो जाता है। ऐसे मन्त्रों में भी दो प्रकार हैं—(१) दिखने में सरल, परन्तु सिद्धि भय-प्रद और (२) दिखने में सरल, सिद्धि भी सुरक्षित, परन्तु ऐसे मन्त्र बड़ी कठिनाई से परम्परा द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं।

'बराटी विद्या' कुछ-कुछ अघोर-विद्या के समान है। इसके मन्त्रों की भाषा ऐसी होती है कि यदि व्यवहार में व्यक्ति ऐसी भाषा का प्रयोग करे, तो उसे जूते अवश्य पड़ेंगे! फिर भी ऐसे मन्त्र होते हैं बड़े प्रभाव-पूर्ण। इनका एक अपना वैशिष्टच यही है कि 'गुरु-मुखी' होना अनिवार्य है, अन्यथा या तो सिद्धि नहीं होती, या सिद्धि मिली भी, तो विपरीत रूप में या अधूरी रह जाती है।

'बराटी'-मन्त्रों के द्वारा विशेषतया ५२ बीरों की सिद्धि की जाती है। प्रत्येक 'बीर' का कार्य अलग-अलग होता है। 'बराटी विद्या' दो प्रकार से सिद्ध की जा सकती है—(१) दक्षिण-मार्ग से और (२) वाम-मार्ग से।

दक्षिण-मार्ग से ३१ 'बीर' सिद्ध होते हैं, जो सभी प्रकार के कर्म करते हैं तथा वाम मार्ग से २१ बीर सिद्ध होते हैं—ये भी सभी कार्य करते हैं। कोई भी व्यक्ति दोनों प्रकार के 'बीरों' को सिद्ध नहीं करता। या तो ३१ बीर सिद्ध कर सकेगा या २१।

साधना हेतु पञ्च - धातु (ताँबा, पीतल, सुवर्ण, रजत, कांस्य) का एक "बीर - कङ्कन" पूर्णिमा के दिन बनाना पड़ता है। प्रत्येक 'बीर' की प्राण-प्रतिष्ठा 'कङ्कन' में अलग-अलग स्थान पर की जाती है। इनका क्रम भी निश्चित है। प्रयोग के समय साधक इसी 'बीर-कङ्कन' को अपने हाथ में पकड़कर 'बीरों' से काम लेता है। आवश्यकता होने पर 'बीर' का सञ्चार स्वयं साधक के शरीर में करवा लिया जाता है। यह 'कङ्कन' कानों में लगाने से साधक 'बीरों' की बातें सुन सकता है।

यहाँ केवल 'दक्षिण-मार्ग' से सिद्ध किए जानेवाले दो 'बीरों' के मन्त्र और उनकी विधि दी जा रही है—

(१) हनुमान बीर-जागृति

मन्त्र १ : गणा गणा कमरी गणा; पायामधों सोन्या सुवर्णाच्या वहाणा। वहाण गेली अग्नी निघाली; ओटयावर होता कोल्ह्यासर दैत। जागती ज्योत जागत रहो। खेत देव दैत चले रे हनुमान बीर; सिध्यांशी गुरू छू॥

मन्त्र २ : गणा न गणपति सारजा सरस्वती; सारजा सरस्वतीनं काय केलं ? डाग डुबला, डाग डुबल्याची काजल आणली, शिरी कुंकवाची चिरी ल्याली । ये अन्जनीच्या सूता, रामाच्या दूता, आमचे काम सिद्ध करावे । नाही करशील तर राम-लक्ष्मणाची आण; सीता जानकीची आण। सिद्ध्यांशी गुरू छू ॥

विधि—पहले एक डालीवाले 'आक' का पौधा ढूँढ़ें । फिर किसी भी शुभ दिन में ब्राह्म-मुहूर्त में उस पौधे के पास जाकर हलदी-कुंकुम, अगरबत्ती, नारियल, कपूर आदि उपचारों से उसका पूजन करे । फिर हाथ में जल लेकर 'मन्त्र १' पढ़कर पौधे को 'मूल' (जड़) पर छोड़ दें । इस प्रकार २१ बार करें । फिर 'मन्त्र २' से भी यही क्रिया २१ बार करें । तदनन्तर गुरु-मन्त्र का दो मिनट तक जप करें । यह पहले दिन की विधि हुई । इसी प्रकार २१ दिनों तक करें । तीसरे ही दिन से 'हनुमान बीर' जागृत होने लगता है । २१ वें दिन वह साधक के सामने आकर खड़ा हो जायगा ।

जब 'हनुमान बीर' प्रत्यक्ष हो, तब 'मन्त्र २' का उच्चारण करें । इससे वह बोलने लगेगा । तब आशीर्वाद माँगकर आवश्यकता पड़ने पर आने का वचन उससे ले लेना चाहिए ।

२१ वें दिन मीठे भोजन का नैवेद्य देकर 'आक' का पौधा उखाड़ लें और उसकी 'मूल' (जड़) का ताबीज बनाकर गले या कमर में धारण करें । फिर जब कभी आवश्यकता हो, तो 'मन्त्र १' पढ़ें । हनुमान बीर आ जायगा और काम करेगा । अथवा दोनों मन्त्र पढ़कर 'ताबीज' को कान से लगाएँ, तो कान में 'हनुमान बीर' से उत्तर तथा मार्ग-दर्शन मिलेगा ।

२. नरसिंह बीर जागृति

मन्त्र १ : गणा गणा कमरी गणा; पायामधीं सोन्या सुवर्णाच्या वहाणा । वहाण गेली अग्नी निघाली; ओटयावर

होता कोल्ह्यासर दैत । जागती ज्योत जागत रहो । खेत देव दैत चले रे नरसिंह वीर; सिध्यांशी गुरु छू ।

मन्त्र २ : पहिला वीर नरसिंह वीर; नौ नरसिंह बीर, तू सुलतवार गरूड पर होके स्वार; हो जा तयार । नहीं होगा, तो उलटा गधा तेरी माँ पर चढ़े । कवड देश बङ्गाल की विद्या पुरी छू ।

विधि––'हनुमान बीर' के मन्त्र के समान ही उक्त मन्त्र की भी विधि है । अन्तर केवल इतना ही है कि 'आक' के स्थान पर 'आपटा' का पौधा एक डालीवाला लेना चाहिए । 'आपटा' का पेड़ महाराष्ट्र में होता है । इसे हिन्दी में क्या कहते हैं, ज्ञान नहीं । दशहरे के दिन 'आपटे' के पत्ते सुवर्ण समझकर बाँटे जाते हैं—

विशेष सूचना—'बराटी विद्या' में वेतालादि अन्य बीरों की सिद्धि अत्यन्त भय-प्रद है क्योंकि वेतालादि 'बीर' प्रचण्ड उत्पात करके ही जागृत होकर सामने आते हैं । साधक यदि डरा, तो उसके प्राण जा सकते हैं ।

'हनुमान बीर' दो प्रकार के हैं—(१) एक-मुखी हनुमान बीर और (२) पञ्च-मुखी हनुमान बीर ।

प्रस्तुत लेख में 'एक-मुखी हनुमान बीर' का ही विधान दिया गया है । ज्ञातव्य है कि 'बीर-सिद्धि' किन्हीं सक्षम गुरु द्वारा दीक्षित होकर ही करें । दीक्षा में 'गुरु-मन्त्र' कान में सुनाया जाता है । मन्त्र सुनते ही क्षण मात्र में अनेक चमत्कार होने लगते हैं और भविष्य में यह 'गुरु-मन्त्र' अत्यन्त सहायक होता है । जैसे-जैसे 'गुरु-मन्त्र' की जप-संख्या बढ़ती है, वैसे ही साधक को 'वाणी-सिद्धि' या 'वाचा-सिद्धि' हो जाती है । इससे सभी प्रकार की साधना में रक्षण और फल-प्राप्ति होती है । 'नाथ-पन्थ' में गुरु का महत्त्व अन्यतम है ।



श्रीभैरव प्रत्यक्ष-दर्शन-विधान

और

धन-सिद्धि-लाभ-कर

घण्टाकर्ण-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० ब्रजमोहन शर्मा 'घोरानन्दनाथ'

ब्रज जनरल स्टोर, १४६ पञ्जाबी मार्केट, बरेली (उ० प्र०)

श्री भैरव-दर्शन-विधान

मन्त्र –ओम् गुरूजी ! काला भैरूँ, कपला केश। काना मदरा, भगवाँ भेष। मार-मार काली-पुत्र, बारह कोस की मार। भूतां हात कलेजी, खूं हाँ गेडिया। जाँ जाऊँ, भैरूँ साथ। बारह कोस की रिद्धि ल्यावो, चौबीस कोस की सिद्धि ल्यावो। सुत्यो होय, तो जगाय ल्यावो। बैठ्या होय, तो उठाव ल्यावो। अनन्त केसर को थारी ल्यावो, गौराँ पार्वती की बिछिया ल्यावो।

गेले की रस्तान मोय, कुवें की पणियारी मोय। हटा बैठया बणियाँ मोय, घर बैठी बणियाणी मोय। राजा की रजवाड़ मोय, महलाँ बैठी राणी मोय। डकणी को, सकणी को, भूतणी को, पलीतणी को, ओपरी को, पराई को, लाग कूँ, लपट कूँ, धूम कूँ, धकमा कूँ, अलीया को, पलीया को, चौड़ को, चौगट को, काचा को, कलवा को, भूत को, पलीत को, जिन को, राक्षस को, बैरियाँ से बरी कर दे। नजराँ जड़ दे ताला।

इता भैरव नहीं करे, तो पिता महादेव की जटा तोड़ तागड़ी करे। माता पार्वती का चीर फाड़ लँगोट करे। चल डकणी-सकणी, चौडूँ मैला बाकरा। देस्यूँ मद की धार, भरी सभा में। छूं ओलमो कहाँ लगाई थी बार। खप्पर में खा, मुसाण में लोटे। ऐसे कुण काला भैरूँ की पूजा। मेरे राजा मेरे राज से जाय। प्रजा मेरे दूध-पूत से जाय। जोगी मेरे ध्यान से जाय। शब्द साँचा, ब्रह्म वाचा, चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—शनिवार की रात में साधना प्रारम्भ करे। एक तिकोना पत्थर बनाकर अपने साधना-स्थल के सामने स्थापित करे। उसके ऊपर तेल, सिन्दूर, पान चढ़ाए और नारियल रक्खे। प्रति-दिन साधना के समय तेल का दीपक जलाए, धूप देवे, छड़-छड़ीला-कपूर-केसर-लौंग धूप में डाले। रात्रि में नित्य निश्चित समय पर उक्त मन्त्र का २१ बार जप करे। इक्कीस वें दिन भैरव जी जब दर्शन दें, तो बाकला-पान-सुपारी दे, बकरे की पूरी कलेजी दे, एक बोतल शराब की धार दे। इस प्रकार भैरव जी सिद्ध हो जाएँगे तथा अभीष्ट काम करेंगे।

धन-दायक घण्टाकर्ण-विधान

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ओम् घण्टाकर्ण महा-वीर ! लक्ष्मीं पूरय पूरय, सुख-सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि – पञ्चोपचार-पूजन के पश्चात् 'धन-तेरस' के दिन ४० माला जप करे। चतुर्दशी को ४२ माला और दीपावली को ४३ माला उत्तराभि-मुख होकर जप करे। इसके बाद यथा-शक्ति नित्य जप करता रहे। कम-से-कम १ माला (१०८) जप अवश्य करे। 'माला' कमल-गट्टे की १०८ दाने की होनी चाहिए। इस मन्त्र के प्रभाव से लक्ष्मी-सौभाग्य प्राप्त होता रहेगा।



चमत्कारी शाबर यन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्रीयुत चन्दूलाल गण्डालाल शाह

१ सर्वार्थ-सिद्धि-दायक यन्त्र

(१) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' भाग ६ के पृष्ठ १३ में मैंने 'साधना-रक्षक मन्त्र-प्रयोग' दिया है। उसके साथ यदि इस 'सर्वार्थ-सिद्धि-दायक यन्त्र' को जोड़कर साधना करें, तो साधना में अवश्य वाञ्छित सिद्धि मिलेगी। 'मन्त्र' देवता की आत्मा है, तो 'यन्त्र' देवता का शरीर है। 'मन्त्र' के साथ 'यन्त्र' की रचना बड़ी सहायक होती है। श्रद्धा और विश्वास के साथ 'यन्त्र - रचना' करनी चाहिए। 'यन्त्र' का स्वरूप निम्न प्रकार है--

ईशान		पूर्व		आग्नेय
	अं अः ल क्षः	अ आ क ख ग घ ङ	इ ई च छ ज झ ञ	
उत्तर	ॐ औं श ष स ह		ऋ ॠ त थ द ध न	दक्षिण
	ए ऐ य र ल व	ऌ ॡ प फ ब भ म	ऋ ॠ त थ द ध न	
वायव्य		पश्चिम		नैऋत्य

विधि—उत्तम योग में उक्त 'यन्त्र' बनाएँ। कुमकुम में गुलाब-जल या गङ्गा-जल मिलाकर स्याही बना लें। भोज-पत्र के एक अखण्ड चौरस टुकड़े पर अनार की कलम या सोने अथवा चाँदी की शलाका से 'यन्त्र' को लिखें। उसे ताँबे की ताबीज में भरकर अच्छी तरह बन्द करें और लाल डोरे में पिरोकर अपनी दाईं भुजा में बाँधें।

साधना में सफलता मिलेगी। साथ ही अन्य कार्यों में भी अनुकूलता मिलेगी। आस्था रखें।

अथवा 'यन्त्र' से अङ्कित भोज-पत्र को शीशे में मढ़वाकर अपने साधना-कक्ष में रखें, तो भी साधना में सफलता मिलेगी।

(२) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६ के पृष्ठ ६२ में पं. श्री कृष्णानन्द मिश्र जी वैद्य ने सर्व - कार्य - सिद्धि - दायक 'यन्त्र' एवं रक्षा-कारक 'चौंतीसा यन्त्र' दिए हैं। इसके लिए पूज्य वैद्य जी का हार्दिक अभिनन्दन। उनका दिया हुआ प्रयोग भी वैसा ही उपयोगी है, जैसा मेरा। दोनों प्रयोगों में से कोई एक प्रयोग किया जा सकता है। साधना करने पर असफल न हों, इसके लिए प्रत्येक समय कुछ उपायों की खोज भी करनी चाहिए।

२ नव-नाथ सम्प्रदाय का सिद्ध शाबर-यन्त्र

पूर्व-काल में इस यन्त्र की साधना से 'नाथ-सम्प्रदाय' के कई सन्तों ने उच्च कोटि की सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। भगवान् श्री दत्तात्रेय इस विद्या के प्रस्तोता हैं। आदि शङ्कराचार्य जी ने भी इस यन्त्र का अवलम्बन कर कुछ कार्य किए थे। यह यन्त्र दुर्लभ एवं चमत्कारी माना गया है।

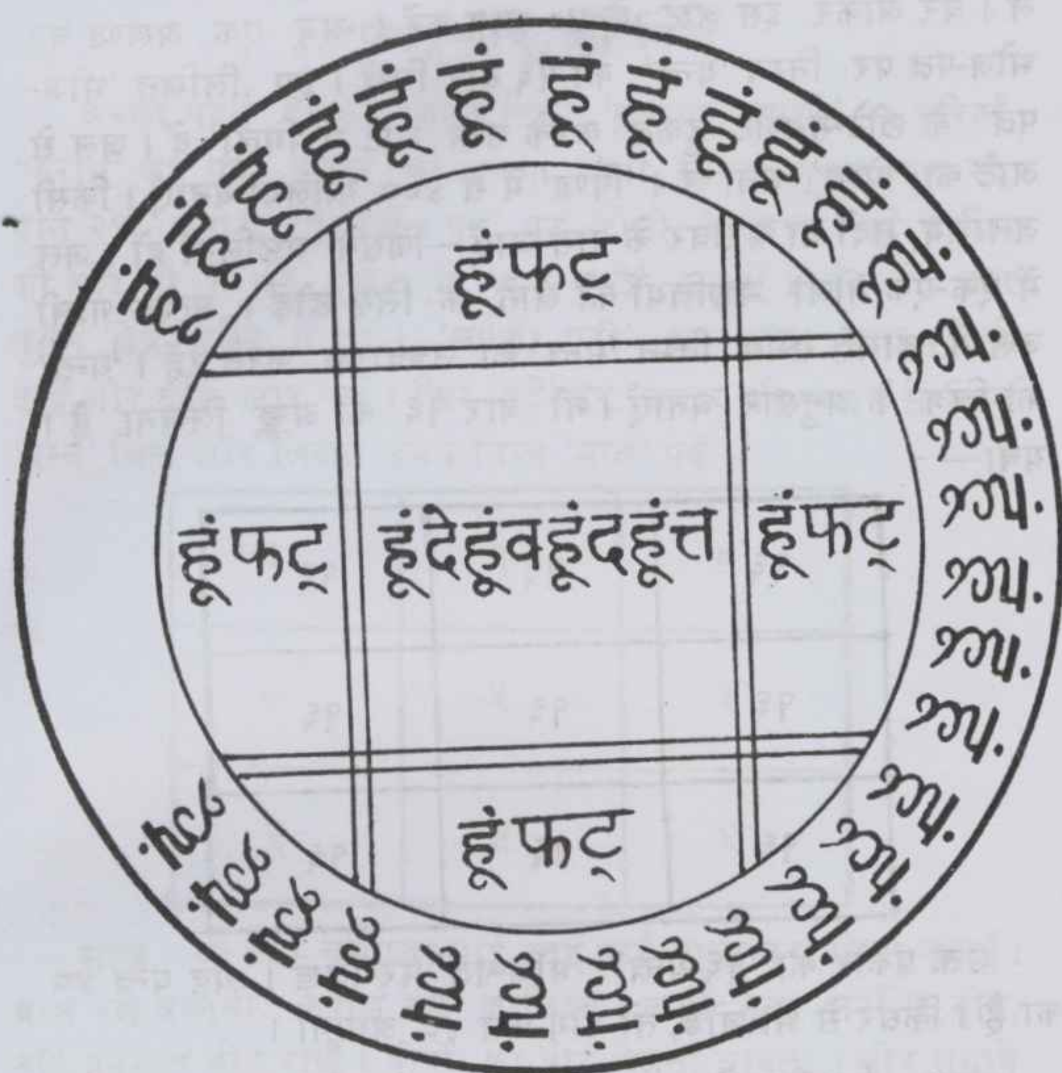
'शाबर-मन्त्र' में आस्था रखनेवालों के लिए यह यन्त्र अत्यन्त उपयोगी एवं मूल्यवान है। चित्र के अनुसार 'यन्त्र' को सादे कागज पर उत्तम योग में लिखकर, साधना - कक्ष में अथवा पूजा के कमरे में श्रद्धा से रखना चाहिए। 'यन्त्र' अखण्ड भोज-पत्र या सोने-चाँदी के पतरे पर भी बनवाया जा सकता है। भोज-पत्र के ऊपर 'अष्ट-गन्ध' से सोने-चाँदी की शलाका से लिखना चाहिए।

प्रत्येक 'यन्त्र' देव-स्वरूप है। 'यन्त्र' को साधना-कक्ष में रखना चाहिए। नित्य धूप-दीप इत्यादि से पूजन करना चाहिए। आस्था रखनी चाहिए और नित्य दर्शन करना चाहिए। कभी ज्यादा विपदा आने पर 'यन्त्र' में दिए गए बीज-मन्त्र का यथा-शक्ति - स्मरण करना चाहिए। साथ में निम्न मन्त्र का यथा-शक्ति जप करे—

मन्त्र – ॐ नमो शाबरी शक्ति! मम अरिष्ट निवारय, मम 'अमुक' कार्य-सिद्धं कुरु कुरु स्वाहा।

'अमुक' के स्थान पर जो कष्ट हो, उसका चिन्तन करे और 'जप' करे। जब 'यन्त्र' बनाए, तब वर्तुल के बीच के चौरस में 'देवदत्त' के स्थान पर, वैसे ही अपना नाम जोड़कर लिखना चाहिए।

यन्त्र का चित्र



१ वर्तुल (वृत्त) में ३० बार 'हूं', २ चारों दिशाओं में 'हूं फट्', ३ मध्य में चार बार 'हूं', जिनके मध्य में तथा अन्त में क्रमशः 'दे'-'व'-'द'-'त्त'— ये चार अक्षर लिखें। 'देवदत्त' कल्पित नाम है। इसके स्थान पर अपना नाम या जिसका कार्य हो, उसका नाम लिखें या लिखवाएँ।

मन्त्र को स्मरण करते हुए 'यन्त्र' के पास बैठेंगे, तो चिन्तित कार्य में सफलता मिलेगी।

३. धन-प्राप्ति के लिए अचूक प्रयोग

किसी शुभ दिन में ढाई रत्ती सोना खरीदें। थोड़ी ही देर बाद इस सोने को बेच दें। जो रुपए मिलें, उनसे गेहूँ का आटा खरीद लें। घर आकर इस आटे के ४० भाग करें। अब एक अखण्ड बड़े भोज-पत्र पर निम्न 'यन्त्र' को १६ बार लिखें। इस लिखित 'भोज-पत्र' के छोटे-से-छोटे टुकड़े करके उक्त आटे में मिला दें। जल से आटे का 'पिण्ड' बना लें। 'पिण्ड' में से ४०० गोलियाँ बनाएँ। किसी जलाशय, नदी या सरोवर के पास जाएँ—जिसमें मछलियाँ हों। जल में एक-एक गोली मछलियों को खाने के लिए छोड़ें। प्रत्येक गोली जल में डालते समय निम्न 'मन्त्र' का उच्चारण करते रहें। 'यन्त्र' को चित्र के अनुसार बनाएँ। नौ बार १६ का अङ्क लिखना है। यथा—

१६	१६	१६
१६	१६	१६
१६	१६	१६

उक्त प्रकार का '१६ यन्त्र' 'भोज-पत्र' पर लिखें। यह यन्त्र ४८ का है। किधर से भी जोड़ें, तो योग-फल ४८ आएगा।

मन्त्र ईश पीरा मेमन्द वीरा, साथ चले और काज करे। धन दे, मुराद पूरी करे। जो न करे, तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई। शब्द साचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विशेष –(१) जैसा लिखा है, वैसा ही लिखें या जपें। कुछ भी परिवर्तन न करें। 'यन्त्र' लिखने में अनार की कलम ८ अंगुल की बनाएँ। 'अष्ट - गन्ध' से या 'कुंकुम' से पश्चिम-मुख होकर लिखें।

'मन्त्र' का यथा-शक्ति अधिक-से-अधिक जप करें। प्रयोग के पहले और अन्त में 'मन्त्र' का जप करें।

(२) इस प्रयोग में 'मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र' तीनों का उत्तम समन्वय है।

(३) 'अमृत-सिद्धि', 'रवि-पुष्य' या 'गुरु-पुष्य योग' इत्यादि जिस दिन हों, उसे 'शुभ दिन' माना जाता है—किसी भी 'पञ्चाङ्ग' (पत्रा, तिथि-पत्र) या ज्योतिषी से जान सकते हैं।

४. 'पन्द्रह-यन्त्र' की विधि

अच्छा मुहूर्त देखकर अपने निकट 'सवापा लपशी' १० पूरियाँ, 'फरास' का पट्टा, अनार की कलम, रोली, चावल, गूगल, फूल २१, पान २१, सुपारी २१ रखें। पट्टे पर रोली बिछाकर पट्टे के सिर की ओर घी से भरे दीपक में 'फूल-बत्ती' जलाएँ। पैर की ओर गूगल 'खेवे' अग्नि में धरें। 'लपशी पूरी' का आधा भाग पट्टे की दाईं और बाँईं ओर रखें। फिर 'पट्टे' पर अनार की कलम से निम्न 'यन्त्र' लिखें और लिखते समय निम्न 'मन्त्र' पढ़ें—

६	१	८
७	५	३
२	९	४

मन्त्र—ॐ नमो चामुण्डा माई आई धाई, मूआ मरा लिया उठाई। वाल रखे वालनी, कपाल रखे कालिका। दाहीं भूजा नरसिंह वीर, बाँईं हनुमन्त वीर राखै। वीरों का वीर खेलता आवता। वीर लगावे जो यह घट-पिण्ड की रक्षा करे। न करे, तो उलट देव। वाही पर पड़े। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

सर्व-कार्य-सिद्धि की विधि—आक के पत्तों पर १५ दिनों तक उक्त 'पन्द्रह-यन्त्र' को अनार की कलम से लिखें। पत्तों के नीचे शत्रु का नाम लिख दें और आग जलाएँ—बैरी का नाश हो। अथवा उत्तर

दिशा में बैठें, और दक्षिण दिशा को मुँह करके लोहे की कलम से लिख-लिख कर १०० बार मिटावें। शुभ काम के लिए शुक्ल पक्ष में शुभ दिन और अशुभ कार्य के लिए कृष्णपक्ष में अशुभ दिन से आरम्भ करें। ब्रह्मचर्य-पूर्वक लिखें। मूँग और चावल का भोजन करें। अथवा 'यन्त्र' को लिख-लिख कर नदी में बहावें। जो 'यन्त्र' बाहर आ जाय, उसे अपने पास रखें, तो सम्पूर्ण काम सिद्ध होंगे।

सोमवार की प्रयोग-विधि सोमवार के दिन सफेद दूब, केसर सफेद, घिरमिटी और कपिला गाय का दूध--इन सबको पीस कर सायं-काल उक्त 'पन्द्रह-यन्त्र' को उलटी रीति से लिखें। फिर उसे भुजा तथा कण्ठ में बाँधें, तो राजा भी वश में हो।

मङ्गल की प्रयोग-विधि—कौए की पङ्ख की कलम से, कौए के रक्त से किसी शव के कपड़े पर 'नाम' लिखकर उसी के द्वार के सामने पृथ्वी में गाड़ दें, तो उस व्यक्ति का 'उच्चाटन' होगा।

बुध का प्रयोग--नागकेशर और गोरोचन से लिखकर बत्ती बना लें। सरसों के तैल में उसे जलाकर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल पारें और पूर्वोक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर उस काजल को लगाएँ, तो 'वशीकरण' होगा।

वृहस्पति का प्रयोग–हल्दी, गोरोचन और घृत--इन तीनों को मिलाकर 'यन्त्र' को लिखें। बीच में 'नाम' लिख दें। अब उसे अपने आसन के नीचे दबा लें, तो उसका 'आकर्षण' होगा।

शुक्र का प्रयोग—कपूर, बच, कूट और शहद से 'यन्त्र' को लिखें, तो इसे देखकर धन और सर्वस्व-सहित स्त्री चली आती है।

शनि का प्रयोग—चिता की लकड़ी की कलम से मुर्गे के रुधिर की स्याही से उलटा 'यन्त्र' लिख श्मशान में गाड़ें, तो 'मारण' होगा।

रवि का प्रयोग—आक के दूध में श्मशान की राख मिलाकर उक्त 'यन्त्र' को लिखें और नीचे बैरी का नाम लिखकर आग में डाल दें तथा पूर्वोक्त मन्त्र को १०८ बार जपें, तो शत्रु विक्षिप्त हो जायगा।

'यन्त्र' लिखने की कलम–सर्व-कर्म-सिद्धि के लिए चमेली की कलम, 'आकर्षण' के लिए जामुन की, 'स्तम्भन' के लिए बड़ की, 'वशीकरण' के लिए 'कुश' की, शुभ कार्य के लिए सोने या चाँदी की कलम से लिखे। केशर, चन्दन, अगर, कपूर और कस्तूरी को मिलाकर स्याही बना ले। उसी से लिखे। ●●

अनुभूत

भुवनेश्वरी कर्ण-पिशाचिनी मन्त्र

और

वशीकरण 'तिलक'-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्रीयुत धर्मवीर शास्त्री

'भगवती भवन', कसार, बहादुरगढ़, रोहतक (हरियाणा)

भगवती भुवनेश्वरी कर्ण-पिशाचिनी

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वरो वाग्वादिनी कर्ण-पिशाचिनो साधकाय सिद्धि-दातायै नमः ॐ ॥

विधि—पहले किसी पवित्र नदी या जलाशय में नाभि अथवा कण्ठ-पर्यन्त जल में खड़े होकर, उक्त मन्त्र का ५०० बार 'जप' करे। 'जप' के बाद बाहर निकलकर तर्पण-मार्जन, होम भी कर लें, तो उत्तम होगा। पाँच कन्याओं और तीन छोटे बालकों को भोजन करा-कर सन्तुष्ट करे। इस प्रकार करने पर उक्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है। आगे आवश्यकतानुसार इसका 'प्रयोग' निम्न प्रकार करे—

प्रयोग-विधि—पहले किसी शुद्ध और पवित्र स्थान पर 'पन्द्रह का यन्त्र' बनाएँ यथा—

८	१	६
३	५	७
४	९	२

यन्त्र सम-भुज और अनुलोम-क्रम से लिखें। प्रत्येक अङ्क के साथ भुवनेश्वरी बीज 'ह्रीं' भी लिखें। प्रति-दिन ११ बार 'यन्त्र' लिखे और एक माला 'जप' करे। दस हजार 'यन्त्र' लिखते ही साधक की वाणी सिद्ध हो जाएगी। भूत-भविष्य-वर्तमान कथन का आश्चर्य-जनक फल प्राप्त होगा। शान्ति-वशीकरणादि प्रयोग सहज ही सिद्ध हो जाएँगे, किन्तु अनुचित कार्य कदापि न करें।

वशीकरण 'तिलक'-मन्त्र

कई व्यक्ति हीन व्यक्तित्व की भावना से ग्रसित होते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः यह कहते हैं कि उनकी कोई नहीं सुनता। अथवा कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिनका व्यक्तित्व तो आकर्षक होता है, किन्तु वे किसी से अपना कार्य करवा नहीं पाते। ऐसे लोगों के लिए प्रस्तुत 'तिलक'-प्रयोग अत्यन्त लाभकारी है। इस 'प्रयोग' को एक जैन मुनि ने अपने गृहस्थ सेवक को बताया था। मैंने उसी गृहस्थ सेवक से इसे प्राप्त किया।

मन्त्र—ॐ नमो तारा त्रिपुरा तोटला तीनों बसं कपाल। अमृत-टीका मैं करूँ, शत्रु जाय पयाल।

विधि—पहले उक्त मन्त्र का होली, दीपावली या ग्रहण-काल में प्रति-दिन २ माला 'जप' करे। बाद में 'प्रयोग' के समय २१ माला 'जप' करे और मन्त्र में जहाँ 'शत्रु'-शब्द लिखा है, उससे पहले साध्य के नाम का उच्चारण करे। 'प्रयोग' के समय अपनी हथेली पर अपना थूक लेकर 'जप' करे और 'जप' के बाद उससे अपने माथे पर 'तिलक' कर ले। 'तिलक' लगाकर साध्य व्यक्ति के पास जाने पर सभी कार्य सफल होंगे। अनैतिक कार्यों में यह 'प्रयोग' कदापि न करे।



शाबर सर्प-विद्या

प्रस्तुत-कर्ता : श्री महेशप्रसाद

'महेश-भवन', अहमदगञ्ज, पजावा चौक, लखनऊ (उ. प्र.)

१. **बन्द लगाना**—ई युग आवे, उइ युग जावे। अट्ठारह गण्डे नदी नाँध आवे, नाँध जाए। घोड़ा-गदहा के सींग न जामे। धरती उलट-पलट हो जाय। मोर बन्ध काटै, न कटै। मैं काटु, तो कटे। गुरु काटे, तो कटे। गुरु-भाई काटे, तो कटै और कोई काटे, न कटै। दुहाई श्री मोहम्मद की।

विधि -जब किसी को सर्प काट ले, तो जहाँ पर सर्प ने काटा हो, वहाँ उक्त मन्त्र पढ़कर मिट्टी से चारों तरफ रेखाएँ खींच दे तथा ऐसे ही रेखाएँ सीने व गर्दन में भी खींचे। इस तरह विष बँध जाता है। विष ऊपर नहीं चढ़ता।

२. **बन्द खोलना**—सर्प सोने का बना मोगरा, सेम्बर का गुरु-दण्ड, धर कान्धे हनुमन्त धय कै, कटै 'सहसों' बन्ध। दुहाई लोना चमारीन की।

विधि -जब बन्ध खोलना हो, तो थोड़ी-सी मिट्टी लेकर मन्त्र पढ़े। जहाँ 'सहसों' लिखा है, वहाँ जितने बन्ध खोलना हो, कहे। मन्त्र पढ़ते हुए मिट्टी रोगी के ऊपर डाले। बन्ध खुल जाएगा।

३. **सर्प-झारना**—(क) झन-झन थारा बाजे, ऊपर बाजे बेला। गुरु हमारे झारन बैठे, बासदेव के चेला। कामरू में ढोल ढमके, चहुँ दिश पड़ी पुकार। सर्प-बिष खींचो, शिव-शङ्कर की आँस, सर्प-विष लै धरु उतार। दुहाई श्री मोहम्मद की।

(ख) कङ्कड के घोडिला भये ब्रह्मा, भये लगाम चाँद, सूरज। दो पैग भए चढ़े बीर रहमान। आलमगीर पलटते आवे। मन माथे फह-राय खड़े मोहम्मद, हाँकै मारे, विष नहीं संसार। सब त्रिष लय धरु उतार, दुहाई श्रीमोहम्मद की।

(ग) सावन गरजे, भादो बरसे। काहे नाग तु काटा ? तहं दिन की सुध भूल गयो, जब महादेव धर बाँधा। पूँछ मरोरे, फन फटकारे,

जियरा डारौ मार। अरे ! विष-हरा का डासौ, डासौ पराई नार। विष का खावा का मारे, उतो डारे मार। अब बाँह छुड़ाए कहाँ जात, मैं राजा वसुकि का चेला। दुहाई श्रीमोहम्मद की।

४. लहर जगाना (जब मनुष्य विष से बेहोश हो जाए)— पच्छे सविता कब उगे, गऊ खीर न खाए। पृथ्वी प्रलय होत हैं, जाग काल-निर्मोहिया। नौ लाख पाटन, एकै कट्या सो सुन जाग, चेत सम्भार। श्री पाटन कहु सीता-राम।

विधि—जब किसी व्यक्ति को लहर मार दे, तो दो व्यक्ति उस व्यक्ति के कान में उक्त मन्त्र पढ़कर फूंकें तथा तेज स्वर में बोलें— 'सो सुन जाग, चेत सम्भार। श्री पाटन कहु सीता-राम।'

विष झारने के लिए विष दूर करने के मन्त्रों से नीम की पत्तियों से झारे।

५. पानी पिलाना—पानी-पानी क्या करे, पानी जग-संसार। एक तो पानी मृत्य-लोक में, दूजा दरू दुवार। तीजा पानी समुद्र-पार, जह[1] मेघ - मेघनी भरन को जाय। मेघ - मेघनी ऊहाँ बरसो, जहाँ सर्पा पिए अघाय। हांक देत महादेव, गौरा-पार्वती ! जन का पानी देउ पियाय। दुहाई महादेव, गौरा-पार्वती की।

विधि—यदि किसी व्यक्ति को विष चढ़ा हो और उसका मुंह सूख रहा हो, उसको प्यास लगी हो, तब उक्त मन्त्र द्वारा पानी पिलाए। मन्त्र पढ़ता जाए, पानी पिलाता जाए और उससे पूछता रहे कि 'प्यास मिटी या नहीं ?' जब वह व्यक्ति कहे 'मिटी', तो मन्त्र पढ़ना बन्द कर दे। मन्त्र पढ़कर कान में फूंक भी सकते हैं।

६. चौकी काल भैरव की—काल - भैरव कबरी-जटा, रात-दिन खेले मरघटा। मधु-मछरी का भोजन करे। सभा बैठ सेवा ले, सगरी ढीठ बाँध दे। और को देखे जरे-मरे, हमको देख हँसै-खेले। सत्य करै नारसिंह देवता। आसानी बाँधूँ, मासानी बाँधूं, चुरैल-चाटा बाँधूँ, नऊत नगहर बाँधूँ। भूत-खबीश बाँधूं। बाँध-बूधकर अपनी चौकी में कर ले, तब मैं जानूँ, काल-भैरव की चौकी। दुहाई लोना चमारिन की।

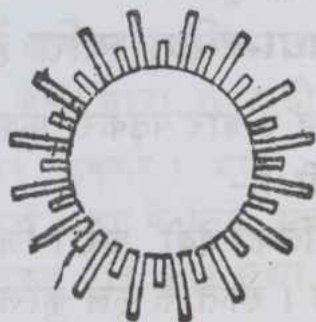
७. चौकी पीर बिरहना की—बिस्मिल्ला रहमाने रहीम, नङ्गा तिरकस, नङ्गी पीठ, नङ्गा चला बरैहना पीर। माँ पूछे—'पूत !

कहाँ चले ?' 'दुनिया माँ भूत-खबीश, उसके लिए मैं चला। ईठ काटूं, ढ़ीठ काटूं, टोना काटूं, टम्बर काटूं। राह-बाट, गली-घाट, भूत-खबीश बाँध बूंध कर अपनी चौकी में कर ले, तब मैं जानूं, बरैहना पीर की चौकी। दुहाई सैय्यद बरैहना पीर की।

विधि—जब किसी बच्चे को डाइन ने घर लिया हो या टोना-टोनहिन द्वारा कर दिया गया हो, तो बच्चे को सामने बैठाकर उक्त मन्त्र पढ़कर जमीन पर खड़ी रेखाएं बनाते जाएँ। इस तरह टोना-टोनहिन दूर हो जाएगा अथवा, उक्त मन्त्रों को पढ़कर आग में लोबान की ७ या २१ बार आहुति दें। अथवा, उक्त मन्त्र से लौंग फूंक कर रोगी को दें तथा लौंग को ताबीज में भर कर रोगी के गले में बाँधें। इससे सभी प्रकार के भूत-प्रेत से मुक्ति मिल जाएगी।

८. सर्व - श्रेष्ठ चौकी—कड्कड़ के घोड़िला भए, ब्रह्मा भए लगाम। चाँद-सूरज दो पैग भये, चढ़े वीर रहमान। आलमगीर पलटते आवे, मन माथे फहराय। खड़े मोहम्मद हाँकै, मारे भूत-चुड़ैल। मरहा बाँधूं, देव-दानव-ब्रह्म-राक्षस बाँधूं, चौंसठ जोगिनी बाँधूं, मरी-मलछान बाँधूं, मरघट-मसान बाँधूं, डीठ-मूठ-टोना-टम्बर बाँधूं, किया-धरा बाँधूं, चारों दिशा बाँधूं, गल्ली-घाट बाँधूं, बाँध के नबी रसूल के हवाले कीन। तिपर दुहाई नबी रसूल की। दुहाई शेख तकी उस्ताद की। तिपर चौकी चम्मर-पोश। तिपर चौकी औघड़-नाथ। तिपर चौकी नौलखे जिन्द की। दुहाई सुलेमान पैगम्बर की। दुहाई श्रीमोहम्मद की।

विधि—उक्त मन्त्र से भूत-प्रेत-ग्रस्त व्यक्ति को पहले लौंग फूंक कर दे। साथ ही लौंग फोड़कर खाने को भी दे। इससे वह ठीक हो जाएगा।



छत्तीसगढ़ में प्रचलित प्रभावशाली

शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री के० के० दुबे

नया टिस्ट्रा, पो० बाल्कोनगर, जि० बिलासपुर (म० प्र०)

१. शरीर-बाँधने का मन्त्र

(१) एढ़ा बाँधों, बेढ़हा बाँधौं। बाँधौं आपन काठा। साढ़े तीन हाथ के अपन तन बाँधौं। धरमदास के दया। मोर बाँधे, मोर गुरु के बाँधे, महा-देव - पारवती के बाँधे। अबले देह साढ़े तीन के तन बँधा जा।

(२) आसन बाँधौं, पासन बाँधौं। बाँधौं चारों द्वार। तोला बाँधौं, तोर गुरुवाइन ला बाँधौं। जावे कोन द्वार। मोर बाँधे; मोर गुरु के बाँधे। महा-देव के बाँधे, चारो द्वार बँधा जा।

विधि—२१ बार उक्त मन्त्र में से कोई एक मन्त्र पढ़कर अपने शरीर पर फूँक मारने से 'शरीर'-रक्षा होती है।

२. बाहरी बाधाओं से रक्षा के लिए घर बाँधने का मन्त्र

जल बाँधों, जलाइन बाँधों। जल के बाँधों कोरा। ३३ कोट के देवता बाँधों। सुमर बाँधों टोना। टोना के देवी बाँधों। गीरी ले उठा। जञ्जीरा दे पहिराए। सब जञ्जीरा मा जा बँधाई। मोर बाँधे, मोर गुरु के बाँधे। महा-देव-पारवती के बाँधे। जा, बँधा जा। कबीर धरमदास के बाँधे म बँधा जा। जे दिन पानी बिना कपसा फूटय, जे दिन मोर बँधना छूटय।

३. बाधा-ग्रसित व्यक्ति हेतु मन्त्र

विधि – निम्न मन्त्र ७ बार पढ़कर फूँकने से बाधा-ग्रसित व्यक्ति की बाधाएँ दूर हो जाती हैं–

(१) कल-कल कालिका देवी करे। जिहाँ पठोवा, तीहाँ जावे। छाती बैठ, करेजा खावे। रकत के कुल कुल्ला करवे। बैरी के अवरदा

ला। खण्डित करके आवे। जब पारवती के पूजा पावे। जब पारवती के सच्चा कालिका देवी कहावे।

(२) अष्टङ्गी देवी, डेरी हाँथ खप्पर। जेवनी हाँथ कत्ता। सवा हाँथ के जीभ ला काढ़े। जीभ काढ़ देवी दौड़े। टोनीन के बस मा। ओ जेसना कहे, जौन कहें - मोर काम कर, पूरा सिद्ध होय। जब अपन तन के खून के पूजा पाय, तब पारवती के नाम कहाय।

(३) हर-हरी देवी, मर-मरी पाठ। चघजा देवी, कान कपार। फलानिन के कँवल करेजा ला। चघावथों ये हर मई। काली मई मा चघ जा।

(४) मर मरों, मर जगाओं, मर के करो। अहारा देवी को करजा, बुक्का चढ़ाऊँ। छाती फोर के करेजा हेरों। कोन चढ़ाही ? महा-देव चढ़ाही। कोन चढ़ाही; पारवती काकर ला चढ़ाही। फलाना के ला, कतका उमर के ला चढ़ाही। का मा चढ़ाही ? विमला देवी मा चढ़ाही। हे देवी ! मैं तोला फलाना। ला चढ़ा दें, एकर उमर घटा के तै ले ले।

(५) खप्पर धरे आय, खप्पर धर के बुल आय। एक हाँथ मा खप्पर धरे, एक हाथ मा खरहरा। बैरी के जान और तोर कत्ता। हे देवी ! बैरी के जीव ला। खरहरा माँ खरर के ले लान तोला। मैं चढ़ा देहें, तै ले ले।

(६) मरका कुम-कुम कान-नाक जमदूत। कोन-कोन दूत ? अबोल मसान दूत। जा दसों दरवाजा मा बैठ जा। अबोल परेतीन दूत जा। दसों दरवाजा मा बैठ जा। अबोल सोनैता दूत जा। दसों दरवाजा मा बैठ जा। नाम छिपावे तेरा, नाम छिपावे मेरा। नाम लेवे दूसरा के। काकर खाय, महा-माई परघनीन के खाय। नीखावे त तोर मां-बहन के कसम खावे।

(७) मूठ मारौं, मुर्दा मारों। मुर्दा लेऊ जगाए। ई मुर्दा के कारण गुरवाइन अपजस पाय। जेला मारों, तेहर ठीक रजाय।

चक्कर-चक्कर, चार चक्कर। मारों चक्कर, सुखाए रकत। काकर मारे, अर्जुन के मारे। गुरु के मारे, महा-देव-पारवती के मारे। मारे फलाना के। लहू रकत ठाढ़े, ठाढ़ सुखा जा।

(८) नदी करे घर-घर टेना। घर रोना परे, छै आगर छै कोरी। तोर टोना खाय, छै आगर छै कोरी। तोर पै दून खाय, छै आगर छै कोरी। काकर खाय, महा-माई परधनीन के खाय। नी खावे, ता तोर मां-बहन के कसम खावे।

५. दुल्हा देव के मन्त्र

थर-थर थर-थर धरती करै, कुवारी अङ्ग भहराव। गुनिक गारी, गुनिक जागो। गुनिक ला, लानो बलाई। हाँक परे दुल्हा देव के। सब देवता ला, नेवत बुला। पहली जनम, बङ्का मा थानो। दूसरे जनम, धेनुवा भगत। तीसरे जनम, दुल्हा देवा नाम धराए। हाँक परे दुल्हा देव के। सब देवता ला, नेवत के लाय।

६. ठाकूर देव के बोल

जग-नारायण परमेश्वर कहाए, माई के बेटो की जाई के। वेद ब्रह्मा के बेटा, बालक ठाकूर कहाए। चढ़े हंसा घोड़ा। पाँव में पदुम, माथा में मुकुट। २१ सों बहिनी के दुलरवा, गाँव के रक्षा कर भाई।

विशेष—पूर्ण विश्वास के साथ, मङ्गल या शनि की रात्रि में अथवा किसी पर्व पर उक्त मन्त्रों का एक ही 'जप' करने मात्र से उक्त मन्त्र जाग्रत हो जाते हैं। 'पूजा' में सिन्दूर, चावल, नारियल, नीबू चढ़ाना चाहिए।



स्वामी अक्षोभ्यानन्द जी सरस्वती की कृपा से प्राप्त :

सिद्ध शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० कृष्णानन्द मिश्र 'वैद्य'
ककरा, दुबावल, प्रयाग-राज (उ. प्र.)

१ **सर्प-निवारण हेतु सिद्ध मन्त्र**—विनसे विनसे ग शिकार, ताके राजा गुल्ल पठान। गोरसठि जागु-जागु, दोहाई राजा हंस की। दोहाई राजा सुग्रीव की। दोहाई राजा महादेव-गौरा-पारवती-लोना चमाइन की। अल्लिफ बे छू।

विधि—पहले किसी एकादशी या पूर्णिमा को उक्त मन्त्र का २१ बार 'जप' कर महादेव - पार्वती व लोना चमारिन के नाम 'हवन' करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। 'दीपावली' को करे, तो अति उत्तम।

बाद में जब किसी को साँप काटे, तो पहले कटे हुए स्थान को बाँध दे, जिससे रक्त-प्रवाह बन्द हो जाए और विष फैलने न पाए। फिर एक फूल-धातु की थाली ले। थाली की पीठ पर कलम व स्याही से पाँच बार 'राम-राम-राम-राम-राम' लिखे। पुनः थाली पर ५ बार उक्त मन्त्र पढ़कर विष-ग्रस्त व्यक्ति की पीठ पर लगा दे। थाली पीठ पर चिपक जाएगी। इसके बाद मकान की 'ओरौती' का एक 'खप्पर' लेकर उसे फोड़कर छोटे-छोटे टुकड़े बना ले। तब उक्त मन्त्र पढ़ता जाए और 'खपरे' का एक-एक टुकड़ा क्रमशः थाली पर फेंकता जाए। जब थाली पर बोझ ज्यादा हो जाए, तब झाड़े हुए खपरे के टुकड़ों को फेंक दे और थाली पर पुनः ५ बार 'राम-राम' लिखकर, मन्त्र पढ़कर थाली पीठ पर चिपका दे। ऐसा तब तक करता रहे, जब तक विष समाप्त न हो जाए। विष की समाप्ति पर थाली चिपकेगी नहीं।

(२) गोरसठि-गोरसठि नदी किनारे बेल क बिरछा, उह पर चढ़े सोन कर फूल। न जौ भरि घटै, न जौ भरि बाढ़े। टटिया बिचे गोह चिल्लाइ, काहे मा दरवाजी शेख सती विख-हरी माता। विक्खा निर-विक्खा कर अली मुहम्मद!

विधि—उक्त मन्त्र पढ़ता हुआ झाड़ता जाए। विष का प्रभाव दूर हो जाएगा। झाड़ने के लिए जब रविवार के दिन 'पुष्य' - नक्षत्र लगे, तब उस दूधवाले वृक्ष से, जिस पर 'पीपल' जम गया हो, 'ॐ नमः शिवाय' पढ़कर ८ या १० अंगुल की छोटी-छोटी टहनियाँ तोड़-कर रख ले। इन्हीं टहनियों से झाड़े। मन्त्र पढ़े और एक-एक 'टहनी' को कान में लगाए। 'टहनी' को जोर से पकड़े रहे, नहीं तो 'टहनी' कान के भीतर चली जाएगी। दूधवाले वृक्ष - बरगद, महुआ, कटहल आदि हैं। इन वृक्षों पर 'पीपल' जम जाता है। इसी प्रकार के किसी भी वृक्ष की ही 'टहनी' लें।

२ घाव थाँभने का मन्त्र—जल बाँधो जलाहल बाँधौ, मुनै-मुनै की धार। गोरखनाथ की लाख दोहाई। मेरे थाँभै घाव न पिराइ। दोहाई गोरखनाथ की, छू।

विधि—उक्त मन्त्र पढ़कर 'पथर - जटा' (पुनर्नवा) के रस को घाव में भर दे। रस को १ दिन तक भरा रहने दे। घाव अच्छा हो जायगा।

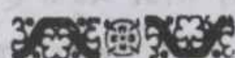
३ कीड़ा झारने का मन्त्र—अरसी रेडी और करियारी। खोरी-खोरी मगवा पुकारी। मेमरे का कोल्हू। रेवा कै जठि, यह सब पेरौ आठ घरी। नौ राति दोहाई ईश्वर महा-देव की, विष माटी होइ जाइ। काली पुत्री, काली राति। पुत्री पठयेउ आधी राति। चट मारु, पट मारु। मेरे पास, दोहाई ईश्वर महादेव की।

४ खोरा चलाने का मन्त्र—मोहन मारन वीर उचाटन। एते सब जवाल है। जानै कुरङ्ग फिरङ्ग की बातें। कामरू देस, कामाक्षा की दोहाई। खोरा चलै, वार न लागै। दोहाई कामरू के, कमक्षा की भवानी की। दोहाई इसमाइल जोगी की—खोरा चलै, देर ना लागै।

५ आग बाँधने का मन्त्र—अनत - बनत की काठी।.सहज-महज की चूल्ह। सीता पोवहि, वरा लक्ष्मन झोकहि। नटी कराही भइठी, जूरि होइ जाइ। ईश्वर महादेव की दोहाई। दोहाई लोना चमारिन की।

६ हिङ्गलाज माँ का मन्त्र—ॐ निरङ्कार भवानी, इन्दर की बेटी, ब्रह्मा की साली। दोनों हाथ बजावै ताली, जा बैठी पीपल की डाली। इन्द्र मोहूँ, ब्रह्म मोहूँ। मोहूँ सारी दुनिया। दुहाई हनुमान की। दुहाई हिङ्गलाज की। दोहाई गरुड़-नारायन की। वीर धनञ्जय, दुहाई लोना चमाइन की।

विधि—उक्त मन्त्र का नित्य १२१ बार 'जप' करे। गाय का दूध, तुलसी - पत्र, बिल्व - पत्र, गङ्गा - जल, पीपल की कोमल पत्ती, ५ लौंग, कपूर, घी, गुड़ को मिलाकर आम की लकड़ी में सात बार 'हवन' करे। इससे सभी प्रकार की विपत्तियों का नाश होता है।



भूल-सुधार

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६ के पृष्ठ २० पर प्रकाशित 'परीक्षित शाबर मन्त्र' में कुछ अशुद्धि है। कृपया उसे निम्न प्रकार से शुद्ध करके प्रयोग में लाएं—

पृष्ठ	प्रयोग	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१	२ (२)	२	पीछे हनुमन्त	पीछे भैरों
२१	३	१२	मेरी पञ्ज करो	मेरी पञ्ज पीर करो
२२	४	१	नेगुरे	बेगुरे
२४	११	१७	उच्ची लम्भी	उच्ची लम्मी
२७	शाबर-मन्त्र-कोश	७	ढाकाँ	ठाकाँ

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० सूरजप्रकाश सारस्वत

वड़ोटी, रैल, हमीरपुर (हि० प्र०)



साधकों एवं प्राचीन पाण्डुलिपियों से प्राप्त

शाबर-मन्त्र-साधना

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा

१४५ नया बाँस, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.) २५१००६

प्रस्तुत 'शाबर मन्त्र' सिद्ध साधकों एवं प्राचीन पाण्डुलिपियों से प्राप्त हैं। इन मन्त्रों की सिद्धि करने में किन्हीं विशेष नियमों की आवश्यकता नहीं, किन्तु यथा-शक्ति जितने भी नियमों का पालन हो सके, उतना ही उत्तम फल शीघ्र प्राप्त होगा।

(१) सद्-बुद्धि-विद्या-प्राप्ति हेतु स्तुति

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश पाहि माम्। जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश रक्ष माम्॥ जय सरस्वती, जय सरस्वती, जय सरस्वती पाहि माम्। जय अम्बे, जय अम्बे, जय अम्बे, जग-जननी, जय जगदीश्वरी, माता सरस्वती, मोह-विनाशिनी॥

जय अम्बे, जय अम्बे, जय-जय जग - जननी, जय-जय अम्बे। जय जगदीश्वरी माता सरस्वती मोह - विनाशिनी जय अम्बे॥ जय दुर्गे, जय दुर्गे, जय-जय दुर्गति-नाशिनी, जय दुर्गे। आदि-शक्ति पर-ब्रह्म-स्वरूपिणि भव-भय-नाशिनी जय दुर्गे॥

अम्बा की जय-जय, दुर्गा की जय-जय, सीता की जय-जय, राधा की जय-जय। गायत्री की जय-जय, सावित्री की जय-जय, गीता की जय - जय, माता की जय - जय। जपु जगद्-अम्बा ग्रहि कर माला, बसो हृदय में बहु-चर बाला॥

कालो, काली, महा-काली, भद्र-काली नमोऽस्तु ते ।
देवि, देवि, महा - देवि, विष्णुर्देवि ! नमो नमः ।।

नित्य - प्रति इस स्तुति का पाठ करने से सद् - बुद्धि व विद्या का लाभ प्राप्त होता है ।

(२) सद्-गुरु-दर्शन हेतु

सत् हो, गुरु हो, नाम कबीरदास का हो ।

विधि—उक्त मन्त्र का प्रयोग ४० दिनों का है। एकान्त स्थान में रात्रि दस बजे के बाद मन्त्र का १०८ बार जप करे। शुद्ध घी का दीपक, धूप अथवा गुग्गुल की धूनी व भोग के लिए मिष्ठान्न दे। अगले दिन भोग का मिष्ठान्न किसी बटुक को दे दे। प्रयोग - काल में सात्त्विक आहार ले। ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है। प्रयोग के पूर्ण होने पर किसी भी रूप में सद्-गुरु के दर्शन होंगे, मार्ग-दर्शन मिलेगा।

(३) भय-नाशक मन्त्र

या अली मुलख वीर ।

विधि—वृहस्पति के दिन सूर्यास्त के बाद किसी मजार पर जाकर प्रसाद व इत्र चढ़ाए। अगर - बत्ती जलाकर उक्त मन्त्र को हकीक की माला से ११ हजार जप करे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। यात्रादि या निर्जन स्थान में इस मन्त्र का ९९ बार जप करने से किसी प्रकार का भय नहीं होगा।

(४) अङ्क-आकर्षण मन्त्र

चेत मासी, चेत माई कालिका, चेतावे तेरा बालका । सोते को जगा, जागते को बेठा, सट्टे का नम्बर आने का बता । दुहाई गुरु गोरखनाथ की । नाथ जी का आदेश ।

विधि—रात्रि के दूसरे प्रहर में घी का दीपक जलाकर मन्त्र का जप तब तक करे, जब तक नींद न आ जाए। नींद आने पर माला का जप पूरा करके उसी स्थान पर सो जाए। स्वप्न में अङ्क का आकर्षण होगा। यदि एक रात्रि में सफलता न मिले, तो तीन रात्रियों तक जप करे। मन्त्र के प्रभाव से अवश्य सफलता मिलेगी।

(५) स्त्री-आकर्षण मन्त्र

काली चले, कपला चले, कलवा चले अलोप। इन तीनों के बीच मौहम्मद वीर चले। बैठी हो, तो चीरु मारें। खड़ी हो, तो चीख मारें। चलो मेरे मन्तरों। मेरे गुरु का मन्त्र साँचा, पिण्ड काँचा। दुहाई गोरख बङ्गाला की।

विधि—किसी विशेष पर्व पर उक्त मन्त्र को १००८ बार जपे। जब प्रयोग करना हो, तो साध्य स्त्री का ध्यान करके शुद्ध इत्र को मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके तीन रात्रि तक चावलों की ढेरी में रखे। तीन रात्रि के पश्चात् इत्र को चावलों से निकाल कर पुनः १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। अपने वस्त्रों में इस इत्र को लगाकर साध्य स्त्री के पास जाए, तो वह आर्कषित होगी। यह इत्र एक बार के प्रयोग में काम करेगा, दूसरे प्रयोग के लिए पुनः वही क्रिया करे।

(६) मोहनी मन्त्र

नमो आदेश गुरु को। आदेश जुधरा माता को नमस्कार। आकाश की मोहनी, पाताल की जोगनी। जा री मोहनी! अमुकी को मोहि ला, बेठी को उठाई ला, सोती को जगाई ला, रूठी को मनाई ला, अल्लहड़ को मनाई ला, नटखट को मनाई ला, न माननेवाली को मनाई ला, वीर मोहि ला, चक्रसि सी रिटाई ला, भँवर सी घुमाई ला, कुहढ़ी सी उड़ाई ला, वीर मोहि ला। हेल्दी-खेल्दी अमुक के वश में करि जा। न करे, तो अष्ट-भैरव की आन। दुहाई नौ लाख चौरासी सिद्धों की, दुहाई चन्द्र-सूरज-पवन-पानी की। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।

विधि—ग्रहण-काल, होली, दशहरा या दीपावली में उक्त मन्त्र का जप १००८ बार करे। सुगन्धित सामग्री द्वारा दशांश हवन करे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। जब प्रयोग करना हो, तो मन्त्र का १०८ बार जप करे। साध्य-स्त्री का ध्यान करते हुए 'अमुकी'-शब्द के स्थान में उसका नाम ले और जिस पुरुष से उस स्त्री का मोहन करना है, 'अमुक'-शब्द के स्थान में उस पुरुष का नाम ले। जप के बाद चुटकी भर सिन्दूर में इसी मन्त्र को पढ़कर फूँक मारे। साध्य स्त्री के शरीर की पीठ में अथवा सिर में गिराने से स्त्री मोहित हो जाएगी।

अथवा शुक्रवार की रात्रि में श्मशान जाकर इत्र, राई, सिन्दूर व धतूरे के बीजों को एक साथ मिलाकर उक्त मन्त्र से चिता पर १०८ आहुतियाँ दे। साध्य स्त्री का ध्यान करे। पूर्वोक्त विधि से 'अमुकी'-'अमुक'-शब्द के स्थान पर दोनों का नाम ले।

(७) शत्रु-नाशक मन्त्र

ॐ श्रीसीता - रामाय नमः। ॐ उलट वन्दे नरसिंह, आकाश नरसिंह, पाताल नरसिंह, उलट नरसिंह, पलट नरसिंह की काया। क्या कारण नरसिंह बुलाया? गर्जत गरद वज्र का कोवार, मार रे नरसिंह! बल-वीर, उलट केश पलटन्त काया। इस कारण नरसिंह बुलाया। राजा-प्रजा हम पर कुछ भी कुभाव करे, सो हिय फाटी मरै। पहिला दण्ड धारण करेंगे। यम-यम कहत हाथ-गोर-शीश खाए। वहाँ पठाऊँ, जहाँ शत्रु का शीश चरे। तासे नरसिंह कपील कहावे।

विधि—उक्त मन्त्र होली की रात्रि में सिद्ध किया जाता है। भगवान् नृसिंह का यथोपचारों से पूजन कर उक्त मन्त्र की २१ माला जप करे। दशांश हवन रक्त - चन्दन के चूरे से करे व नारियल की बलि दे।

जब शत्रु के लिए प्रयोग करना हो, तो शत्रु का ध्यान करे। शेष पूर्वोक्त विधि के अनुसार। हनुमान्, भैरव या विष्णु के मन्दिर में इस प्रयोग को करे।

(८) शत्रु-नाशक अन्य मन्त्र

कालू-कालू बाबा जपैं, भैरौ जपै मसान। देवी करै अँधेरी रात। चौंसठ जोगनी, बावन भैरौ, लोहे का लाट, बज्जर का केला। जहाँ पहुँचाऊँ, वहाँ जाए खेला। एक बाण मस्तक मारूँ, दूजा बाण छाती, तीजा बाण कलेजा मारूँ। जबाने को खींच ले, हन्से को निकाल दें। काल भैरौ! कपाल फलाँ (नाम) पर जा बैठ, फलाँ (नाम) की छाती खप्पर खाए। मसान में लोटे, फलाँ (नाम) को मार के फौरन आओ। अगर तूने मेरा यह काम नहीं किया, तो अपनी माँ का पिया दूध हराम करे। सत्य नाम आदेश गुरो को। फुरो मन्त्र, ईश्वर उवाच। मेरे गुरु का वचन साँचा। मेरे गुरु का वचन चूके, तो लोना चमारी के गदे नरक-कुण्ड में गले-सड़े!

विधि——पाँच उपले, पाँच लड्डू, एक सिगरेट, सौ ग्राम शुद्ध घी, सौ ग्राम बकरे की कलेजी, एक पाव शराब, शव के घड़े का टूटा हुआ एक ठीकरा (शव-यात्रा में जो मिट्टी का घड़ा ले जाया जाता है, उसके टूटे हुए टुकड़े का नाम 'ठीकरा' है, जिसे 'शव-भाण्ड' भी कहते हैं।)

श्मशान में पाँचों उपलों की चिता-समान ढेरी बनाए। घी का दीपक जलाकर भैरव का पूजन करे। १०८ बार मन्त्र जपे। जप के बाद थोड़ी शराब-कलेजी व सिगरेट भैरव जी को शत्रु - नाशक मन्त्र पढ़ते हुए अर्पित कर दे। शेष सामग्री हाथ में लेकर खड़ा हो जाए और ठीकरे को अपने दाहिने पैर के अँगूठे में दबाकर मन्त्र पढ़ते हुए उपले की जलती चिता के सात चक्कर लगाए। जब सातवाँ चक्कर पूरा हो, तो हाथ में ली हुई सामग्री चिता में अर्पित कर दे। यह प्रयोग किसी भी अमावास्या की रात्रि में आरम्भ कर सात दिनों तक करते रहें। शत्रु का अवश्य ही नाश होगा। यह ध्यान रहे कि मन्त्र जपते समय 'फलाँ'-शब्द के स्थान पर शत्रु का नाम ले। मन्त्र सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं।

●●

नजर-टोना प्रेत-बाधा निवारक मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : स्वामी ललिता पुरी

द्वारा पं० अतर सिंह, ३०१ स्कूल रोड; कड़कड़इया, दिल्ली

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

७ : सत्ती पन्ती शारदा
१२ : बारह बरस कुवारी
१ : ऐको माई परमेश्वरी
१४ : चौदह भुवन निवास
२ : दोई पक्खी निर्मली
१३ : तेरह देवी देश
८ : अष्ट-भुजा परमेश्वरी
११ : ग्यारह रुद्र सैनी
१६ : सोलह कला सम्पूर्णो
३ : त्रा नयन भरपूर
१० : दसे द्वार निर्मली

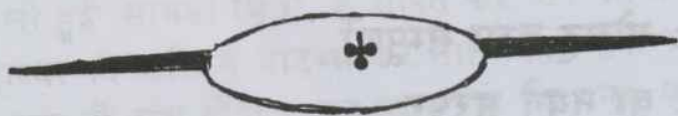
५ : पञ्च करे कल्याण
९ : नव-दुर्गा
६ : षट्-दर्शनी
१५ : पन्द्रह तिथि जान
४ : चाऊ कूठ प्रधान

विधि—शुभ नक्षत्र में अनार की कलम, केशर व लाल चन्दन लाकर उक्त 'यन्त्र' लिखे। जिस समय उक्त यन्त्र लिखा जाएगा, मन्त्र क्रम से पढ़ा जाएगा। जैसे पहली लाइन के पहले खाने में ७ लिखे, तो पढ़ा जाएगा—'सत्ती पन्ती शारदा'। फिर दूसरे खाने में १२ लिखे, तो पढ़ा जाएगा –'बारह बरस कुवारी।' इसी प्रकार क्रम से आगे के मन्त्र पढ़े जाएँगे।

नवरात्र, दीपावली, होली, अमावास्या (सोमवती), पूर्णमासी आदि किसी शुभ दिन मन्त्र का 'ज़प' प्रारम्भ करे। लाल चन्दन की माला से पहले नित्य १ माला जप २१ दिन तक करे, इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। जप रात्रि में ९ बजे के बाद करे। जप के समय धूप करे व घी का दीपक जलाए तथा लाल फूल, बताशे चढ़ाए। २१ दिन के बाद जप की समाप्ति पर 'हवन' करे। हवन निम्न मन्त्र से करे—

आं क्रीं भद्र-काली! कर कल्याण।

हवन की राख से नजर-टोना, प्रेत - बाधा - ग्रस्त व्यक्ति को झाड़े तथा यन्त्र को उसके गले में डाल दे।



उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुओं की पोथी	२५.००
वर्ण-बीजाक्षर-साधना	४०.००
भैरवोपदेश	१००.००
अनुभूत साधना	२५.००
बीजात्मक सप्तशती	२५.००
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र	२५.००
दीक्षा-प्रकाश	३५.००
साधना-रहस्य	६०.००
स्वर-विज्ञान	७५.००
मन्त्र-कोष	३००.००
सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	३०.००
श्रीबगला-साधना, पुष्प १	६०.००
नव-ग्रह-साधना	१००.००
महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक	१००.००
महा-पर्व दीपावली-विशेषांक	४५.००
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०.००
श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प १ से ५	२००.००
श्रीयन्त्र-रहस्य	२०.००
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती)	४५.००
सप्तशती के विविध प्रकार	२५.००
श्रीबाला-कल्पतरु	३५.००
श्रीसूक्त-विधान	३५.००
श्रीरमा-पारायण	३५.००
श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प १ से ३	१२०.००
श्रीदुर्गा-साधना, पुष्प १ व २	५५.००
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प १ व २	७०.००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६